BHAVAN'S LIBRARY

This book is valuable and
NOT to be ISSUED
out of the Library
without Special Permission

...कशंप्रभुं
...ादिका-
[illegible] ब्राह्मणां
स्तद्बोधाय विवाहपद्धतिरियं संगृह्यलिप्ताक्रमात्
॥१॥ तांसंवीक्ष्यधरामराः प्रमुदिताउद्वाहकार्ये
सदा संस्काराननुकारयंतु सततंगार्हस्थ्य सौख्य
द्धये।वर्ततांशुभकर्मणीहनिखिलाःसत्कर्मकर्तृगणा
सत्पात्रेषुच दानकर्मनिरताः सत्कीर्तिभाजःसदार
नानाग्रंथसमाश्रयात्सुलिखिताकार्यक्रमोद्बोधिनी
स्यादेषाविदुषां प्रमोदानिवहा सत् [illegible]
[illegible]
स्तुपरोपकारमहती वृद्धिःप्रतिष्ठात्मिका॥२॥

निवेदको

दयालुचंद्र शर्मा

विवाहे ग्रह मण्डल चित्रम्

पूर्व

पुरोहित पढने वाले आदि का आसन

ई० ३० — पू० ३२ — ई० — २३

कलश ६

१७

अष्टजीव १९

१९ २० २१ ब्र० वि० म०

योगिनी २२

४ वेद १५

बु० ५

गु० ११

चं० ७

सर्प ५

४ सप्तऋषि

बृ० १०

सूर्य० ६

मं० ८

३

१४ के० ४

श० १२

रा० १३

गणेश १

ओं ओं ओं ओं ओं २

दीपक धूप

कन्यादाताआसन

वा० २८ — व० २७ (पश्चिम) — अग्नि० २५ — नै० २६

वर का आसन

वधू का आसन

स्त्रियों के बैठने का स्थान

ग्रहनम्बर

१।८।२४

२।६।१५।२५।३४

११।२८।३२।

४।१०।२०।२३।२७।३३

५।२६

१२।१३।१४।२४।३१

३।५।१५।२६।२७।१८

मकरण   ७।२२।३०

नोट

हमनें स्वदेशानुसार दिया है, विद्वान् लोग
ाधा विचार करके मंडल वेदी आदि
ुसार बना लेंगें-

निवेद ·
पं० दयालुचंद्र शर्मा काष्टपाल
वैया जिला मुजफर गढ़

जुन्कारप्रेसलाहौर

भूमिका

श्रीमदानन्दकन्द व्रजचन्द श्रीकृष्णचन्द्र जीके चरणकमलों में नमस्कार के अनंतर कोटिशः उनका धन्यवाद किया जाता है कि जिनकी असीम कृपासे मेरासंकल्पित मनोरथ बहुत दिनोंके अनंतर आज पूराहुआ मेराजो मनोरथ था, कि एक ऐसा पुस्तक लिखा जावे जिससे अपनी योग्यताके अनुसार विद्वानभी कार्यकरसके साधारण भी अतः भाषामें रीति लिखी गई हैं यद्यपि बहुतसी पद्धतियें छपी हैं तथापि उनमें हमारे देशके अनुसारिणी रीति के न होने से उनका साधारण ब्राह्मण नहा लेते थे और जहां कहीं पूछते थे, तो यही कि हमारे देश की रीतीवाली कोई पद्धति छपजाव तो अच्छा है कि जैसे तैसे करके पुस्तक छपवादें तो अच्छा होगा जिससे लेने वालों का मूल्य थोड़ा लगे और उपकार बहुत हो विशेषता इस पुस्तक में यह है कि शास्त्रीय पद्धति विधान को नहीं छोड़ा गया बल्कि उनको सुगम रीती से लिखागया है शेष रहा ग्रह पूजन उसको साधारण लिखा गया है क्युंकि १ पूजन पर श्रद्धा लोगों की नहीं रही दूसरा जो करते हैं वो भी संक्षेपको पसद करते हैं इसलिये ग्रह पूजन साधारण लिखा गया है साधारण ब्राह्मण देवताओं से प्रार्थना है कि विद्वान् तो अपनी बुद्धि से काम करा देंगे परंतु आप लोगों के वास्ते ही भाषा रीति लिखी गई है आप सावधानी से यजमानों के गृहमें संस्कार करावें ताकि यजमान का कल्याण हो और आपका यशहो यदि आप लोगोनें प्रेम दिखाया तो ऐसे स्वदेशानुसारि सर्वकर्म कांड की पद्धति प्रकाशित करांऊगा सब से विशेष सूचना यह है कि इसपुस्तक में वैदिक मत्रों पर स्वरांक नहीं लगाए गये और अनुस्वार के वर्गाक्षर पर होने से वर्गात वर्ण नहीं किया गया क्युंकि साधारण पुरुषों को भ्रम हो जावा इस लिये मैं विद्वज्जनों से क्षमा मांगी हूं कि इसत्रुटिपर दृष्टि न देवे हुए इस पुस्तक को सादर लेकर मेरे प्रयत्न का सफल करेंगे और साथ हो यह प्रार्थना करता हूं कि जो भी इस पुस्तक में अशुद्धि रहगई हावो उनको सुधार कर मुझे सूचित करेंगे जिससे दूसरे संस्करण में उनका संशोधन किया जायेगा और उनका नाम धन्यवाद सहित प्रकाशित किया जावेगा अपनी तर्फसे तो शुद्धिपत्र भी लिख दिया है फिर भी कहीं यंत्र, वा, लेख की अशुद्धि रह गई होतो क्षमा करना अलमनल्प लेखेन धीमत्सु

आपका शुभचिंतक लेखक

पं० दयालु चंद्रशर्मा काठपाल ज्योतिषी
मुकाम सैंपा, जिला मुजफर गढ़ पंजाब

अथ विवाह पद्धति सामग्री

गुड़, आटा, चावल, केसर मुचा, सत रंग इंबीर, कुँगु चिमकणा, सावारंग पीठा, नीला रंग पीठा, रंग पीला वा हलदी, पीठी, सिंदूर, गोरी सरसों, चंदन चिटे दा चूरा, धूपज्वाला, मौली, सुपारियां २५, ५ लाचियांनिक्यां, पंजीरला, नरेल, फुल, घृत कपाह, तेल मिठा वा घृत दीपक वास्ते, मांह, दधि, पाखी, छिकड़े, दी काठी, पत्र अंब, पत्र बट, पत्र पिप्पल, पत्र आंवला, पत्र तुलसी, शमीपत्र जंदी, कुशा, दूब, जौं, तिल, ३ कलश २ वड़े १ छोटा, पूर्णपात्र ६वा ४ वा २ वा १, वस्त्र पूर्णपात्रां दे, मलमल १२ हाथ, २छाणे द्रिपाई पीली १, अम सताना, गोहा, २ चौकियां, चौकी ग्रहां वास्ते, सूहा, काने वा डांगां ८, रेत नदी दी, दीपक, राम कटोरियां १०, शमी काष्ट, चंद काष्ट, चजली कागज वा रूसणी ही, सुवा, फुलियां, चावलें वान्यां, शंख, सीहणी दा धागा, चावल पूर्ण पात्रा वास्ते, मेवा, खड, टके मेल ५पै गुथली, सुवर्ण शलाका १। मा०, कटोरे कुटदे ५ वा ४ वा २, हल, पंजाली, जार, तोशा ४ सेर, पूजा और नांदी मुख वास्ते, गंगा जल, तीन्यादा गोहा, (माचिस),

वस्तु चुंग वास्ते

गुड, आटा, चावल, फुल, हलदी दा गंढा, सुद, मौली, गोरी सरों, पोन्यां, छले लोहे दे ६, दक्षिणा, दाणे पूजदे, स्वकुला नुसार, रतीनु कार,

कुली अट्टा

थाली पूजा थाली, गोहा, पोन्यां, दीपक ४ मुखा, रखी लुकार. रसा, दक्षिणा ॥ नवग्रही ॥ थाली पूजनकी, फुल, दीपक, धूप, दक्षिणा— ॥.यही नवग्रही नांदीमुख के स्थान में हैं ॥ देवां धामणी की वस्तु अपने २ कुला नुसार जाननी ॥ तेल मंढी ॥ पूजा की थाली लसी १ गुड़ फुल तीन्यां ७, वस्त्र माता दे वरदे समतां वाले भाटेमिट्टी दे कुंभारदे तेल भुंभाला

जन्दोक वेले तथा मंदिर दे शकुनांदी सामिग्री

लौंग, लाच्यां, सेजदामेवा, १। शीशा, शाखदा, कजल, सुसाग, एलसी, लाख, कनारी, कंघी, गाहणे, सगनांदे, तलवचे, (लूण, तिल) त्रिपट, कपड़े, सगनांदे, वरकन्यादे,



सामिग्री द्वितीय विवाहदी

कुनाली, छूणी, १०८दियाकचा, १०८वटीं, तेलमिठा, ॥=चैखिल, छुन्नीवि वचहावे,॥= चोवललुहाटेचिचडवाले, खंड, खोर, पहाजदीचांदीदी, झेवर, त्रिमवांश, घागामोलीदा, कही, शृंगारदीपद्धी, उर्गाहणे, बाखियां, कंडण, नथ, अणवट, मुद्री, छल्ले, कनारी, मुसाण, एतली, कंघो, छुरमेदाणी, छुरमचू, शीशा, दखी, मायदी, कज्जल ।

अथ गज दंत (चूडा) संकल्पः

ओमद्येत्यादि० अमुकगोत्रामसुकनाम्नी मिमां कन्या मलंकर्तु कामःकुलाचार रीतिज्ञातिवर्णलाचितानिइमानिगजदंत विनिर्मितवलयानिविश्वकर्मदेवतानि अमुकनाम्न्यै कन्यायै श्री लक्ष्मीनारायण प्रीतयेदातुमहमुत्सृजे

दक्षिणा

ओमद्यकृतेतद्गजदंत विनिर्मितवलयदान प्रतिष्ठार्थमिदं दक्षिणाद्रव्यं श्रीलक्ष्मीनारायण प्रीतयेअमुकनाम्न्यैकन्यायै दातुमहमुत्सृजे कृतैतत्कर्मणा श्रीलक्ष्मीनारायणयोः प्रीतिरस्तु

वर वधू के वस्त्रों की प्रतिष्ठा कर के उनकोवस्त्र पहिनाकर दोनों के सजे पल्लों में पुष्प अक्षत फल दक्षिणा रख कर प्रतिष्ठा करावे पल्लो पल्ली बांधे देखो पृष्ठ २७ पर संकल्प है।

चौकियों के नीचे दक्षिणा धारण करे

अथासन प्रतिष्ठा

ओमद्येत्यादि० अमुकशर्मणो विवाहादो वरवध्वोरा सनप्रतिष्ठा शुभाभवतु ।

वर उपानत (जोडा) उतारे ॥ मंत्र ॥

ओं अग्नीहवो देवाघृतकुंभ प्रदेशायां चक्रुस्ततोवराहः संवभूवतस्मा द्वराहोगावःसंजानते तत्पशुनामेवैतद्दिशे प्रतिष्ठति तस्माद्वराह्या उपानहा उपमुंचते ।

वर वधू कुलगुरु का स्मरण करके दक्षिण पाद क्रम से चौकी पर बैठे ।

यदि विवाह से पूर्व नांदीमुखश्राद्ध न किया हो तो गणेशपूजन के अनंतर पकान्न दक्षिणा संयुक्त १२ वा ४ भोजन संकल्प करे-

ब्राह्मण भोजन

३ वा १ ब्राह्मण भोजन वर पिता संकल्प करे

ओमद्येत्यादि० अमुकशर्मणो विवाह कर्मणि विवाहांगत्वेनकर्तव्यनांदीमुखाभ्युदयिकश्राद्धे अमुकगोत्राणां मातृपितामही प्रपितामहीनाम मुकदेवीनां अमुकगोत्राणां पितृपितामह प्रपितामहानाममुकशर्मणां अमुकगोत्राणां सपत्नीक मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहानाम मुकशर्मणां आभ्युदयिकश्राद्ध संबंधिनो विश्वेदेवा एतत्पकान्नंसदक्षिणंवोनमः

पुनः ९ वा ३ ब्राह्मण भोजन संकल्प करे

ओमद्येत्यादि० अमुकशर्मणो विवाह कर्मणि विवाहांगत्वेनकर्तव्यनांदीमुखाभ्युदयिकश्राद्धे मातृपितामही प्रपितामहीनाम मुकदेवीनां तथा च पितृपितामह प्रपितामहानां अमुकशर्मणां तथाच सपत्नीक मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहानाम मुकशर्मणां प्रीत्यर्थ मिदंपकान्नं सदक्षिणं यथा संभवं वः स्वधा-इति—

LIBRARY

पं० दयालुचन्द्र शर्म्मा ज्योतिषी
जन्म संवत् १९३८ ज्येष्ठ।

चिरञ्जीव केवल कृष्ण शर्म्मा ज्योतिषी
जन्म संवत् १९७७ पौष।

श्री गणेशायनमः

अथ विवाह पद्धतिः

घृत वा तिल तैल से रचा दीपक जगावे पुष्पाक्षत दक्षिणा पत्रोंमें रखें स्वकुलगुरु का ध्यान करें ॥ पढ़ें ॥

ओं चिन्तासन्तानहंतारो यत्पादांबुजरेणवः॥ स्वीयानांतान्निजाचार्यान् प्रणमामि मुहुर्मुहुः॥१॥ यदनुग्रहतोजन्तुः सर्वदुःखातिगोभवेत् ॥ तमहं-सर्वदावन्दे श्रीमद्वल्लभनन्दनम् ॥२॥ यदुक्तंतात-चरणैः श्रीकृष्णःशरणंमम ॥ तत एवास्तिमच्चित्त-मैहिकेपारलौकिके॥३॥ ममचित्तस्यविश्वासः श्री-गोपीजनवल्लभे ॥ यदातदाकृतार्थोहंशोचनीयोन-कर्हिचित् ॥ ४ ॥ श्रीलाल जी कोजगज्जीवोभक्ति-मार्गप्रदर्शकः॥जीवोद्धारायलोकेऽस्मिन्नाविरासी-त्स्वयंहरिः ॥५॥ श्री लालकृपाल जगतविषे भृत की सदा सहाय कष्ट पडे सावधान जो सुमरे तत क्षण आय॥६॥ देश विदेश जल थल विषे जो नर हितचित्त ध्याय॥ मथुरा पति गुसाईं श्री लाल जी मन वांच्छित फल पाय ॥७॥ सेवकतारे सिंधु में लीने राख जहाज ॥ दूलह श्री गोपीनाथ जी

करो अचित के काज ॥ केवल अपने दास की तऊँ महाराज को लाज ॥८॥ लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः॥ येषामिंदी वरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ॥९॥ मंगलं भगवान् विष्णुर्मंगलं गरुड-ध्वजः॥ मंगलं पुंडरीकाक्षो मंगलाय तनोहरिः॥१०॥

ब्राह्मणों का पूजन करके प्रार्थना करे

ओं ब्राह्मणाः संतु मेशस्ताः पापात्पांतुसमा-हिताः॥ देवानांचैवदातारस्त्रातारः सर्वदेहिनाम् ॥ १ ॥ जपयज्ञैस्तथाहोमैर्दानैश्च विविधैः पुनः ॥ तुष्टास्तृप्तिं प्रयच्छंति पितरस्त्रिदिवेश्वराः ॥ २ ॥ येषांदेहेस्थितादेवाः पावयंतिजगत्त्रयम् ॥ तेमां रक्षंतु सततं विवाहेऽस्मिन् व्यवस्थिताः ॥ ३ ॥ समस्तसंपत्समवाप्तिहेतवः समुत्थितापत्कुलधूम्र-केतवः ॥ अपार संसार समुद्र सेतवः पुनंतु मां ब्राह्मण पादपांसवः ॥४॥ आपद् घनध्वांत सहस्र-भानवः समीहितार्थार्पण कामधेनवः ॥ समस्त-तीर्थाम्बु पवित्रमूर्तयोरक्षंतु मां ब्राह्मणपादपांसवः ॥ ५ ॥ विप्रौघदर्शनात्क्षिप्रंक्षीयं तेपापराशयः॥ वंद-नान्मंगलावाप्तिरर्चनादच्युतंपदम् ॥६॥ आधि-व्याधिहरन्नृणां मृत्युदारिद्र्यनाशनम् ॥ श्रीपुष्टि-कीर्तिदंवंदे विप्र श्री पादपंकजम् ॥७॥

BHARAT LIBRARY S N.........

अथ संपूजिता ब्राह्मणाः

गौरसर्षपं सर्वतो विकीर्य अक्षतानादाय स्वस्ति वाचनं मधुर स्वरेण कुर्युः ॥

अथ स्वस्ति वाचनम्

वर और कन्या का पिता वर पिता और ब्राह्मण अक्षत (चावल) हाथ में लें ब्राह्मण स्वस्ति वाचन करें

हरिः ओं स्वस्ति नइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥१॥ ओं पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषुपयो दिव्यन्तरिक्षेपयोधाः ॥ पयस्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्यम् ॥२॥ ओं विष्णोर राटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोःस्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि वैष्णवमासिविष्णवेत्वा ॥३॥ ओं अग्निर्देवता वातोदेवता सूर्योदेवता चन्द्रमादेवता वसवोदेवता रुद्रादेवताऽऽदित्यादेवता मरुतोदेवता विश्वेदेवादेवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रोदेवता वरुणोदेवता ॥४॥ ओं द्यौः शान्ति रन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्ति रोषधयः शान्तिर्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ँ शान्तिः शान्ति रेवशान्तिः सामाशान्ति रेधिसुशान्तिर्भवतु ॥५॥ ओं विश्वा-

निदेव सवितर्दुरितानि परासुव यद्भद्रंतन्न- आसुव॥ ६ ॥ इमारुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहेमतीः यथा शमसद्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम् ॥७॥ एतन्ते देव सवितुर्यज्ञंप्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे ॥ तेनयज्ञमवतेन यज्ञपतिंतेनमामव ॥८॥ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमं- दधातु विश्वेदेवास इह मादयंतामों प्रतिष्ठ एपवैप्रतिष्ठानामयज्ञो यत्रैतेनयज्ञेन यजन्तेसर्वमेव प्रतिष्ठितंभवति ॥९॥

कन्या पिता सङ्कल्पङ्कुर्यात्

कन्या का पिता गन्धाक्षत पुष्प जल लेकर प्रतिज्ञा सङ्कल्प करे।

ओं तत्सदुब्रह्मणोन्हिद्वितीयपरार्द्धे श्री श्वेत- वाराहकल्पे जम्बुद्वीपे भारतखण्डे आर्य्यावर्तै- कदेशान्तरगत कुमारिका नाम क्षेत्रे कलियुगे कलियुग प्रथमचरणे*ऽमुकसंवत्सरे, ऽमुकमासे, ऽमुकपक्षे, ऽमुकतिथौ, ऽमुकवासरे, यथायोग करण मुहूर्ते प्रवर्तमानेऽद्यतनदिने श्रुतिस्मृति- पुराणोक्तफलं प्राप्त्यै धर्मार्थ काममोक्ष वर्गचतुष्ट-

* सर्वत्र अमुक के स्थान पर वर्तमान संवत मास आदि का नाम लेना।

यसिध्यर्थं यथाचित्तहर्ष कन्यादान सांगता सिध्यर्थेंच यथासंभवं श्रीगणेशादि पूजनं अमुक शर्माहं करिष्ये ॥

अथ वर कर्तृकः प्रतिज्ञा सं०

यदि वर स्वयं पूजन करना हो तो संकल्प करे

ओं मद्येत्यादिऽमुकसम्वत्सरे ऽमुक पक्षे ऽमुक-तिथौ ऽमुकवासरे ऽमुकगोत्रस्या ऽमुकशर्मणो मम विवाह कालीनलग्नतो निष्टस्थानस्थित सूर्य्यादि ग्रह दोषजन्य जनितजनिष्यमाणात्मक दोषत्रय-निरास पूर्वक स्वकीय सुख सन्तान धनधान्या-द्यभिवृद्धि हेतवे श्रीगणेशादीनां यथा संभव पूजन ममुकगोत्रो ऽमुकशर्माहं करिष्ये॥

वर पितृकर्तृक प्रतिज्ञा सं०

यदि वर के पिताने पूजन करना हो तो पिता संकल्प करे यदि वर का पिता न हो तो ज्येष्ट भ्राता चाचा आदि अपना सम्बन्धी पूजन करे

ओं अद्येत्यादि० अमुक शर्मणोमत् पुत्रस्य विवाह विधौनिखिलविघ्न दोषानिरासपूर्वक सुख सन्तान धनधान्याद्यभिवृद्धि हेतुक श्रीगणेशादि पूजनममुकगोत्रो ऽमुकप्रवरो ऽमुकशर्माहं करिष्ये

अथ श्रीगणपति पूजनम्

पूजक चावल हाथ में लेकर श्रीगणेश का ध्यान करे।

विनायकं महत्पुण्यं सर्वदेव नमस्कृतम्॥
अविघ्नं सर्वकार्येषु विनायकमाह्वयाम्यहम्॥ १॥
अथातःसंप्रवक्ष्यामि गणेशयागमुत्तमम्॥ आदौ-
गणपतिःपूज्यः सर्वकामफलप्रदः॥२॥ येन पूजित
मात्रेण सर्वविघ्नः प्रणश्यति॥ एक दंतोत्कटोदेवो
गजवक्त्रस्त्रि लोचनः॥३॥ नागयज्ञोपवीत स्तुतस्मै
गणपतयेनमः॥ प्रणम्याशिरसा देवंगौरीपुत्रं विना-
यकम्॥४॥ भक्त्याच संस्तुवेन्नित्यमात्म कामा-
र्थसिद्धये॥ ओं गणानांत्वा गणपतिꣳहवामहे।
प्रियाणांत्वा प्रियपतिꣳ हवामहे। निधीनांत्वा
निधिपति ꣳहवामहे वसोमम। आहमजानिगर्भ-
धमा त्वमजासिगर्भधम्॥ ५॥ ओं नमो गणेभ्यो
गणपतिभ्यश्चवो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्य
श्चवो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपति भ्यश्चवो नमो
नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्चवो नमः॥ ६॥
गणेश्वरं विघ्न विनाशनं च लम्बोदरं मोदकवल्लभंच
॥ सुरासुरैर्वंदितपूजितं च गणेश्वरं शरणमहं प्रप-
द्ये॥ ७॥ ओं सुमुखश्चैकदंतश्च कपिलो गज-
कर्णकः॥लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः

॥८॥ धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः॥
द्वादशैतानिनामानि यः पठेच्छृणुयादपि ।। ९ ॥
विद्यारंभे विवाहेच प्रवेशेनिर्गमेतथा॥ संग्रामे संक-
टेचैव विघ्नस्तस्यनजायते ॥ १० ॥ श्रीमन्महा-
गणाधिपतयेनमः भगवन् गणाधिपते इहागच्छ
इहातिष्ठ यावत पूजां करोमि तावत् सन्निहि-
तोभव पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयं स्नानं समर्पयामि
पुनराचनीयं समर्पयामि वस्त्रं (मांगलिकसूत्रं)सम-
र्पयामि गंध मालेपयामि । पुष्पाणि समर्पयामि ।
अक्षतान् समर्पयामि । धूप माघ्रापयामि । दीपं
दर्शयामि । नैवेद्यं निवेदयामि । पुनराचमनीयं.
समर्पयामि । मुखशुध्यर्थं पूगीफलं एलापत्रं सम-
र्पयामि । पूजासाफल्यार्थें दक्षिणाद्रव्यं समर्पयामि।
नमस्कारं करोमि प्रार्थयामि ॥ *

ओं वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्य समप्रभ।
अविघ्नं कुरुमेदेव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥ १ ॥ देहिमे

---

* सर्वत्र षोडशोपचार पूजाक्रमः १ पाद्य २ अर्घ ३ आचमन ४ स्नान ५ पुनराचमनीय ६ वस्त्र ७ गन्ध ८ पुष्प ९ अक्षत १० धूप ११ दीप १२ नैवेद्य १३ पुनराचमनीय १४ पूगीफल १५ दक्षिणा १६ नमस्कार इस तरह सर्व ग्रहो में १६ उपचार पूजन जानना और अन्त में नमस्कार करना जल्दी करना होतो पाद्यं अर्घ आचमनीय स्नानं पुनराच० वस्त्रं गंधं अक्षतान् पुष्पं धूपं दीपं नैवेद्यं पूगीफलं दक्षिणां समर्पयामि नमस्कारं करोमि

ऋद्धिसौभाग्यं देहिमे धनसंपदाम्। इच्छासिद्धिं कुरुमेदेव दयादीनं गणेश्वर ॥ २ ॥ भगवन् गणपते अनयायथा संभवया पूजया पूजितस्त्वं ममोपरिकृपांकुरुरक्षां कुरुतेनमः इतिगणपतिपूजनम॥

यदि नांदी मुखीयात्र संकल्प करना होतो करे—

अथग्रहाणा मावाहनम्

कन्या का पिता और वर पक्षीय पूजन करने वाला वाम हाथ पर चावल लेकर अपने आगे चौकोण में वा ग्रह मण्डल में एक एक चावल प्रति श्लोकरखे ग्रहों का आवाहन करें।

विनायकं महत्पुण्यं सर्वदेवनमस्कृतम्। अविघ्नं सर्वकार्येषु विनायक माह्वयाम्यहम्॥ १ ॥ आवाहयेद्वतं नागंफणिशत समन्वितम्॥ आगच्छोरगराजत्वंक्षेत्रे स्मिन्सन्निधोभव ॥ २ ॥ आवाहयाम्यहंदेवी मांतृंश्च लोकमातृकाः॥ गौर्यादिकाः पोडशकाः कुलदेवी समन्विताः ॥ ३ ॥ दिवाकरं सहस्राक्षं ब्रह्माद्यैरमरैःस्तुतम् ॥ लोकनाथं जगच्चक्षुः सूर्यमावाहयाम्यहंम्॥ ४॥ हिमरश्मिन्निशानाथं तारापत्य मृतोद्भवम्॥ ओपधीनांच राजानंसोममावाह० ॥५॥ धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्तेजः समप्रभम्॥ कुमारं शक्तिहस्तंच भौम मावा० ॥ ६ ॥ बुधं बुद्धि प्रदातारं सोमवं-

शविवर्धनम् ॥ यजमान हितार्थाय बुध मावा०
॥७॥ वृद्धिश्रेष्ठांगिरःपुत्रंदेवानांच पुरोहितम् ॥
शक्रस्यमन्त्रिणन्नित्यं गुरुमावा० ॥८॥ प्रविष्ठं
जठरेशम्भोर्निष्क्रान्तं पुनरक्षतम् ॥ पुरोहितंच
दैत्यानांशुक्रमावा० ॥ १० ॥ प्रदीप्तवन्हिवर्णाभं
भिन्नाञ्जनसमप्रभम् ॥ छायामार्तंडसम्भूतं शनि
मावा० ॥११॥ चक्रेणछिन्नमूर्धानं विष्णुनाभिनि
रीक्षितम् ॥ सैंहिकेयं महाकायं राहुमावा०॥१२॥
ब्रह्मणःकुलसंभूतं दृष्टलोकभयावहम् ॥ शिखिनं
तुमहात्मानं- केतुमावा० ॥१३॥ ब्रह्माणंशिरसा
नित्यमष्टनेत्रं चतुर्मुखम् ॥ गायत्री सहितंदेवं ब्रह्म
आवा० ॥१४॥ केशवं पुंडरीकाक्षं माधवं मधुसूद-
नम् ॥ रुक्मिणी सहितं देवं विष्णुमावा० ॥१५॥
शिवंशङ्करमीशानं द्वादशार्धार्धलोचनम् ॥ उमया
सहितं देवं शम्भुमावा० ॥१६॥ रत्नसागरसम्भू-
तांशरीरे विष्णुनाश्रिताम् ॥ यजमान हितार्थाय
लक्ष्मीमावा० ॥१७॥ सर्वसौख्यप्रदां नित्यं वीणा
पुस्तकधारिणीम् ॥ मातरंसर्वलोकानां वाणी
मावा० ॥१८॥ हिमपर्वत सम्भूतांशरीरे शम्भु
नाश्रिताम ॥ यजमान हितार्थाय उमा मावा०॥
१९॥ ऐरावतसमारूढं वज्रहस्तंमहाबलम् ॥ प्रा-

ऋद्धिसौभाग्यं देहिमे धनसंपदाम् । इच्छासिद्धि कुरुमेदेव दयादीनं गणेश्वर ॥ २ ॥ भगवन् गण-पते अनयायथा संभवया पूजया पूजितस्त्वं ममो-परिकृपांकुरुरक्षां कुरुतेनमः इतिगणपतिपूजनम॥

यदि नांदी मुखीयाम संकल्प करना होतो करे—

अथग्रहाणामावाहनम्

कन्या का पिता और वर पक्षीय पूजन करने वाला वाम हाथ पर चावल लेकर अपने आगे चौकोण में वा ग्रह मण्डल में एक एक चावल प्रति श्लोकरखे ग्रहों का आवाहन करें।

विनायकं महत्पुण्यं सर्वदेवनमस्कृतम् । अविघ्नं सर्वकार्येषु विनायक माह्वयाम्यहम् ॥ १ ॥ आवा-हयेद्दुतं नागंफणिशत समन्वितम् ॥ आगच्छो रगराजत्वंक्षेत्रे स्मिन्सन्निधोभव ॥ २ ॥ आवाह-याम्यहंदेवी मातृंश्च लोकमातृकाः ॥ गौर्यादिकाः षोडशकाः कुलदेवी समन्विताः ॥ ३ ॥ दिवाकरं सहस्राक्षं ब्रह्माद्यैरमरैःस्तुतम् ॥ लोकनाथं जगच्च-क्षुः सूर्यमावाहयाम्यहम् ॥ ४॥ हिमरश्मिन्निशा-नाथं तारापत्य मृतोद्भवम् ॥ ओषधीनांच राजा नंसोममावाह० ॥५॥ धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्तेजः समप्रभम् ॥ कुमारं शक्तिहस्तंच भौम मावा० ॥ ६ ॥ बुधं बुद्धि प्रदातारं सोमवं-

शविवर्धनम् ॥ यजमान हितार्थाय बुध मावा० ॥७॥ बुद्धिश्रेष्ठांगिरःपुत्रंदेवानांच पुरोहितम् ॥ शक्रस्यमन्त्रिणन्नित्यं गुरुमावा० ॥८॥ प्रविष्टं जठरेशम्भोर्निष्क्रान्तं पुनरक्षतम् ॥ पुरोहितंच दैत्यानांशुक्रमावा० ॥ १० ॥ प्रदीप्तवन्हिवर्णाभं भिन्नाञ्जनसमप्रभम् ॥ छायामार्तंडसम्भूतं शनि मावा० ॥११॥ चक्रेणछिन्नमूर्धानं विष्णुनाभिनिरीक्षितम् ॥ सैंहिकेयं महाकायं राहुमावा० ॥१२॥ ब्रह्मणःकुलसंभूतं दृष्टंलोकभयावहम् ॥ शिखिनं तुमहात्मानं केतुमावा० ॥१३॥ ब्रह्माणंशिरसा नित्यमष्टनेत्रं चतुर्मुखम् ॥ गायत्री सहितंदेवं ब्रह्म आवा० ॥१४॥ केशवं पुंडरीकाक्षं माधवं मधुसूदनम् ॥ रुक्मिणी सहितं देवं विष्णुमावा० ॥१५॥ शिवंशङ्करमीशानं द्वादशार्धार्धलोचनम् ॥ उमया सहितं देवं शम्भुमावा० ॥१६॥ रत्नसागरसम्भूतांशरीरे विष्णुनाश्रिताम् ॥ यजमान हितार्थाय लक्ष्मीमावा० ॥१७॥ सर्वसौख्यप्रदां नित्यं वीणा पुस्तकधारिणीम् ॥ मातरंसर्वलोकानां वाणी मावा० ॥१८॥ हिमपर्वत सम्भूतांशरीरे शम्भुनाश्रिताम ॥ यजमान हितार्थाय उमा मावा० ॥१९॥ ऐरावतसमारूढं वज्रहस्तंमहाबलम् ॥ प्रा-

च्यांदिशिसमाश्रित्य इंद्रमावा० ॥२०॥ छागपृष्ठ समारूढं शक्तिहस्तंमहावलम् ॥ आग्नेय्यांदिशि ह्याश्रित्य अग्निमावा० ॥ २१ ॥ महिपेसुसमारूढं दंडहस्तंमहावलम् ॥ याम्यांदिशिसमाश्रित्ययम मावाहयाम्यहम् ॥ २२ ॥ महाप्रेत समारूढं खड्गहस्तंमहावलम् ॥ नैर्ऋत्यांदिशिह्याश्रित्य निर्ऋति माह्वयाम्यहम् ॥२३॥ प्रेतपृष्ठसमारूढं पाशहस्तं महावलम् ॥ वारुण्यांदिशि ह्याश्रित्य वरुणमाह्व० ॥२४॥ मृग पृष्ठ समारूढंध्वजा हस्तंमहावलम् ॥ वायव्यां दिशिह्याश्रित्य वायुमावा० ॥२५॥ महायक्षसमारूढं गदाहस्तंमहावलम् ॥ उदीच्यां दिशिह्याश्रित्य कुबेरमाह्व०॥२६॥ वृषपृष्ठसमारूढं शूलहस्तंमहावलम् ॥ ऐशान्यां दिशिह्याश्रित्य शिवमावा० ॥२७॥ आवाहयाम्यहं देवींदिव्याभरणभूपिताम् ॥ स्त्रीरूपा पृथिवींशान्तांब्रह्मस्थाने सुपूजिताम् ॥२८॥ आवाहयेतमाकाशं विष्णोःपदमनन्तकम् ॥ यत्रदेवास्तथायक्षाग्रहाः सर्वेप्रतिष्ठिताः ॥२९॥ अत्र्यादीन्मुनिश्रेष्ठान्नरुंधती युतांस्तथा ॥ विवाहयज्ञशान्त्यर्थं सप्तर्षीनाह्व० ॥३०॥ ब्रह्मज्ञमृपिराजं च परात्मानं परंपदम् ॥ आदित्यादि

ग्रहाधीशंध्रुवमावा० ॥३१॥ ब्रह्मांडे ऋाष्टिराजंहि-
दक्षिणस्यां दिशिस्थितम् ॥ महोदरं महावाहुमग-
स्तिमाह्व०॥३२॥धर्माधर्मं विचाराययाम्यांदिशि
समाश्रितम् ॥ धर्मसिंहासनासीनं धर्ममावा० ॥
३३॥ धर्मराज हितंभृत्यं धर्माधर्मं विचारकम् ॥
चित्रगुप्तंमहाबुद्धिं चित्रमावा० ॥३४॥ पक्षाः
संवत्सरामासाऋतवश्चायनानिच ॥ कलाःकाष्ठा-
मुहूर्तांश्च सर्वानावा० ॥३५॥ लोकपालाः खगा
नागा योगिन्योयक्षमातरः ॥ यजमानस्यपुष्ट्यर्थं
सर्वानावा० ॥ ३६ ॥ सिद्धाश्चकिन्नराश्चैव गंधर्वा
प्सरसांगणाः ॥ विद्याधराश्चपुष्ट्यर्थं सर्वानावा०
॥ ३७॥ दिविभूम्यन्तरिक्षेच येचपातालवासिनः।
तेसर्वेत्रसमायान्तु स्वस्ति कुर्वन्तुमेगृहे ॥ ३८ ॥
मरुद्भूतास्तथारुद्रा आदित्याद्वादशैवतु ॥ अनो-
दिताहिये केचित्सर्वानावा० ॥३९॥ आगच्छन्तु
सुराःसर्वेयेचान्येष्यंशभागिनः ॥ सर्वेस्वपूजांगृ-
ह्णन्तुदत्वा शान्तिमहीतले * ॥ ४० ॥ इति सर्व-
ग्रहाणामावाहनम् ॥

अथ ऋत्विजांवरणम् । आचार्य वरणसंभृ-
तिमादाय संकल्पयेत् ।ओ मद्येत्यादि०अमुकस्य

*ऐसे सब को अवाहन कर के सामान्य तथा पूजन करा देना।

विवाहकर्मणिएभिः पुष्पाक्षतादिभि रर्चायित्वे नामुकगोत्रममुकशर्माणंब्राह्मणंत्वा महंवृणो वरण सामिग्रीं विप्रायदद्यात *

कंकण बांध कर अंगूठा ब्राह्मण का पकड़ कर प्रार्थना करे।

आचार्यस्तु यथास्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः ॥
तथाहि ममयज्ञेस्मिन् आचार्यस्त्वंमे भवप्रभो ।१।
अहं भवामि । इति विप्रोवदेत् । वृतोस्मीतिच उक्त्वा मन्त्रं पठेत् ॥

मैं आचार्य हूं ऐसे कह कर वृतोस्मि कह कर ब्राह्मण मन्त्र पढ़े।

घृतेन दीक्षामाप्नोतिदीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् ॥
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥१॥

ऐसे ब्राह्मण वरण करे क्रमएक हैं इस लिये मन्त्र लिखे जाते हैं शेष सर्वकृत्य पहले की तरह करना।

यथा चतुर्मुखोब्रह्मा गायत्री सहितःप्रभुः। तथा त्वं ममयज्ञेस्मिन् एवंऋत्विक्भवप्रभो ॥ २ ॥
ओं कातराक्षो यजुर्वेदश्रेष्ठु भो ब्रह्मदैवतः॥ भारद्वाज स्तुविप्रेन्द्र ऋत्विक्त्वं मेमखेभव ॥ ३ ॥
सामवेदस्तु पिंगाक्षश्रेष्ठु भो विष्णुदैवतः ॥ काश्यपेयस्तु विप्रेन्द्र ऋत्विक्त्वंमेमखेभव ॥ ४ ॥

* वर पक्षीय वरणसामिग्री. संकल्प करके ब्राह्मण को दे।

ग्रहाधीशंध्रुवमावा० ॥३१॥ ब्रह्मांडे ऋष्टिराजंहि-दक्षिणस्यां दिशिस्थितम् ॥ महोदरं महाबाहुमग-स्तिमाह्व०॥३२॥धर्माधर्म विचाराययाम्यांदिशि समाश्रितम् ॥ धर्मसिंहासनासीनं धर्ममावा० ॥ ३३॥ धर्मराज हितंभृत्यं धर्माधर्म विचारकम् ॥ चित्रगुप्तंमहाबुद्धिं चित्रमावा० ॥३४॥ पक्षाः संवत्सरामासाऋतवश्चायनानिच ॥ कलाःकाष्ठा-मुहूर्तांश्च सर्वानावा० ॥३५॥ लोकपालाः खगा नागा योगिन्योयक्षमातरः ॥ यजमानस्यपुष्ट्यर्थं सर्वानावा० ॥ ३६ ॥ सिद्धाश्चकिन्नराश्चैव गंधर्वा प्सरसांगणाः ॥ विद्याधराश्चपुष्ट्यर्थं सर्वानावा० ॥ ३७॥ दिविभूम्यन्तरिक्षेच येचपातालवासिनः। तेसर्वेत्रसमायान्तु स्वस्ति कुर्वन्तुमेगृहे ॥ ३८ ॥ मरुद्भूतास्तथारुद्रा आदित्याद्वादशैवतु ॥ अनो-दिताहिये केचित्सर्वानावा० ॥३९॥ आगच्छन्तु सुराःसर्वेयेचान्येप्यंशभागिनः ॥ सर्वेस्वपूजांगृ-ह्णन्तुदत्वा शान्तिमहीतले * ॥ ४० ॥ इति सर्व-ग्रहाणामावाहनम् ॥

अथ ऋत्विजांवरणम् । आचार्य वरणसंभृ-तिमादाय संकल्पयेत् ।ओं मद्येत्यादि०अमुकस्य

*ऐसे सब को अवाहन कर के सामान्य तया पूजन करा देना ।

विवाहकर्मणिएभिः पुष्पाक्षतादिभि रांचार्यत्वे नामुकगोत्रममुकशर्माणंब्राह्मणंत्वा महंवृणो वरण सामिग्रीं विप्रायदद्यात *

कंकण बांध कर अंगूठा ब्राह्मण का पकड़ कर प्रार्थना करे।

आचार्यस्तु यथास्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः॥ तथाहि ममयज्ञेस्मिन् आचार्यस्त्वंमे भवप्रभो।१।

अहं भवामि। इति विप्रोवदेत्। वृतोस्मीतिच उक्त्वा मन्त्रं पठेत्॥

मैं आचार्य हूं ऐसे कह कर वृतोस्मि कह कर ब्राह्मण मन्त्र पढ़े।

घृतेन दीक्षामाप्नोतिदीक्षयाप्नोति दाक्षिणाम्॥ दाक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्य माप्यते॥१॥

ऐसे ब्राह्मण वरण करे क्रमएक हैं इस लिये मन्त्र लिखे जाते हैं शेष सर्वकृत्य पहले की तरह करना।

यथा चर्तुमुखोब्रह्मा गायत्री सहितःप्रभुः। तथा त्वं ममयज्ञेस्मिन् एवंऋत्विक् भवप्रभो॥ २॥

ओं ऋातराक्षो यजुर्वेदश्रेष्ठु भो ब्रह्मदैवतः॥ भारद्वाज स्तुविप्रेन्द्र ऋत्विक्त्वं मेमखेभव॥३॥

सामवेदस्तु पिंगाक्षश्रेष्ठु भो विष्णुदैवतः॥ काश्यपस्तु विप्रेन्द्र ऋत्विक्त्वंमेमखेभव॥४॥

* इस पर्यन्त वरणसामिग्री संकल्प करके ब्राह्मण को दे।

बृहन्नेत्रोथर्ववेदोऽनुष्टु भोरुद्र दैवतः ॥ वैखान-
सगोत्रविप्रेन्द्र ऋत्विक्त्वंभमखेभव ॥ ४ ॥

॥ इति ऋत्विजां वरणम् ॥

ततो ब्राह्मणाः पुष्पाक्षतानि गृहीत्वा आशीर्वाद
दद्युरथच तद्दत्वा कंकणं बध्नंति—

फिर ब्राह्मण हाथ में पुष्पा चत लेकर आशीर्वाद के मन्त्र पढ कर वह यजमान को दें और कंकण यजमान को बाधें।

ओं ऋग्वेदस्तु यजुर्वेदः सामवेदोह्यथर्वणः ॥
ब्रह्म वाक्यैश्चते नित्यं हन्यंते तवशत्रवः ॥ १ ॥
अपुत्राः पुत्रिणः संतु पुत्रिणः संतु पौत्रिणः ॥
अधनाःसधनाः सन्तु सन्तु सर्वार्थ साधकाः॥२॥
विप्र हस्ताच्च गृह्णीयाद्यज्ञ पुष्पफलाक्षतान् ॥ च-
त्वार स्तव वर्द्धन्तु आयुः कीर्ति यशोबलम् ॥३॥
आयु र्वृद्धिर्यशोवृद्धिः प्रज्ञाच सुखसंपदः ॥ धन
सन्तान वृद्धिश्च सर्वेताः सन्तु वृद्धयः ॥ ४ ॥

अथ पंचोंकारपूजनम्

आवाहयाम्यहंदेवमोंकारं परमेश्वरम् ॥अ-
क्षरंत्रिगुणाकारं सर्वाक्षरमयंशुभम् ॥१॥ त्रिमात्रं-
त्र्यक्षरं दिव्यंत्रिपदंचत्रिदैवतम् ॥ अणवंप्रणवं
हंसंस्रष्टारंपरमेश्वरम्॥२॥ अनादिनिधनंदेवमप्रमे-

यंसनातनम् ॥ परंपरतरं वीजं निर्मलं निष्कलं शुभम् ॥ ३ ॥ ओं आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चस्वी-जायता माराष्ट्रेराजन्यः शूरइपव्योऽति व्याधीम हारथो जायतां दोग्ध्रीधेनुर्वोढानढ्वानाशुःसप्तिः पुरंधिर्योपा जिष्णुरथेष्ठाः सभेयोयुवास्य यजमानस्यवीरो जायतां निकामे निकामेनः पर्जन्यो वर्षतुफलवत्योन ओषधयःपच्यंतां योगक्षेमोनः कल्पताम् ॥ इति पंचोङ्कार पूजनम् ॥

अथा रक्षा विधानम्

पुरोहित वर कन्या के सिर ऊपर हाथ रख खड़े।

ओम् गणाधिपं नमस्कृत्य नमस्कृत्यपितामहम् ॥ विष्णुंरुद्रंश्रियंदेवीं वंदेभक्त्या सरस्वतीम् ॥ १ ॥ स्थानंक्षेत्रं नमस्कृत्य दिननाथं निशाकरम् ॥ धरणी गर्भसम्भूतं शशिपुत्रं वृहस्पतिम् ॥ २ ॥ दैत्याचार्यं नमस्कृत्य सूर्यपुत्रंमहाग्रहम राहुंकेतुं नमस्कृत्य यज्ञारंभेविशेषतः ॥ ३ ॥ शक्राद्यादेवताःसर्वे मुनींश्चकथयाम्यहम् ॥ गर्गमुनिं नमस्कृत्य नारदं ऋषि मुत्तमम ॥ ४ ॥ वासिष्ठं मुनि शार्दूलं विश्वामित्रं महा मुनिम् ॥ व्यासंकविंनमस्कृत्य सर्वशास्त्र विशारदम् ॥ ५ ॥ विद्याधिकान्मुनींश्चैव आ-

चार्यांश्च तपोधनान् ॥ तान्सर्वांश्चप्रणम्यादौ यज्ञारंभं करोम्यहम् ॥६॥ पूर्वे रक्षतु गोविन्द आग्नेय्यांगरुड़ध्वजः ॥ याम्यांरक्षतुवाराहोनारसिंहस्तुनैर्ऋते॥७॥ केशवो वारुण्यां रक्षेद्वायव्यां मधुसूदनः ॥ उत्तरे श्रीधरोरक्षेदीशान्यान्तु गदाधरः ॥ ८ ॥ एवंदशदिशोरक्षेद्वासुदेवोजनार्दनः ॥ ऊर्ध्वं गोवर्धनोरक्षे दधःस्थानेमहीधरः यज्ञाग्रे रक्षतांशङ्खः पृष्ठेपद्मन्तथोत्तमम् ॥९॥ वामपार्श्वेगदारक्षेद्दक्षिणेच सुदर्शनः ॥ उपेन्द्रः पातुब्रह्माणमाचार्यम्पातुवामनः ॥१०॥ अच्युतः पातुऋग्वेदं यजुर्वेदमधोक्षजः ॥ कृष्णो रक्षतुसामानं माधवो थर्ववेदकम् ॥ ११ ॥ उग्रहष्टाश्च विप्रास्ते तेनरुद्रेण रक्षिताः ॥ यजमानःसपत्नीकः पुण्डरीकाक्षरक्षितः ॥ १२ ॥ रक्षा हीनंतुयत्स्थानं तत्सर्वंरक्षतां हरिः ॥ वेदमंत्रैस्तुकर्तव्या रक्षाशुभ्रैस्तुसर्षपैः॥ १३ ॥ ओं मानः शꣳसो रोअररुषोधूर्तिः प्राणाङ्मर्त्यस्य। रक्षाणो ब्रह्मणस्पते॥ ओंयदावध्नन्दाक्षायणा हिरण्यꣳशतानीकायसुमनस्यमानाः। तन्मआवध्नामि शतशारदायआयुष्मान् जरदष्टिर्यथासम् ॥१४॥ रक्ष रक्ष

---

* गोरी सर्षप चौफेर केरे ॥

महादेवनीलग्रीवजटाधर ॥ रक्षंतु देवताः सर्वे ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥ ब्रह्माविष्णुश्चरुद्रश्चरक्षां कुर्वन्तुते सदा ॥१५॥ इति रक्षा विधानम् ॥

अथ षोडश मातृ पूजनम्

उत्तर में षोडश मातृ पूजन करे

गौरी पद्मा शचीमेधा सावित्री विजया जया ॥ देवसेना स्वधा स्वाहा मातरोलोकमातरः ॥ १ ॥ धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टि स्तथात्मकुलदेवताः ॥ भगवतीभ्यः षोडश मातृभ्यो नमः ॥ इति ॥

अथ वासुकि पूजनम्

सुखपर दक्षिण में वसुकि पूजन

अथातः संप्रवक्ष्यामि यदुक्तं वास्तु पूजनम् ॥ येन पूजा विधानेन कर्म सिद्धिस्तुजायते ॥ १ ॥ अनंतं पुडरी काक्षं फणाशत विभूषितम् ॥ विद्युद्दंधूक सदृशंकूर्मारूढं प्रपूजयेत् ॥ २ ॥ ओंनमोस्तुसर्पेभ्योयेकेच पृथिवीमनु ॥ येंऽतरिक्षेये दिवितेभ्यःसर्पेभ्योनमोनमः ॥ वासुकाद्यष्टकुलनाग देवताभ्योनमः । पाद्यादिभिः समर्चयेत् ॥ इति वासुकि पूजनम् ॥

अथ योगिनी पूजनम्

पहिले ४ मंत्रों से योगिनी का आवाहन करे

आवाह याम्यहं देवीं योगिनीं परमेश्वरीम् ॥ योगाभ्यासेन संतुष्टां परध्यान समन्विताम् ॥ १ ॥ दिव्यकुंडल संकाशां दिव्य ज्वलित लोचनाम् ॥ मूर्तिमतीममूर्तांचउग्रांचैवोग्ररूपिणीम् । २।अनेक भाव संयुक्तां संसारार्णव तारिणीम् ॥ यज्ञं कुर्वन्तु निर्विघ्नं श्रेयो यच्छन्तु मातरः ॥३॥ ऋग्वेदो थय जुर्वेदो योगो योग युयुत्सवः ॥ योगिनी सामवेदस्तु योजये दप्यथर्वणम्॥४॥ एभिर्योगिनीमावा हयेत्

जयाच विजया चैव जयन्तीचाप राजिता॥नन्दा भद्रा तथा भीमा श्री देवी चार्द्ध विन्दुका ॥ १॥ हुंकारी भास्करीभीमा धूम्राक्षीकलहप्रिया ॥ ज्वालांगी कालिकादेवी तथा चण्डा पुरांतसी ॥ २ ॥ दिव्ययोगी महायोगी सिद्धियोगी जनेश्वरी ॥ शाकिनी काल रात्रिश्च ऊर्द्धकेशीनि शाकरी ॥ ३ ॥ गंभीरीभाषिणीचैव ज्वालांगी-नवपन्नगा ॥ राक्षसी घोररक्ताक्षी विश्वरूपी भयंकरी ॥ ४ ॥ डाकिनी रौद्रवैताली कुब्जाकन्य-कभोजिनी ॥ कोटराक्षी भीमभद्रा वुद्धिवेगी भयं-करी ॥ ५ ॥ विरली हंसिनीयक्षी निर्जरातथ्य-

भापिणी ॥ सर्वसिद्धि प्रदातुष्टामनः सिद्धिप्रदायिनी ॥ ६ ॥ ब्रह्माणी वैष्णवीरौद्री मांतगी नंदकेश्वरी ॥ दुर्जयाविकटाचैव तथाचविषलंघिनी ॥ ७ ॥ भैरवीचक्रिणीचैव दुर्मुखी प्रेतवासिनी ॥ कालोग्रा मोहनीचैव तथाच भुवनेश्वरी ॥ ८ ॥ चतुःषष्ठिः समाख्याता योगिन्योहि वरप्रदाः ॥ त्रैलोक्ये पूजितानित्यं देवमानुपयोगिभिः ॥ ९ ॥ भगवतीभ्यश्चतुः षष्ठियोगिनीभ्योनमः पाद्यादिभिः संपूज्य प्रज्वलित दीपसंयुक्त मिष्टान्नमय वलिंदद्यात ॥

पाद्यादि से पूजन कर के दीपक जागता और मिष्ठान्न दक्षिणा वलि दान करे मन्त्र।

ओं ह्रों ह्रीं महारवीं हुं हुं प्रचण्ड फेत्कार शव्दां भ्रां भ्रां घनघोर नंदिनी हां हां हां हसाति उटटि भीं भीं भीं भयानने हुं हुं हुं डमरुकहस्ते लां लां लल्हतिजिह्वे मां मांसादनिवलिप्रिये एहि एहि योगिनि वालिं गृहाण रक्ष रक्षमाम् ॥

पुनः योगी के वास्ते सीधा संकल्प करे।

ओं मद्येत्यादि० अमुकस्य विवाह निर्विघ्नहेतुकार्थकारितग्रह यज्ञान्तर्गत चतुः षष्ठि योगिनी प्रीत्यार्थकतासंपादक सर्वसुखसौभा-

ग्यादि संप्राप्तिकामना पूरकदास्यमानप्रजापति देवताकमेतत्परिमित गोधूमान्नं घृतगुड सहितं चतुरधिक षष्टिकपर्दिका दक्षिणा संयुक्तमेतदामान्नभोजनं स्वेच्छासंप्राप्ताय विछिन्नकर्णायवाऽविच्छिन्नकर्णाय योगिनेऽहं दास्ये—

अथ प्रताप तिलकम्

पाठक वा पुरोहित यजमान को तिलक लगावें।

आदित्या वसवोरुद्रा विश्वेदेवामरुद्गणाः॥
तिलकं ते प्रयच्छन्तु सर्व कामार्थ सिद्धये॥१॥

मंडल मध्ये सूर्य पूजनम्

ओं आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यंश्च ॥ हिरण्य येन सवितारथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् १ श्री सूर्यायनमः॥ पाद्यादिभिः संपूज्यनमस्कुर्यात्॥

हाथ जोड़े प्रार्थना करे।

पद्मासनः पद्मकरोद्विबाहुः पद्मद्युतिः पद्म तुरंग वाहः॥ दिवाकरो लोकगुरुः किरीटी मयिप्रसादं विदधातु सूर्यः १

अग्नि कोणे चन्द्र पूजनम्

ओं इमं देवा असपत्न ७ सुवद्धंमहते क्षत्राय महते जैष्ठ्याय महते जान राज्यायेंद्र-

स्येंद्रियाय इममसुष्य पुत्र मसुष्यै पुत्रमस्यै विशएपवोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना७ राजा २ श्री चन्द्रमसेनमः ॥ प्रार्थना—

स्वेताम्बरः श्वेतविभूषणश्च श्वेतद्युतिर्दंड-करोद्विवाहुः ॥ चंद्रोऽमृतात्मा वरदः किरीटी श्रेयांसि मह्यं विदधातु देवः ॥

दक्षिणे मंगल पूजनम्

ओं अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयमपा७ रेता७सि जिन्वाति ॥ श्रीभौमायनमः

रक्तांवरोरक्तवपुः किरीटी चतुर्भुजो मेष-गतो गदाभृत ॥ धरासुतः शक्तिधरश्चशूली सदाममस्या द्वरदः प्रशांतः ॥

ईशान्ये बुध पूजनम्

ओं उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते-स७ सृजेथामयं च अस्मिन् सधस्थे अध्युतर-स्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत श्रीबुधाय-नमः ॥

प्रार्थना

पीताम्बरः पीत वपुः किरीटी चतुर्भुजो दंडधरश्चहारी ॥ चर्मासि धृक्सोमसुतः प्रशांतः सिंहाधिरूढो नरदो बुधश्च ४

उत्तरे बृहस्पति पूजनम्

ओं बृहस्पते अतियदर्य्यो अर्हाद्युमाद्विभाति क्रतुमज्जनेषु ॥ यदीदयच्छवसऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणंधेहिचित्रम् । श्रीगुरवेनमः ॥

पीतांवरः पीतवपुः किरिटी चतुर्भुजो देवगुरुः प्रशांतः। विभ्रत्सुदंडंच कमंडलुंच तथाक्षसूत्रं वरदोस्तुमह्यम् ॥ पूर्वे शुक्र पूजनम् ॥

ॐ अन्नात्परि श्रुतोरसं ब्रह्मणा व्यपिवत्क्षत्रंपयः सोमंप्रजापतिः । ऋतेन सत्यमिद्रियं विपान ७ शुक्रमंधस इन्द्रस्योंद्रियमिदं पयोमृतंमधु श्रीशुक्रायनमः ॥६॥ प्रार्थना

श्वेतांवरः स्वेतवपुःकिरीटी चतुर्भुजो दैत्य गुरुः प्रशांतः ॥ तथाक्षसूत्रंच कमंडलुंच दंडंच विभ्रद्वरदो स्तुमह्यम् ॥

पश्चिमेशानि पूजनम्

ॐ शन्नो देवी रभीष्टय आपोभवन्तुपीतये। शंय्यो रभिस्रवन्तुनः ॥ श्री शनैश्चरायनमः ॥

नीलद्युतिः शूलधरः किरीटी गृध्रास्थित स्त्रासकरोधनुष्मान् ॥ चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रशांतः सदास्तु मह्यंसवरप्रदोहि ॥ नैर्ऋत्ये राहु पूजनम्—

ॐ कयानश्चित्र आभुव हुतीसदावृधः

सखा। कयाशचिष्ठयावृता ९ ॥ श्रीराहवे नमः ॥
नीलांवरो नीलवपुःकिरीटी करालवक्रः करवालशूली ॥ चतुर्भुजश्चर्मधरश्चराहुः सिंहासनस्थः सवरप्रदः स्यात॥

वायौ केतु पूजनम्

ॐ केतुं कृण्वन्न केतवेपेशो मर्याअपेशसे। समुषद्भिरजायथा। श्री केतवेनमः ॥ प्रार्थना—
धूम्रोद्विबाहुर्वरदोगदाभृत् गृध्रासनस्थो विकृतासनश्च ॥ किरीटकेयूर विभूषितांवरः सदा स्तुमेकेतुगणः प्रशान्तः ॥

अथकेश (ब्र० वि० महा०) पूजनम्

ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ता द्विसीमतः सरुचोवेनआवः। सबुध्न्या उपमा अस्यविष्ठाः सतश्चयोनि मसतश्चव्विवः ॥ श्रीब्रह्मणेनमः ॥१॥

विष्णु पूजनम्

ॐ ष्णिोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोःस्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि वैष्णवमसिविष्णवेत्वा ॥ विष्णवेनमः ॥ रुद्र पूजनम्—
ॐ नमःशंभवायचमयोभवायच नमः शंकरायच मयस्करायच नमः शिवायच शिवतरायच ॥ श्री शंकरायनमः॥इति त्रिदेव पूजनम् ॥

स्याभ्युदयं कुरु एषदधि माषाक्षतबलिस्तेनमः ३

नैऋत्य कोणमें निऋति पूजाकरे

ॐ असुन्वंतम यजमान मिच्छस्ते नस्येत्याह मन्विहितस्करस्य। अन्यमस्म दिच्छसात इत्था-नमो देवि निर्ऋतेतुभ्यमस्तु ॥ निर्ऋतयेनमः ॥

बलिदानकरे

भो निर्ऋतिदेव बलिंभक्ष दिशंरक्ष मम यज-मानस्याभ्युदयं कुरु एषदधि माषाक्षत बलिस्ते नमः

पश्चिम में वरुण पूजा करे ॥

ॐ वरुणास्योत्तं भनमसि वरुणस्यस्कंभ सर्जनीस्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्यऋ-तसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद ॥ श्री वरुणायनमः भो वरुण देवबलिंभक्ष दिशरक्ष ममयजमानस्या भ्युदयंकुरु। एषदधि माषाक्षत बलिस्तेनमः ॥ ५ ॥

वायु कोण में वायु देव पूजे ॥

ॐ आनोनियुद्भिः शतनीभिरध्वर ७ सह स्रिणीभि रुपयाहियज्ञम् ॥ वायो अस्मिन्सवने मादयस्वगात स्वस्तिभिः सदानः श्रीवायवेनमः। भो वायो बलिभक्ष दिशंरक्ष मम यजमानस्या

भ्युदयंकुरु एषदधि माषाक्षत वलिस्तेनमः ॥

उत्तर में कुबेर पूजन करे ॥

ओं वय ७ सोमव्रते तवमनस्त नूषुविभ्रतः प्रजावंतः सचेमहि ॥ श्री कुवेरायनमः ॥ ७ ॥ भो कुबेर वलिंभक्ष दिशंरक्ष मम यजमानस्या भ्युदयंकुरु एषदधि माषाक्षत वलिस्तेनमः ॥

ईशान में रुद्र पूजा करे ॥

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थु षस्पतिंधियं जिन्वमवसेहूमहे वयम् । पूषानोयथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये । श्री रुद्रायनमः । भो ईशान वलिंभक्ष दिशंरक्ष मम यजमानस्या भ्युदयंकुरु एषदधि माषाक्षत वलिस्तेनमः ॥

नैर्ऋत्य पश्चिम के मध्य में आकाश पूजन करे ॥

ॐ यावांकशा मधुमत्याश्विना सूनृतावती तया यज्ञमिमिक्षताम् ॥ श्री अनन्तायनमः ॥९॥ भो अनन्त वलिंभक्ष दिशंरक्ष मम यजमानस्या भ्युदयंकुरु । एषदधि माषाक्षत बालिस्तेनमः ॥

ईशान पूर्व के मध्य में पृथ्वी पूजा ॥

ॐ स्योनापृथिवीनो भवान्टक्षरानिवेशनी यच्छानः शर्मसप्रथाः ॥ श्री पृथिव्यैनमः ॥१०॥ भो पृथिवि वलिंभक्ष दिशंरक्ष मम यजमानस्या

भ्युदयंकुरु एषदधि माषाक्षत बलिस्तेनमः ॥

उत्तर में कुबेर पूजन करे ॥

ओं वय ॐ सोमव्रते तवमनस्तनूषुविभ्रतः प्रजावंतः सचेमहि ॥ श्री कुबेरायनमः ॥ ७ ॥ भो कुबेर बलिंभक्ष दिशंरक्ष मम यजमानस्या भ्युदयंकुरु एषदधि माषाक्षत बलिस्तेनमः ॥

ईशान में रुद्र पूजा करे ॥

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थु षस्पतिंधियं जिन्वमवसेहूमहे वयम् । पूषानोयथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये । श्री रुद्रायनमः । भो ईशान बलिंभक्ष दिशंरक्ष मम यजमानस्या भ्युदयंकुरु एषदधि माषाक्षत बलिस्तेनमः ॥

नैर्ऋत्य पश्चिम के मध्य में आकाश पूजन करे ॥

ॐ यावांकशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती तया यज्ञमिमिक्षताम् ॥ श्री अनन्तायनमः ॥९॥ भो अनन्त बलिंभक्ष दिशंरक्ष मम यजमानस्या भ्युदयंकुरु । एषदधि माषाक्षत बलिस्तेनमः ॥

ईशान पूर्व के मध्य में पृथ्वी पूजा ॥

ॐ स्योनापृथिवीनो भवान्नृक्षरानिवेशनी यच्छानः शर्मसप्रथाः ॥ श्री पृथिव्यैनमः ॥१०॥ भो पृथिवि बलिंभक्ष दिशंरक्ष मम यजमानस्या

भ्युदयंकुरु। एषदधि मापाक्षत वलिस्तेनमः॥

इति दशदिक्पाल पूजनम्

अथ क्षेत्रपाल वलिः

मांह तेल दक्षिणा वलि तेल में मुख देखे॥

शांत्यर्थं पूजितोयस्तु देवैर्यज्ञक्रियासुच॥
त्र्यंवकः खेचरोनित्यं क्षेत्रपाल माह्वयाम्यहम्॥

ॐ नहिस्पश मविदन्नन्य मस्माद्वैश्वानरा त्पुर एतारमग्नेः एमेनमवृधन्न मृताअमर्त्यं वैश्वानरं क्षेत्रजित्यायदेवाः॥ भो क्षेत्रपाल एषदधि मापाक्षत वलिस्तेनमः॥

अथ सप्तर्षि पूजनम्

ॐ सप्तर्षयः प्रतिहिताः शरीरे सप्तरक्षंति सदमप्रमादं सप्तर्षयः स्वप्तो लोकमीयुस्तत्र जाग्रतो अस्वप्नजौ सत्रसदौचदेवौ॥ ॐ अत्रिर्भृगु र्वसिष्ठश्च पुलस्त्यः पुलहःक्रतुः॥ अंगिरेण समायुक्ताः सप्तर्षयो बुधैःस्मृताः॥ अरुंधती सहित सप्तर्षिभ्योनमः॥ इति सप्तर्षि पूजनम्॥

अथाष्ट चिरंजीवि पूजनम्

ॐ अश्वत्थामा वलिर्व्यासो हनुमांश्च विभीषणः॥ पर्शुरामः कृपाचार्यः सप्तै ते चिरजीविनः॥ मार्कंडेयोष्टमः प्रोक्तः सर्वे कल्पांत

जीविनः॥ ओं अश्वत्थाम्नेनमः १ ओं बलिराजाय-
नमः २ ओं व्यासायनमः ३ ओं हनुमतेनमः ४
ओं विभीषणायनमः ५ ओं पर्शुरामायनमः ६
ओं कृपाचार्यायनमः ७ ओं मार्कंडेयायनमः ॥८॥
इत्यष्ट चिरंजीवि पूजनम्

उत्तरे ध्रुव पूजनम्

आवाहयाम्यहं देवं ध्रुवेशंदेवमुत्तमं वैष्णवं
विष्णु रूपं च पूर्ण ब्रह्म सनातनम् १ विश्वात्मा
विश्वरूपश्च दयावान् शुभलक्षणः॥ अक्रोधनस्तपः
श्रेष्ठो दृढासनो दृढव्रतः २ ध्रुवक्षितिर्ध्रुवयोनि-
र्ध्रुवोसि ध्रुवंयोनिमासीद साधुयो उर्वस्य केतुं
प्रथमं जुषाणाश्विनाध्वर्यूस्तदयतामिहत्वा ३
इति ध्रुव पूजनम्

अथ दक्षिणेऽगस्त्य पूजनम्

ॐ अगस्तिकुंभो वनिष्टुर्जोनिता शचीभि-
र्यस्मिन्नग्रे योन्या गर्भो अन्तः प्राशिर्व्यक्तः
शतधार उत्सो दुहेन कुंभी स्वधां पितृभ्यः ॥१॥
ब्रह्माडे ऋषिराजोयमगस्त्यो हि महामुनिः॥
महोदरो महाबाहुर्महाज्ञान पराक्रमः ॥२॥
वातापि भक्षकश्चैव तेजवांश्च महातपः ॥ ईदृशः
शिवरूपोहि विष्णु भक्ति परायणः ॥ ३॥ निर्गु-

गो गुण संपन्न उग्रतपोधरस्तथा ॥ उत्तम कुल संजातो महामुनेनमोस्तुते ॥ ४ ॥

अथेशान्यां कलश पूजनम्

अव्रणमकाल मूलवहिर्भागं दध्यत्तत पवित्र अश्वत्थादि पत्र संयुक्तं फल वस्त्र पूगीफल पंचरत्न संयुक्तं निर्मल जल पूर्णं कलशं ईशान्यां दिशि धान्ये परिस्थापयेत ॥

अथ संक्षिप्त पूजन प्रकारः

ईशान्य में न फटे कालिमा रहित दधि अक्षत पवित्र अश्वत्थादि पत्र सुपारी पंचरत्न वस्त्र श्रीफल निर्मल जलपूर्ण कलश को धान्य पर रखे।

अथ भूमिस्पर्शः

ॐ भूरासि भूमिरस्यादितिरासि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्यधात्री पृथिवींयच्छ पृथिवीदृᳫंह पृथिवीं माहिᳫंसीः ॥ धान्य स्पर्शः

ओं धान्य मसिधिनु हिदेवान् प्राणाय त्वोदा दानाय त्वाव्यानाय त्वादीर्घा मनुप्रसिति मायुषेधां देवोवः सविताहिरण्यपाणिः प्रतिगृह्णात्वछिद्रे णपाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोसि ॥

---

१ विशेष पूजन विधान अन्यत्र देखें।

कलशंस्पृशेत् ॥

ॐ आजिघ्र कलशं मह्यात्वा विशंत्विदवः पुनरूर्जानिवर्तस्वसानः सहस्रं धुक्ष्वो रुधारा पयस्वती पुनर्मा विशताद्रयिः ॥ कलशेजलंक्षिपेत

ॐ वरुण स्योत्तंभनमसि वरुणस्य स्कंभ सर्जनीस्थो वरुणस्य ऋतसदन्यासि वरुणस्यऋत सदनमसिवरुणस्य ऋतसदनमासीद वरुणायनमः

श्वेतवस्त्रं धारयेत

ॐ सुजातो ज्योतिषासह शर्म वरूथमासदत्स्वः वासो अग्ने विश्वरूपꣳसंव्ययस्व विभावसो॥

॥ श्रीफलं धारयेत ॥

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपम ।श्विनौ व्यात्तम् । इष्णान्निषाणा मुंमइषाण सर्वलोकं मइषाण ॥ इति ॥

रक्त वस्त्र धारणम्

ॐ युवासुवासः परिवीत आगात् सउश्रेयान्भवाति जायमानः॥ तंधीरासःकवयःउन्नयंति स्वाध्यो मनसादेवयंतः ॥ इति ॥ कंकण वंधनम् ॥

ॐ यद्बद्धय सुदरस्यापवातियआमस्यक्रविषगंधो स्तिसुकृता तच्छ मितारः कृण्वन्तु तमेधꣳशतक्रतो ॥ इति ॥

कलशके पूर्वभागमें हाथ रखे ऋग्वेद को स्थापन करे

उँ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजंहोतारं रत्नधातमम् ॥ दक्षिणे यजुर्वेदंस्थापयेत॥

उँ इषेत्वोर्ज्जेत्वा वायवस्थदेवोवः सविता प्रार्प्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्व मघ्न्या इंद्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मामा वस्तेनईशत माघशꣳ सोध्रुवा अस्मिन् गोपतौस्यात्त वह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि ॥ इति ॥

॥ पश्चिमे सामवेदं स्थापयेत् ॥

उँ अग्नआया हिवीतये गृणानो हव्य दातये निहोता सत्सु वर्हिषि ३

॥ उत्तरे अथर्ववेदंस्था पयेत

उँ शन्नो देवी रभीष्टय आपो भवंतु पीतये शंयो रभिस्रवंतुनः * ४

पुनः अक्षतानादाय प्रत्येकं कलशे तिलकं दत्वा नमस्कारैरक्षता दिभिः पूजयेत् ॥

उँ ऋग्वेदायनमः १ उँ यजुर्वेदायनमः २ उँ सामवेदायन० ३ उँ अथर्ववेदायन० ४ उँ कलशायनमः ५ उँ रुद्रायन० ६ उँ गंगायैनमः ७ उँ यमुनायैन० ८ उँ सरस्वत्यैन० उँ नर्म-

* इन ४ मन्त्रोंसे पृथक् चतुर्वेद पूजन कराना

दायैनमः १० इत्येकैकं संपूज्य कलशं पूजयेत् ॥ ओं तत्वायामि ब्रह्मणा वंदमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः ॥ अहेड मानो वरुणो हवोध्युरुशꣳ समानआयुः प्रमोषीः ॥ अनेन पाद्यादिभिःसंपूज्य प्रार्थयेत ॥ ओं ब्राह्मणे निर्मितस्त्वं हिमांत्रिकैश्चामृतोपमैः ॥ प्रार्थयामिचत्वां कुंभवांछितार्थं प्रदेहिमे १ देवदानव संवादं मथ्य माने महो दधौ ॥ उत्पन्नो सितदा कुंभविधृतो विष्णुनास्वयम् २ त्वत्तोयेसर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः ॥ त्वयिति ष्ठंतिभूतानि त्वयिप्राणाः प्रतिष्ठिताः ३

शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वंच प्रजापतिः ॥ आदित्या वसवो रुद्रा विश्वे देवाः सपैतृकाः ४ त्वयि तिष्ठंति सर्वेपियतः कामफलप्रदः ॥ त्वत्प्रसादादिमयज्ञं कर्तुमीहेजलोद्भव ॥ सान्निध्यं कुरुमे देव प्रसन्नो वरदो भव ५

अथ कलशोत्पत्तिः

अथातः संप्रवक्ष्यामि कलश प्रसवो यथा ॥ हेमाद्रे रुत्तरे पार्श्वेक्षीरोदोत्तम सागरे १ प्रारब्धं मंथनं तत्र देवैः सर्वैः सवासवैः ॥ दानवैर्बलि

मुख्यैश्च बालिभिर्बलदर्पितैः २ मंथानं मन्दिरं कृत्वा नेत्रं कृत्वातुवासुकिम् ॥ मूले कूर्मंतुसं स्थाप्य विष्णोर्बाहू च मंदिरे ३ एकत्र देवताः सर्वे बलिनो दानवास्तथा ॥ मथ्यमाने तदा तस्मिन् क्षीरोदेदेव दानवैः ४ उदपद्यंत रत्नानि लोके स्मिन्प्रथितानिवै ॥ विमानं पुष्करंचैव उत्पन्नं हंसवाहनम् ५ नागऐरावतश्चैव वीणा वादित्रकं तथा ॥ स्वर्गस्य भूषणंचैव रंभा सर्व गुणान्विता ६ कौस्तुभं मणिरत्नंच वालचन्द्रस्त-स्थैवच ॥ कुंडलानि मखंचैव गावः पुण्याश्च उर्वशी ७ लक्ष्मीः सुरूपा सुभगा सुशीलाच सर-स्वती ॥ उच्चैःश्रवा हयश्चैव उत्पन्नंचा मृतंविषम् ८ धन्वंतरि धनुःशंखं पांचजन्यं सुदर्शनम् ॥ तत्र संस्थाप्यतं सर्वं विश्वकर्मा व्यचिन्तयत् ९ स्थापयित्वातु रत्नानि लोकेस्मिन्नथोसुरान् ॥ चिंतयित्वा बहुविधं धनमासाद्य निर्मलम् १० भूमौचाश्रम पूर्वाणि वासांसि भाजनानिच ॥ बहुवृक्षाणि रम्याणि सृज्यंते विश्वकर्मणा ११ कलशं कामरूपेण सर्वं संपत्ति कारकम् ॥ पठि-तव्यंच मांगल्ये यज्ञ काले विशेषतः १२ यजमान हितार्थाय कलशं स्थापयेद्बुधः ॥ सर्व देव मयं

कुम्भंतदेव कथयाम्यहम् १३ कलशस्य मुखे ब्रह्मा ललाटे वृषभध्वजः ॥ आदौमूलेस्थितो विष्णुर्मध्ये मातृगणास्तथा १४ कुक्षौवैसागराः सप्तचन्द्रभागासरस्वती ॥ कावेरी कृष्णवेणी च गंगाचैवमहानदी १५ तापी गोदावरी चैव नर्मदाचवहिष्कृता ॥ विंध्यपादे घृतानद्यः श्रीपर्वतवनाश्रिताः १६ वटेश्वरंत्रिमूर्तं च गंगासागर संगमे ॥ पृथिव्यां यानितीर्थानि कलशेऽस्मिन्न्यसे द्बुधः १७अत्र शांति प्रपुष्ट्यर्थं गायत्रीं चैव त्रिर्जपेत् ॥ ऋग्वेदश्चयजुर्वेदः सामवेद स्तथैवच १८ अथर्व संहिताःसर्वेकल शेऽस्मिन् समाश्रिताः॥ यत्फलं कपिलादाने कार्तिके ज्येष्ठ पुष्करे १९ तत्फलंलभ्यते सर्वं कलशोत्पत्ति पाठतः॥ ब्राह्मणो लभतेविद्यां पार्थिवोलभतेमहीम् २० वैश्यश्च लभतेलाभं शूद्रश्च गतिमुत्तमाम् ॥ वंध्याचलभते गर्भं पुत्रार्थी पुत्र मुत्तमम् २१ एतेनापिच मंत्रेणयः कुर्यादभिषेचनम् ॥ लभते वांछितं सर्वं लभेत्कामांश्च पुष्कलान् ॥ राजद्वारे भयं नैव सर्वबंध विमोचनम्॥ २२॥ इति०

---

१ यहांपर गायत्री पढ़ना

पुनः मन से सबको नमस्कार करे।

ॐ सूर्याद्यधिदेवप्रत्यधिदेवाताभ्यो नमः ॥ ॐ पंच लोकपालेभ्यो नमः ॥ ॐ धर्मराज चित्र गुप्ताभ्यां नमः ॥ ॐ संवत्सरादिवत्सरपंचकेभ्यो नमः ॥ ॐ वसन्ता दिषड्ऋतुभ्यो नमः ॥ ॐ चैत्रादि द्वादश मासेभ्यो नमः ॥ ॐ प्रतिपदादि तिथिभ्यो नमः ॥ ॐ रव्यादि सप्तवासरेभ्यो नमः ॥ ॐ अश्विन्यादि सप्तविंशति नक्षत्रेभ्यो नमः ॥ ॐ विष्कुंभादि अष्टा विंशति योगेभ्यो नमः ॥ ॐ ववादि एकादश करणेभ्यो नमः ॥ ॐ मेषादि द्वादश राशिभ्यो नमः ॥ ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ॥ ॐ सर्वेभ्य स्तीर्थेभ्यो नमः ॥ ॐ पूर्णाः संतुमनोरथा ममामुकशर्मणोयजमानस्य—

इति ग्रहपूजनपद्धतिः समाप्ता



अथ विवाह पद्धतिः

*तत्रादौ शुद्धासनो परिस्थितौ कन्यावरौ निरीक्ष्य कन्याप्रदो दक्षिण हस्त तर्जन्यंगुष्ठयोः मध्ये ताम्रमयीं दक्षिणांधृत्वा तद्धस्तं कन्योपरि धृत्वा वाचा बंधनं करोति ॥

अथवर्णः प्रणीयसे बलभद्रयसे देवग्रहस्य होमशान्तिच कारयेत् तस्मादिति सरतिद्दयं द्वि-जवर्यायतस्मै यथागौरीमो मधुपतिः ईश्वरोयश्च पतंगानां अश्वादीनां दासीनां प्रवालानां मान्यो भवति नहोराणां तस्यपर्जन्यस्यगौरी सौरिरिति

वाचा—ऐसे दाता कहे।

सुवाच वाचा—वर कहे।

ऐसे फिर भी दो बार दाता और वर कहें।

अथ कन्या प्रदआचार्यो वा कन्या मुपदिशाति ॥

दाता वा ब्राह्मण कन्या को उपदेश दे।

अवंध्ये ॥ आनंद वादिनी। जीवत्पुत्रवती। सत्यवादिनी। अनुत्तर वादिनीभव। पुरुषेण वाचं पालय—

---

* यह रीति हमारे देश की है। कन्या दाता कन्या वर को शुद्धासन पर देख कर दक्षिण हाथ की तर्जनी अंगुष्ठ के मध्य में दक्षिणा धारकर हाथ कन्या पर रख कर वाचा बंधन करे ॥

पुनः वरं प्रत्युपदेशः

फिर वर को उपदेश दें।

भो पुरुष कन्ययामातात्यज्यते पिता त्यज्यते कुटुंबस्त्यज्यते कस्यार्थेपत्युरर्थे–तद्यथा ॥ यथा इंद्रस्य इंद्राणी ॥ यथा गौतमस्य अहिल्या ॥ यथा दशरथस्य कौशल्या ॥ यथा रामस्य सीता ॥ यथा रावणस्य मंदोदरी ॥ यथा नलस्य दमयन्ती ॥ यथा र्जुनस्य सुभद्रा ॥ यथा भीमस्य हिडंवा ॥ यथाशंतनोर्गंगा ॥ यथा सूर्यस्य छाया ॥ यथा चंद्रस्यरोहिणी ॥ यथा वैश्वानरस्य स्वाहा ॥ यथा वनमालिनो लक्ष्मीः ॥ यथेश्वरस्यपार्वती ॥ एवंकर्मसहवाचा ब्रह्मवाचा विष्णुवाचा रुद्रवाचा वाचा विचाल्यते येन सुकृतं तेन हारितम् ॥ इति ॥

षडर्घ्या भवन्ति ॥ आचार्य्यः १ ऋत्विक् २ वैवाह्यः ३ राजा ४ प्रियः ५ स्नातकः ६ षट् ऋषयो भवन्ति। षडाचार्याश्च ॥ यथा ॥

प्रथमे ईश्वरेण गौरी विवाहिता ब्रह्मा आचार्योऽभवत् १ द्वितीये प्रजापतिना सावित्री विवाहिता गणपतिराचार्योऽभवत् २ तृतीये

१ यह लेख भी इस देश में प्रचलित होने से लिख दिया है।

सूर्य्येण छाया विवाहिता पराशर आचार्योऽभवत् ३ चतुर्थे हिरण्यकाशिपुना महिषी विवाहिता व्यास आचार्योऽभवत् ४ पंचमे विष्णुना लक्ष्मी विंवाहिताबाल्मीकआचार्योऽभवत् ५ षष्ठे श्री रामेणसीताविवाहिता वाशिष्ठआचार्योऽ भवत् ६ सप्तमे वरेण कन्या विवाह्यते वृहस्पति रूपोहं आचार्यो भवामि ॥

अथ वरवध्वोर्वस्त्र ग्रंथि बंधनम्

वर के वस्त्र में दक्षिणा अक्षत पुष्प कन्या के वस्त्र में दूर्वाक्षत दक्षिणा फल पुष्प धार कर प्रतिष्ठा करे।

ओं अद्येत्यादि अमुकस्य विवाह कर्मणि श्रीगणेशादि पुजनपुरस्सरा वरवध्वोर्वस्त्र ग्रंथि प्रतिष्ठा शुभाभवतु ॥

गांठ देता हुआ मंत्र पढ़े।

गणाधिपं नमस्कृत्य उमां लक्ष्मीं सरस्वतीम् ॥ दंपत्यो रक्षणार्थाय ग्रंथि बंधं करोम्यहम् १ यंब्रह्मवेदात॰ इत्यादि मंगल श्लोकानपि पठेत ॥

कन्या का पिता संकल्प करे।

ओं अद्येति॰अमुकस्यमम देवपितृ ऋणापनुत्यर्थं च एतस्याः कन्याया देव्या भर्त्रा सह धर्मप्रजोत्पादनगृह्य परिग्रहधर्माचरणेष्व-

धिकारसिध्यर्थे श्री लक्ष्मीनारायण प्रीतये विवाह संस्कारकर्माहं करिष्ये ॥ तदादौतदंगत्वेन वर पूजनादिकमहं कुर्वे ॥

अथ वरार्चन विधिः

वर ऊर्ध्वजानु हो बैठे अर्थात् आसन के नीचे पैर रख कर बैठे कन्या दाता वर के जानु को स्पर्श करके कहे।

ॐ साधुभवा नास्तां अर्चयिष्यामो भवंतम् ॥ दाता कहे
ओं अर्चय ॥ वरकहे ॥
ओं विष्टरो विष्टरो विष्टरः ॥ ब्राह्मण कहे
ओं विष्टरः प्रतिगृह्यताम् ॥ दाता कहे
ओं विष्टरं प्रतिगृह्णामि ॥ वर कहे

वर विष्टर हाथ में लेकर मन्त्र पढ़ कर अपने आसन पर विष्टर मुत्तराग्र रखकर उस पर बैठे।

ओं [2] व र्ष्मोस्मिसमा नानामुद्यता मिव सूर्यः॥
इमंत मभितिष्ठामि योमांकश्चाभि दासाति॥१॥
ओं [3] पाद्यं पाद्यं पाद्यम् ब्राह्मण कहे

दाता विनियोग करे १ ओ३म् साधु भवानास्तामिति प्रजापतिः ऋषिः ब्रह्मा देवता यजुः छन्दो वरार्चने विनियो०

२ ओं वर्ष्मोस्मी त्यापर्वण ऋषिः विष्टरो देवता अनुष्टुप्छन्दः उपवेशने विनियोगः।

३ जल पुष्प अक्षत गंध सर्वौषधि लाजा। विनियोगं विना मन्त्रः पंके गौरि[व]सीदति।

ओं पाद्यं प्रति गृह्यताम् ॥ दाता कहे

वर पाद्य लेकर अपने पादों पर जल डारे दाता धोवे ब्राह्मण वर होतो दक्षि० वाम क्षत्रियादि होतो वाम दक्षिण क्रम से धोवे।

ओं [1] विराजो दोहोसि विराजो दोहमशिय मयि पाद्यायै विराजो दोहः ॥२ वरः पठेत

अथ २ विष्टर दानम् ॥

ओं विष्टरो विष्टरो विष्टरः ॥ ब्राह्मण कहे

ओं विष्टरः प्रति गृह्यताम् ॥ दाता कहे

ओं विष्टरं प्रति गृह्णामि ॥ वर कहे

वर विष्टर लेकर मंत्र पढ़ के अपने पादों के नीचे उत्तराग्र रखे

ॐ[2] वर्ष्मोस्मिसमानानामुद्यता मिवसूर्यः ॥ इमंतमभितिष्ठामि योमांकश्चाभि दासाति ३

ओं[3] अर्घो अर्घो अर्घः, ब्रह्मण कहे

ओं अर्घः प्रति गृह्यताम् । दाताकहे

वर विनियोग करे

१ ॐ विराजो दोहोसीति प्रजापतिः ऋषिरनुष्टुप्छंद आपो देवता यजुः पाद प्रक्षालने विनियोगः।

२ ॐ वर्ष्मोस्मीत्याथर्वण ऋषिः विष्टरो देवता अनुष्टुप्छंदः उपवेशने विनियोगः।

३ अर्घपात्र में जल पुष्प अक्षत गंध कुशा

ओं अर्घ प्रति गृह्णामि । वरकहे

वरअर्घपात्र से पुष्प अक्षत कुशा निकालकर सिरपर धारण करे

ओं आपः स्थ युष्माभिः सर्वान् कामान् अवाप्नुवानि ४

वर अर्घपात्रके जलको गेरताहुआ पात्रको ईशान्य में छोडदे

ओं समुद्रंवः प्रहिणोमि स्वां योनिमभि गच्छत ॥ अरिष्टा स्माकं वीरामापरा सेचि मत्पयः ॥ ५ ॥

ओं आचमनीयं आचमनीयं आचामनीयम्। ब्राह्मणकहे

ओं आचमनीयं प्रतिगृह्यताम्। दाताकहे

ओं आचमनीयं प्रति गृह्णामि । वरकहे

अथ—मधुपर्क विधानम्

वरमंत्रपढ़ कर १ आचमनकरके पुनः२ आचमन तूष्णीं करे

ओं आमागन्‌यशसा मध्‌ सृजवर्च सा तं मा कुरु प्रियं प्रजाना मधि पतिं पशूना मरिष्टिं तनूनाम् ६ अथ मधुपर्क

वर विनियोग करे

१ ओं आपः स्थ इति मंत्र स्य सिंधु द्वीप ऋषिः अनुष्टुप्छंदः आपो देवता शिरसि धारणे विनि० । २ वर विनि०करे ओं समुद्रं स्यायर्वण ऋषिः बृहती छंदः वरुणो देवता अर्घ जल प्रवाहे विनि योगः । ३ तूष्ट जल । ४ वरविनियोग करे ओं आमा गन्निति परमेष्ठी ऋषिः बृहती छंदः आपो मधुर्देवता मधुपर्कने विनियोगः।

ॐ मधुपर्को मधुपर्को मधुपर्कः। ब्राह्मण कहे
ॐ मधुपर्कः प्रतिगृह्यताम्। दाताकहे
ॐ मधुपर्कं प्रति गृह्णामि। वरकहे

वर दाता के हाथ में स्थित मधुपर्क को देखे

[3]मित्रस्य त्वा चक्षुषा प्रतीक्षे ७

वर इस मन्त्रसे मधुपर्क को ले

[4]ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे ऽश्विनोर्बाहुभ्या पूष्णो हस्ताभ्यां प्रति गृह्णामि ८

वर इस मन्त्र से ३ वार अनामिकांगुष्ठ से पृथिवी पर गेरे।

ॐ[5] नमः श्यावास्यायान्नश नेयत्त आविद्धं तत्ते निष्कृंतामि ॥ ९ ॥

---

१. (मधुपर्क दधि मधु घृत)—कांस्य पात्र में हो ऊपर कांस्य पात्रहो दध्यलाभे पयः कार्यं मध्वलाभे तथागुडः। घृत मतिनिधिं कुर्यात्पयो वा दधिवा बुधः

२ (दाता विनि०करे)—ॐ मधुपर्क इतिमधुच्छंद ऋषिः बृहती छंदो मधुभुक् देवता मधुपर्क दाने विनि०

३ (वरविनि० करे)—मित्रस्य त्वे ति प्रजापतिः ऋषिः पंक्तिः छंदो मित्रो देवता मधुपर्क दर्शने विनि०

४ (वरविनि० करे)—ॐ देवस्येति ब्रह्मा ऋषिः गायत्रीछंदः सविता देवता मधुपर्क ग्रहणे विनियोगः

५ (वर विनि० करे) ॐ नमः श्यावेति प्रजापतिः ऋषिःगायत्री छंदः सविता देवता मधुपर्का लोडने विनियोगः ॥

वर मधुपर्क को इस मन्त्र से ३ वार भक्षण करे यदि समग्र न खा सके तो शेष असंचर देश में गेरे।

ओं[1] यन्मधुनो मधव्यं परमᳬ रूपमन्ना-द्यम्॥ तेनाहं मधुनो मधव्येन परमेण रूपेणा-न्नाद्येन परमो मधव्योऽन्नादोऽसानि॥ १० ॥

वरस्त्रिराचम्य अंगानि स्पृशति

ओं वाङ्मे आस्येस्तु। मुख स्पर्श करे

ओं नसोर्मे प्राणोस्तु। नासिका स्पर्श करे

ओं अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु। नेत्रों को स्पर्श करे

ओं कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु। २ कानों को स्पर्श करे

ओं बाह्वोर्मे बलमस्तु। २ भुजाओं को स्पर्श करे

ओं ऊर्वोर्मे ओजोस्तु। २ जंघा को स्पर्श करे

ओं अरिष्टानिमे अंगानि तनूस्तन्वासहसन्तु

दाता वर के समीप उदगग्र दर्भ धारकर वर के हाथ में दक्षिणा देकर गौः ३ वार पढ़े। दक्षिणा गोशाला में दे।

ओं माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसादि-त्या नाममृतस्य नाभिः प्रनुवोचं चिकितुषे जनाय मागामनागामदितिं वधिष्ट मम चामुष्य यजमानस्य पाप्माहत॥ ओंउत्सृजत तृणान्यत्तु॥

[1] (वर विनियोग करे) ओं यन्मधुन इत्यस्य कौत्स ऋषिः जगती छन्दः मधुपर्को देवता मधुपर्क प्राशने विनियोगः॥

अथाग्नि स्थापनम्

ततो वेदिकायां तुषकेशशर्करा भस्मादि रहितां चतुरस्त्री हस्तमिताभूमिं कुशैःपरिसमूह्यतान्कुशानैशान्यां परित्यज्य गोमयोदकेनोप लिप्य स्फ्येनस्रुवेणवा प्रागग्रंप्रादेशमात्रमुत्तरोत्तरक्रमेणात्रिरुल्लिख्य उल्लेखनक्रमेणानामिकांगुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्यतंदेशं वारिणाभ्युक्ष्य तत्र तूष्णींकांस्य पात्रापिहितं वन्हिमानाय्य प्राङ्मुखः प्रत्यङ्मुखंवह्निमुप समाधायतद्रक्षार्थं कंचत्पुरुषंनियुज्य कौतुका गारात्कन्यामानीय तस्यै वरः वासः परिधापयति ॥

दाता वस्त्र ४ वा मौली वर को दे वर २ कन्या को पहिरावे २ आपपहिरे।

ओं [1] जरांगच्छ परिधत्स्व वासोभवा कृष्टी-

अग्नि का स्थंडिल बनावे उनको कुशों से पोंछ कर कुशाओं को ईशान्य में फेंके गोमय से लेपन करे स्फ्या वा स्रुव से ३ रेखा उत्तरोत्तर देकर उनपर से अनामिकांगुष्ठ से मृतिका ऊपर फेंके उस स्थान को जल से सींचे ऊपर काष्ठ रखकर अग्नि स्थापन करे अग्नि के रक्षा के लिए किसी को नियुक्त कर के पुनः कन्या को वर वस्त्र पहिनावे।

१ वर विनि० करे ओं जरांगच्छेति मन्त्रस्य प्रजापतिः ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः वासोदेवता वस्त्र परिधाने विनि०। वर इस मन्त्र से नीचे का वस्त्र वा मौली कन्या को दे।

नामाभि शस्तिपावा ॥ शतंचजीवशरदः सुवर्चा रयिंच पुत्राननुसंव्ययस्वायुष्मतीदंपरिधत्स्ववासः ११ ॥

वर इस मंत्र से उपर का वस्त्र कन्या को दे।

ओं ' याअकृं तन्नवयन् याअतन्वत याश्च देव्यस्तं तूनभित स्ततंथ ॥ तास्त्वा देवीर्जरसे संव्यय स्वायुष्मतीदं परिधत्स्ववासः १२ ॥

वर इस मन्त्र से नीचे का वस्त्र पहिरे।

ओं ' परिधास्ये यशोधास्ये दीर्घायुष्टाय जरद्दष्टिरस्मि ॥ शतंच जीवामि शरदः पुरूची रायस्पोप मभिसंव्यायिष्ये १३ ॥

वर इसमन्त्र से ऊपर का वस्त्र पहिरे।

ओं ' यशसामाद्यावापृथिवी यशसेंद्रा वृहस्पती॥ यशो भगश्चमाविदद्यशोमाप्रति पद्यताम् ॥१४॥

फिर वधू वर २ आचमन करें पुनः दाता दोनों को संमुख करे।

ततः कन्या प्रदो वधू वरो परस्परं समंजेथा

वर विनि० करे २ ओं याअकृंतन्निति मन्त्रस्य प्रजापतिः ऋषिः जगतीछन्दः विराम्पो देवता वस्त्र परिधाने विनि०।

वर विनि० करे २ ओं परिधास्या इति मन्त्रस्याथर्वणऋषि त्रिष्टुप्छन्दः वाणी देवता वस्त्र परिधाने विनियोग:।

१ वर विनि० करे ओं यशसेति मन्त्रस्य प्रजापतिः ऋषिः जगतीछन्दः विराम्पो देवता वस्त्र परिधाने विनि०।

मित्यभि मुखीकरोति ॥

ओं[1] समंजंतु विश्वेदेवाःसमापो हृदयानिनौ ॥ संमातरिश्वा संधाता समुदेष्ट्री दधातुनौ ॥१५॥

[2]अथहस्त लेपनम्

मं० ओं तत्सदद्येति० श्री लक्ष्मी नाराय-ण प्रीतये ऽमुक शर्मणो विवाहांग भूतपाणि ग्रहण प्रतिष्ठा श्री गणेशादि पूजन पूर्विका शुभास्तु ॥

हथलेवा आटे का पेडा कन्या वर के हाथ के मध्य मे रख कर प्रतिष्ठा करे वर का हाथ नीचे हो शेष रीति देशानुसार करे वर हथलेवा लेकर मन्त्र पढ़े।

ओं गृभ्णामिते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्यथा सः ॥ भगोर्यमा सविता पुरंधिर्मह्यंत्वादुर्गार्हपत्याय देवाः १ अमोह मस्मि सात्व ७ सात्व मस्यमो अहं सामा हम स्मि ऋक्त्वं द्यौरहं पृथिवीत्वम् २ तावेव विवहाव है सहरेतो दधावहै ॥ प्रजां प्रजनयावहै पुत्रान् विंद्यावहै बह्वन् ३ ते संतु जरदष्टयः संप्रियौ रोचिष्णू सुमनस्य मानौ ॥ पश्येम शरदः शतं जीवेमशरदः शतᳬशृणुयाम शरदः शतम् ४

---

१ वर विनि० ओं समंजंत्विति मन्त्रस्य अथर्वण ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः विश्वेदेवा देवता परस्परं मैत्री करणे विनियोगः।

२ हथलेवा अटेका पेडा घृत गुड हल्दी मौली।

अथ कन्या दान प्रशंसा

अश्वमेधेषु यत्पुण्यं यत्पुण्यं मेपगेरवौ ॥
यत्पुण्य कार्तिके स्नाने कन्यादाने पितद्भवेत् १
गीयते सर्वशास्त्रेषु वदंति मुनयः सदा । दुर्लभं
सर्वधर्मेषु कन्या दानं कलौयुगे ॰ २

*अष्टवर्षा भवेद्गौरी नव वर्षा च रोहिणी ॥
दशवर्षा भवेत्कन्या तत ऊर्ध्वं रजस्वला ३
गौरी विवाहिता येनब्रह्मलोकंभजेन्नरः ॥
रोहिण्या प्राप्नुयात्स्वर्गं कन्यया लभते यशः ॥
येनकेनाप्युपायेन नकर्तव्या रजस्वला ॥४॥

अथ यौतक वर्णनम्

पिता अस्यै कन्यायै कुसुम्भ वस्त्र वेष्टितायै
सुभूषितायै दायं दद्यात्
मणि मुक्ताप्रवालानि राजतं हाटकं तथा। कांस्यं
लोहंतथाताम्रपात्राणि विविधानिच १ अश्वाख्यं
महिषी धेनु गजदंतं महाधनम् ॥ कंठस्य भूषणं

*आज कल प्रायः लोग अष्ट इस श्लोक को नहीं मानते मेरी सम्मति इसके विरुद्ध है जिस दिन से इसके विरुद्ध आचरण हुआ तभी से स्त्रियों में तशन्नज का रोग उदय हुआ क्योंकि यह रोग रजो विकार से होता है ऋतु शुद्धि पुरुष संयोग से बिना नहीं होती इस लिये अधिकावस्था होने से या तो दुराचार फैलता है या पूर्वोक्त रोग होता है अतः यह प्रमाण निषिद्ध नहीं।

चापि ताटकं मणि मुद्रिका २ दासिका मेदिनी चैव मिष्टान्नं वहुधा कृतम् ॥ द्रव्य शक्त्या प्रदातव्यं वेदिकायां वरायवै ३ कुरुक्षेत्र समावेदी कथिता कविभिः पुरा ॥ यत्किंचिद्दीयते दानंतत्सर्वं सफलं भवेत् ॥ ४ ॥

अथ कन्या दाना धिकारी

पिता पितामहो भ्राता सकुल्यो जननी तथा। कन्या प्रदः पूर्वनाशे प्रकृतिस्थः परः परः १

अथ कन्यादान विधानम्

कन्यां[1] प्रदो यदि सपत्नी को भवेत्तदास्व पत्नीं दक्षिणतः संस्थाप्य तद्धस्तेन शंखमध्ये दूर्वा क्षत फल पुष्प जलान्यादाय जामातृ दक्षिण करो परि कन्या दक्षिणा करं निधाय स्ववाम हस्तं कन्या दक्षिण [2]करोपरि शिरसिवा धृत्वा वर मभि मुखीकृत्य पठेत् ॥

---

[1] दाता की स्त्री से वस्त्र ग्रंथि बांधे स्त्री दक्षिण बैठे दाता स्त्री के हाथ से शंख में दूर्वा क्षत फल पुष्प जल लेकर कन्या के हाथ को जामाता के हाथ पर रख कर कन्या के हाथ पर वा सिर पर अपनाबाम हाथधर कर दान करे स्त्री के दक्षिण बैठने में प्रमाण-वम्म्य दक्षिणे कन्या कन्यायाः दक्षिणे पिता पितुश्च दक्षिणे माता मातुर्न्ने मातृ दक्षिणे अन्यत्र सीमंतेर विवाहेच चतुर्थ्या सह भोजने व्रते दाने मखे श्राद्धे पत्नी तिष्ठति दक्षिणे ।

[2] कन्यादान २ कन्या शीर्षेयवा करे दान चन्द्रिका ।

ओं दाताहं वरुणो राजा द्रव्यमादित्य दैवतम्॥ विप्रोसौ विष्णु रूपेण प्रतिगृह्णात्वयं विधिः एवं समुच्चार्य दाता संकल्पं कुर्यात ॥

सं० ओं मद्येत्यादि० ऽमुक संवत्सरे ऽमुक मासे ऽमुक पक्षे ऽमुक तिथौ अमुक वासरे एवं यथायोग करण मुहूर्ते प्रवर्तमाने ॥

आदौ देवविनायकः सुरगुरु र्ब्रह्मा शिवः केशवः सूर्यश्चन्द्र ग्रहादि तीर्थं ममलंनद्यश्च शैला वनम् ॥ नागाद्याःकुलदेवता मुनिवरा गंधर्व यक्षादयः सिद्धा भैरवयोगिनीः प्रतिदिनं कुर्वन्तु वो मंगलं १

अमुक गोत्रस्या मुक प्रवरस्या मुकशाखाध्यायिन. अमुकशर्मणः प्रपौत्राय[2] ॥ अमुक गोत्रस्या मुक प्रवरस्या मुक शाखाध्यायिनः अमुक शर्मणः पौत्राय । अमुक गोत्रस्या मुक प्रवरस्या मुक शाखाध्यायिनः अमुक शर्मणः पुत्राय ॥

ओं गौरीश्री कुलदेवताच सुरभि र्भूमिः प्रपूर्णा शुभा सावित्रीच सरस्वतीच सुभगा सत्य

---

१ क्षत्रादिमत्र में 'वरो सौ' पढना ।

२ गोत्रोच्चार में २८, २०, ८, श्लोक बोले जाते हैं यह विद्वानों की रीति है सर से सुगम रीति ८ श्लोकों वाली हम लिखते हैं, क्षत्रियादि के विवाह में शर्मा के स्थान वर्मा पद उच्चारण करे।

व्रतारुंधती ॥ स्वाहाजांववती सुरुक्म-भगिनीदुः स्वप्न विध्वंसिनी वेलाचांबुनिधेःसमीनमकराः कुर्वन्तुवो मंगलम् २

अमुक गोत्रस्यामुक प्रवरस्यामुक-शाखा ध्यायिनः अमुकशर्मणःप्रपौत्रीम् ॥ अमुकगोत्रस्यामुकप्रवरस्यामुकशाखाध्यायिनः अमुक शर्मणः पौत्रीम् ॥ अमुकगोत्रस्यामुक प्रवरस्यामुक शाखाध्यायिनः अमुक शर्मणः पुत्रीम् ॥

अश्वत्थोवदरीसचंदनतरुर्मंदारकल्पद्रुमाजंबुनिंवकदंवचूतसरला वृक्षाश्चये क्षीरिणः ॥ सर्वे ते वनमाश्रिताःफलयुता विभ्राजिता राजिता रम्यं चैत्र रथं सुनंदन वनं कुर्वंतु वो मंगलम्॥३॥

अमुक गोत्रस्यामुक प्रवरस्यामुक शाखा ध्यायिनः अमुकशर्मणःप्रपौत्राय ॥ अमुक गोत्रस्यामुक प्रवरस्यामुकशाखाध्यायिनः अमुक शर्मणः पौत्राय ॥ अमुक गोत्रस्यामुक प्रवरस्यामुक शाखा ध्यायिनः अमुक शर्मणः पुत्राय ॥ वाल्मीकिश्च सनन्दनन्दनमुनिर्व्यासो वशिष्ठो-भृगुर्जावालिर्जमदग्निरामजनकागर्गांगिरोगौतमाः॥ माधाता भरतोनृपश्चसगरो धन्यो दिलीपो नलः पुण्यो धर्मसुतो ययाति नहुषो कुर्वन्तु

वोमंगलम् ॥ ४ ॥

अमुक गोत्रस्यामुक प्रवरस्यामुकशाखा ध्यायिनः अमुकशर्मणः प्रपौत्रीम् ॥ अमुक गोत्रस्यामुक प्रवरस्यामुक शाखाध्यायिनःअमुक शर्मणः पौत्रीम् ॥ अमुकगोत्रस्यामुक प्रवरस्या- मुक शाखाध्यायिनः अमुक शर्मणः पुत्रीम् ॥

ब्रह्मज्ञान रसायनं स्वर धरं वेदास्तथा ज्योतिषं व्याकरणं च धनुर्धरं जलतरं वीणाचिकित्सा करम्॥ कोकंवाजितवाहनं नटनृतंसामुद्रिकं लक्षणं विद्या- नांच चतुर्दशं प्रतिदिनं कुर्वन्तुवो मंगलम् ॥५॥

अमुक गोत्रस्यामुक प्रवरस्यामुकशाखाध्या यिनः अमुक शर्मणः प्रपौत्राय अमुक गोत्र- स्यामुकप्रवरस्यामुकशाखाध्यायिनःअमुकशर्मणः पौत्राय अमुक गोत्रस्या मुकप्रवरस्यामुक शाखा- ध्यायिनः अमुक शर्मणः पुत्राय ॥

लक्ष्मीः कौस्तुभपारिजातकसुराधन्वं तरि- श्चंद्रमा गावः कामदुघाः सुरेश्वरगजोरंभादिदे- वांगनाः ॥ अश्वः सप्तमुखस्तथा हरिधनुः शंखो विषचामृतं रत्नानीति चतुर्दश प्रतिदिनं कुर्वन्तु वो मंगलम् ६

अमुक गोत्रस्यामुक प्रवरस्यामुक शाखा

ध्यायिनः अमुक शर्मणः प्रपौत्रीम् ॥ अमुक गोत्रस्यामुक प्रवरस्यामुकशाखाध्यायिनः अमुक शर्मणः पौत्रीम् ॥ अमुक गोत्रस्यामुक प्रवरस्या मुक शाखाध्यायिनः अमुक शर्मणः पुत्रीम् ॥

गंगा चैव सरस्वतीच यमुना गोदावरी नर्मदा कावेरी सरयूर्महेंद्रतनया चमण्वती वेदिका ॥ क्षिप्रावेत्रवती महासुरनदी ख्यातागया गंडकी पूर्णाः पुण्यजलैः समुद्रसहिताः कुर्वन्तुवो मंगलम् ॥७॥

अमुक गोत्रायामुक प्रवरायामुक शाखाध्यायिनेअमुक शर्मणेवराय ब्राह्मणाय पात्रश्रेष्ठाय कन्यार्थिने—

ब्रह्मावेदपतिः शिवः पशुपतिः सूर्यो ग्रहाणांपतिः शक्रोदेवपतिर्यमः पितृ पति स्तारापतिश्चन्द्रमाः ॥ विष्णुर्यज्ञपतिर्हविर्हुतपतिः स्कंदश्च सेना पतिः सर्वे ते पतयः कुवेर सहिताः कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥८॥

अमुकगोत्राममुकप्रवराममुक नाम्नीमिमाकन्या सालंकारां परालंकार वर्जिता वस्त्रयुगलाछन्नां प्रजापति देवतां पुराणोक्त शतगुणी कृतज्योतिष्टोमातिरात्रादियज्ञसम फलप्राप्तिकामोऽने

नवरेणास्यां कन्याया मुत्पादयिष्य माणसंतत्या द्वादशावरान् द्वादश परान् पुरुषान्पवित्री कर्तु मात्मनश्च श्रीलक्ष्मी नारायण प्रीतये भार्यात्वेन तुभ्यं अमुक गोत्रः अमुक प्रवरः अमुक शर्माहं संप्रददे ॥

दाता शंख वा कुशाक्षत जल और कन्या का दक्षिण हाथ वर को दे वर स्वास्ति ऐसे कहकर द्यौस्त्वा० यह पढ़े ।

ओं द्यौस्त्वा ददातु पृथिवीत्वा मनुगृह्णातु ॥

ॐ अद्यकृते तत्कन्या दान कर्मणः यथोक्त फलप्राप्तये कन्यादान प्रतिष्ठार्थं इमां गां[2] (वादास्यमानां) सपरिकराम् अमुक गोत्राय वराय दातुमहमुत्सृजे॥ इदं[3] सुवर्णमय मंगुलीयकं अग्निदेवतं । इदं[4] दक्षिणाद्रव्यं चंद्रदैवतम् ॥

ततो वरः पठेत

ओं कोदात् कस्माअदात् कामोदात् कामायादात् कामोदाता कामःप्रति गृहीता कामैतत्ते ॥

ततो वर आसना दुत्तीर्य पुरोहित पादप्रक्षालनं कृत्वा दानं दद्यात ॥

अथ सावधान गोदान संकल्प

ॐ मद्येत्यादि० श्री लक्ष्मी नारायण प्रीतये

---

१ यदि पत्नियादि हों तो दशावरान् दशापरान् कहे।२गौ ३मुद्रिका ४ दक्षिणा

लक्ष्मीनारायणं प्रीति द्वाराऽमुकशर्मणो मम गृहीत मानुषीपत्नी दान भारापनु त्त्यवच्छिन्न निखिल दुरित दुःस्वप्नदुःशकुनदौर्भाग्य शांत्युत्तर सुख सौभाग्य धन सन्तान समृद्ध्यर्थं इमांगां ॥

वा दास्य मानां गां

सवत्सां दोग्ध्रीं घंटाचामरभूषितांपंच-रत्न पुच्छां सुवर्णशृंगींरौप्यखुरीताम्रपृष्ठां कांस्य पात्रदोहन संयुक्तां खाद्यवस्तु वातद्दक्षिणा संयुक्तां सुपूजितां अमुक गोत्रायामुक प्रवरायामुक शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे ॥

ओं मद्यकृतैतत् लक्ष्मीनारायणप्रीतये गो-दान प्रतिष्ठार्थं मिदंदक्षिणा द्रव्यममुकदैवतममुक गोत्रायामुक शर्मणेदातुमहं मुत्सृजे—

गो प्रतिनिधिभूत दक्षिणा दानम्

ओं मद्येत्यादि[१] अमुक शर्मणोममगृहीत मानुषीपत्नी दानभारापनुत्यर्थं करणीय गोदान प्रतिनिधि भूतं गोदुग्ध निष्क्रयी भूतम्—

पंचविंशति परिमितं राजकीयमुद्राद्रव्यं एवं २० विंशति–१५ पंचदश–१० दश ५) पंच २॥) सार्द्ध मुद्राद्वयं १।) सपादरजतं—एततपरिमितं

[१] गौ यदि पीछे देनी हो तो यह पढ़े ।

दक्षिणा द्रव्यं चंद्र दैवतं सुवर्णं अग्निदैवतं—वा—श्रीलक्ष्मीनारायण प्रीतयेऽमुक गोत्रायामुक शर्मणे ब्राह्मणायदातुमहमुत्सजे—

पूर्ववतकृतैतत् दक्षिणामपिदद्यात्

नगरवासिभ्योथच विदेशिजनेभ्यश्चदानं देयमथ च कुरुदोत्र समावेदीतिवाक्याच्चप्रतिगृहं वाप्रतिजनं दक्षिणा (नांवा) दानसं०

ओं मद्येत्यादि० श्री लक्ष्मीनारायण प्रीतयेतत्प्रीतिद्वारा सभार्यस्यामुक शर्मणोमम अद्यदिनादारभ्यसर्वापच्छांति पूर्वक दीर्घायुर्विपुलधन धान्य पुत्रपौत्राद्य वच्छिन्न संतति वृद्धिरिथर लक्ष्मी कीर्तिशत्रुपरा जयसदभीष्ट सिद्ध्यार्थं स्वकीयोद्वाह लग्नगतदुर्ग्रहनिखिलदुरितदुः शकुनदौर्भाग्य दुर्निमित्तदुः स्वप्न परकृताभिचारकादिजनित दुष्फलत्वशां त्युत्तर विवाहविध्ययथा वद्वस्तु प्रतिपादनजन्य सकलपापक्षयपूर्वकविश्वमंगलावाप्ति कामः एतन्नगरस्थित स्वदेशीय विदेशीय ब्राह्मणाद्य धिकारि जनानां [1]प्रत्येकं ॥ वा

एतन्न गरावस्थित ब्राह्मणानां [2]प्रति गृहं ॥ वा

इदानीं कालत आरम्भ [3]सायं यावत् ॥ वा

[1] हर एक देशी विदेशी के लिये [2] नगर के ब्राह्मणों के घर [3] अब से संध्या तक

'अधुना येके च स्थिता अधिकारिणस्ता-न्प्रत्येकं ॥

एतत्परि मितम् १) रजतं वा ॥) अष्टनेत्र परिमितं वा ।) चतुर्नेत्र मितं वा ≈) द्विनेत्र परि-मितं वा -) एकनेत्र परिमितं वा ×) अर्द्धनेत्र परिमितं दक्षिणा द्रव्यं अमुक दैवतं दातु मह मुत्सृजे ॥ गोशालार्थं दानम्

ॐ मद्येत्यादि० श्री लक्ष्मीनारायण प्रीतये तत्प्रीति द्वारा सभार्यस्य ममअमुकशर्मणः सर्वा पच्छांति पूर्वक धनसन्तान सुख समृध्यार्थं एतद्देशस्थित गोशालार्थं एतत्परिमितं दक्षिणा द्रव्यं दातु महमुत्सृजे ॥

'अमुक स्थान स्थित अनाथालयाय इदं दक्षिणा द्रव्यं ॥

'अमुक स्थान स्थित पाठशालायां प्राप्त विद्यार्थि जनेभ्यः ॥

वरः आसनो परितिष्ठेत्

अथ भार्या कर्तृक दान संक०

ॐ मद्येत्यादि० पाणिग्रहण परतो भार्यया स्वर्णदानं कर्तव्य मिति प्रमाण मनुसृत्य देशाचार कुलरीतितश्च श्री लक्ष्मीनारायण प्रीतये तत्प्रीति

१ जो इस वक्त मौजूद हैं २ अनाथालय को दान। ३पाठशाला को दान

द्वारा सभर्तृकाया अमुक देव्या मम निखिला रिष्टनिरास पूर्वक सुखसौभाग्यधनसन्तान समृध्यर्थं स्वर्णरक्तिकासमसंख्याकवर्षशता वच्छिन्न स्वर्लोकवास कामनया एतत्परिमितं सुवर्णं सपादमाषं सार्द्धमाषद्वयं षण्माषपरिमितं द्वादश माषपरिमितं वा सुवर्णमूल्योपकल्पितं दक्षिणा द्रव्यं वा अमुक गोत्राया मुकशर्मणे ब्रा० दातु महमुत्सृजे कृतैतद्दक्षिणामपिदद्यात् ॥

अत्र भूयसी दक्षिणादानम्

तदाचारात् अस्मिन् समये वा हवनां ते करणीयम् ॥

नाम करणम्

वरस्तां पत्नीं पाणोगृहीत्वा पठेत्

ॐ यदे पिमनसा दूरं दिशोनुपवमानोवा ॥ हिरणवपर्णो वैकर्णः सत्वामन्मनसांकरोतु श्री असुकी देवी इति पठेत् ॥ पुनर्न ॥

ततो वेदि दक्षिणस्यां दिशि उत्तरस्या वा वारि पूर्णकलशं पुष्पाक्षतचंदन कुशाम्र पत्रौ-पधि समन्वितं ऊर्ध्वं तिष्ठतो मौनिनः पुरुषस्य स्कंधे अभिषेक पर्यंतं धारयेत् ॥

परस्परं समीक्षेथामिति दाताबदेत

वरः पठति—

ॐ अघोरचक्षुर पतिघ्न्येधिशिवः पशुभ्यः सुमनाःसुवर्चाः॥१॥ वीरसूर्देव कामास्योनाशन्नो भवद्विपदेशं चतुष्पदे॥

ॐ सोमः प्रथमोविविदे गंधर्वो विविद उत्तरः॥ तृतीयोग्निष्टेपतिस्तुरीयस्ते मनुष्यजः॥ २॥ ॐ सोमोददद्गंधर्वायगंधर्वोददद्ग्नये। रयिंच पुत्रांश्चा दाद ग्निर्मह्यमथो इमाम्॥ ३॥ ॐ सानः पूषाशिव तमामैरय सानःउरू उशती विहर। यस्यामुशन्तः प्रहराम शेर्फ यस्या मुकामा बहवो निविष्ट्यै॥४॥

ततो ग्निप्रदक्षिणी कृत्य पश्चादग्ने रहत वस्त्र वेष्टितं तृणा पूलकं कटं वानिवेश्य तदुपरिदक्षिण चरणं दत्वावधूं दक्षिणतः उपवेश्य स्वयमप्यु पविश्य संकल्पयेत्

ॐ मद्ये त्यादि० प्रति गृहीताया अस्या भार्यायाः पत्नी त्वसिद्धये वैवाहिकहोममहंकरिष्ये— एतद्द्वारा वा कारयिष्ये—

१ वरअग्निकी प्रदक्षिणा कर अग्निके पश्चिमतर्फ वस्त्रवेष्टितं कुशोंपुंज पर दहिना पादधरकर बैठे पत्नी को दक्षिण में बैठाकर संकल्प करे

२ यदि हवन औरसे कराना होतो यहपढे

ततः पुष्प चंदन वस्त्र दक्षिणा आदाय ब्रह्माणं वृणुयात

ॐ अद्यकर्तव्य विवाहहोमकर्मणि कृता कृता वेक्षण रूप ब्रह्म कर्मकर्तृत्वेन एभिः पुष्पाक्षता दिभिः अमुक गोत्रममुकशर्माणं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे ।

वरण सामिग्रीं दत्वातत्कर मूले कंकणं वध्वा तदंगुष्ठं गृह्णीयात् ब्राह्मणः पठेत् वृतोस्मि ॥२॥

वृतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्॥
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धयासत्य माप्यते ॥

यथा विहितं कर्म कुरु इतिदाता वदेत्

ॐ करवाणीति ब्राह्मणो वदेत्

ततोन्यद्वरण संभृतिमादाय संकल्प०

ॐमद्य कर्तव्य विवाह होमकर्मणिकृताकृता वेक्षण रूप हवनकर्मकर्तृत्वेन एभिः पुष्पाक्षतादिभिः अमुक शर्माणं त्वामहं संवृणे ॥

वरण सामिग्रीं ब्राह्मण करेदत्वाकंकणंवध्वा ब्राह्मणांगुष्ठं गृह्णीयात् ॥

ततो ब्राह्मणः पठेत्

वृतेनदीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्
दक्षिणा श्रद्धा माप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते २

यथा विहितं कर्म कुरु—यजमान कहे

अहं करवाणि—ब्राह्मण कहे

अग्ने [1] दक्षिणतः शुद्धमासनं धृत्वा तदुपरि प्रागग्रान् कुशानास्तीर्य ब्रह्माणमग्निप्रदक्षिण क्रमेणानीयात्रत्वंमेब्रह्मा भवेत्याभिधाय उदङ्मुखं कल्पितासने समुपवेशयेत ॥

ततः प्रणीता [2] पात्रं पुरुतः कृत्वा वारिणा परिपूर्य्य १६ कुशै राच्छाद्य ब्रह्मणो मुख मवलोक्य अग्नेरुत्तरतः प्रणीतापात्रंकुशोपरिनिदध्यात

ततः परिस्तरणम्

[3] बर्हिषश्चतुर्थं भागमादाय आग्नेय्या दीशानां तं ४ ब्रह्मणोऽग्नि पर्यंतं ४ नैर्ऋत्याद्वायव्यातम् ४ अग्नितः प्रणीतापर्यंतम् ४ धारयेत्—

---

१ अग्नि से दक्षिण में शुद्धासन पर पूर्वाग्र कुशा रख कर ब्रह्मा को अग्नि की परिक्रमा करा कर तू मेरा ब्रह्मा हो, ऐसे कह उत्तर मुख ब्रह्मा को बैठ देवे ।

२ प्रणीता पात्र को आगे धर कर जल से भर कर १६ कुशा उनके ऊपर रख फिर ब्रह्मा को देख उस के सन्मुख अग्निके उत्तर कुशा पर रखे ।

३ प्रणीता पात्र के ऊपर वाली १६ कुशा में ४ कुशाऽग्नि कोण से ईशान पर्यंत ४ कुशा ब्रह्मा से अग्नि पर्यंत ४ कुशा नैर्ऋत्य से वायु कोण पर्यंत ४ कुशा अग्नि से प्रणीता पात्र पर्यन्त धारण करे पूर्वाग्र—

पश्चिमतः पूर्वे पूर्वे [1]वस्तुधारणम्

१ पवित्रछेदनार्थं कुशत्रयं २ पवित्र करणार्थं साग्रमनन्तरगर्भं कुशपत्र द्वयम् ३ प्रोक्षणी पात्रं ४ आज्य स्थाली ५ संमार्जनार्थं कुशत्रयं ६ उपयमनार्थं वेणी रूपकुशत्रयं ७ समिधास्तिस्रः ८ स्त्रुवः ९ आज्यं १० पट्पंचा शदुत्तर शतद्वयमुष्टि पूर्णतंडुलपूर्णपात्रंक्रमेणासादनीयम् तस्यामेवदिशि अन्यवस्तू निधारयेत शमीपत्रमिश्रालाजा–दृशदुपलं कुमारी भ्राता दृढ़पुरुषः–अन्यान्युपयुक्तानिवस्तुनिधारयेत

[2]ततः पवित्र छेदन कुशैः पवित्रे छित्वा ॥

१–पश्चिम से पूर्व पूर्व वस्तु रखे क्रम से अग्नि से उत्तर पश्चिम से पूर्व २ वस्तु रखे १ पवित्रछेदनार्थ कुशा २ पवित्र बनाने के लिये मध्य पत्र से रहित २ कुशा। २–प्रोक्षणी पात्र ३–घृतपात्र। ४–संमार्जनके लिये ३ कुशा। ५–उपयमन के लिये वेणी रूप ३ कुशा। ६–छिन्ड्रे की ३ लकड़ी। ७–स्त्रुव। ८–घृत। ९–पूर्ण पात्र। १०–शमीपत्र से मिली हुई फुलियां। ११–पत्थर १२ कुमारी का भ्राता। १३–दृढ़ पुरुष और भी वस्तु रखे।

२–पवित्र छेदन ३ कुशा मे पवित्र को छेदन कर मूल भाग छोड़ कर ऊपर वाले भाग मे पवित्रा बनावे पवित्र युक्त हाथ मे प्रणीता के जल को ३ वार प्रोक्षणीपात्र में फेंके अनामिका अंगुष्ठ से उत्तराग्र पवित्रे लेकर ३ वार प्रोक्षणी जल को ऊपर फेंकें प्रोक्षणी पात्र हाथ में ले ३ वार जल ऊपर फेंके प्रणीता के जल मे प्रोक्षणी प्रोक्षण करे–प्रोक्षणी जल से वस्तु सींचे अग्नि प्रणीता के मध्य में प्रोक्षणी रखे आज्य पात्र में घृत डाले–घृत तपावे

ततः सपवित्रकरेण प्रणीतोदकांत्रिः प्रोक्षणी पात्रे निधाय ॥ अनामिकां गुष्ठाभ्यां उत्तराग्रे पवित्रे गृहीत्वा ॥ त्रिरुत्पवनम् ॥ ततः प्रोक्षणीपात्रस्य सव्यहस्तेकरणम् ॥ त्रिरुद्दिंगनम् ॥ प्रणीतोदकेन प्रोक्षणी प्रोक्षणम् ॥ प्रोत्तणीजलेनयथाऽऽसादित वस्तुसेचनम् ॥ ततोग्नि प्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणी निधानम ॥ आज्यस्थाल्यामाज्य निर्वापः ततोधिश्रयणं । ततोज्वलत्तृणादिनाहविर्वेष्ट यित्वा प्रदक्षिणक्रमेण वन्हौतत्प्रक्षेपः । ततः स्रुवप्रतपनम् ॥ सम्मार्जन कुशानामग्रैरंतरतोमूलैर्वाह्यतः स्रुवंसंमृज्यप्रणीतो दकेनाभ्युक्ष्यपुनः प्रतप्य स्रुवं दक्षिणतो निदध्यात् ॥

[1]तत आज्यस्याग्नेरवतारणम् ॥ तत आज्ये

फिर जलते २ तृणों से घृत को वेष्टनकर प्रदक्षिण क्रम से अग्नि में डाले फिर स्रुव को तपावे सम्मार्जन कुशों के अग्रभाग से अंदिर मूलो से वाहिर को स्रुव को संमार्जन करे प्रणीता के जल से स्रुव को सींचे पुनः स्रुव को तपा कर दक्षिण हाथ की तर्फ धारण करे—

१ फिर घृत को अग्नि से उतारे घृत को प्रोक्षणीवत् ऊंचा फेंके घृत में निषिद्ध वस्तु होतो निकाले पुनः प्रोक्षणी वत् ऊंचा फेंके फिर उपयमन कुशाओं को लेकर उठखड़ा हुआ प्रजापति को मन से ध्यान करता हुआ विनामंत्र ३ छिछड़े की लकडी घृताक्त करके अग्नि में डाले फिर बैठ कर पवित्र सहित प्रोक्षणी के जल से प्रदक्षिण क्रम से अग्नि को सिंचे प्रणीता पात्र में पवित्रा रख कर दक्षिण जानु पृथिवी पर लगा कर अग्नि को जग कर अग्निका पूजन करे।

प्रोक्षणी वदुत्पवनं ॥ अवेक्ष्य सत्यपद्रव्ये तन्निर रसनम् ॥ पुनः प्रोक्षणीवत उत्पवनम ॥ तत उपयमन कुशानादाय । उत्तिष्ठन् ॥ प्रजापतिं मनसाध्यायन् ॥ तूष्णी मग्नौघृताक्तास्तिस्रः समिधः क्षिपेत ॥ तत उपविश्य सपवित्र प्रोक्ष-ण्युदकेन प्रदक्षिण क्रमेणाग्निंपर्युक्ष्य ॥ प्रणीता पात्रे पवित्रं निधाय । पातित दक्षिणजानुः ॥ अग्नि प्रज्वाल्य पूजयेत् ॥

ॐ आवाहयेतं पुरुषं महांतं सुरासुरैरर्चित पादपद्मम् ॥ इंद्रादयोयस्य मुखे विशंति कुण्डे विशत्वं सुरलोकनाथ ॥ १ ॥ अग्निंदूतं पुरोदधे हव्यवाह मुपब्रुवे॥ देवाँ आसादयादिह ॥२॥ तदे वाग्निस्तदा दित्यस्त द्वायुस्तदु चन्द्रमाः । तदेव शुक्रंतद्ब्रह्मता आपः सप्रजापतिः ॥३॥ अग्नयेनमः पाद्यादीनि समर्पयामि अग्निं संपूज्य पुनः ॥

स्रुवं संपूजयेत्

आवाहयाम्यहं देवं स्रुवं सांसिद्ध मुत्तमम् ॥
स्वाहाकार स्वधाकार वषट्कार समान्वितम् ॥१॥
अष्टां गुलं त्यजेन्मूले अग्रेत्यक्त्वादशागुलम् ॥
कर्तव्यं गोपदाकारं दण्डस्याग्रेतु कंकणम् ॥ इति स्रुव पूजनम् ॥

अथ कुशेन [1] ब्रह्मान्वारब्धः समिद्धतमेऽग्नौ स्रुवेणा ज्याहुतीर्जुहोतितत्राघारादारभ्य द्वादशाहुतिषुतत्तदाहुत्यनंतरंस्रुवावास्थित हुतशेषघृतस्य प्रोक्षणी पात्रे प्रक्षेपः ॥

[3] ॐ प्रजापतये स्वाहा ॥ इदं प्रजापये न मम [2] (इति मनसा त्यागमपि)

ॐ इंद्राय स्वाहा ॥ इदमिन्द्राय न मम २ इत्याघारौ (यह आंघार संज्ञक है)

ॐ अग्नये स्वाहा ॥ इदमग्नये न० ३

ॐ सोमाय स्वाहा ॥ इदं सोमाय न० ४

इत्याज्यभागौ (यह आज्य भाग हैं)

[4] ॐ भूः स्वाहा ॥ इदमग्नये न० ५ ॐ

---

१ कुशा से ब्रह्मा के साथ अन्वारम्भ कर के अग्नि में स्रुवा से घृताहुति दे उन में आघार संज्ञक १.२ आहुति में हुतशेष घृत को प्रोक्षणी पात्र में फेंके यहां पर कुशमय ब्रह्मा को बैठाते हैं वह यथा संभव साक्षात् ब्रह्मा हो या कुशमय हो उसके साथ कुश ग्रंथि देकर लंबी कुशा वा मंगल सूत्र अपने जानु के साथ रखे ।

२ मनसा त्याग का मतलब न मम है इस लिए प्रत्येक आहुति के साथ न मम कहना हम सिर्फ न० ऐसे संकेत लिखेंगे ।

३ ॐ प्रजापतये इत्यादि चतुर्मंत्राणां ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छंदोग्निर्देवता होमे विनियो०

४ ॐ व्याहृतीनां जमदग्नि भरद्वाज भृग व ऋषयो गायत्र्युष्णिगनुष्टुभ च्छंदांसि अग्निर्वायुः सूर्यो देवता होमे विनि०

भुवः स्वाहा ॥ इदं वायवे न० ६ उँ स्वः स्वा० ॥ इदं सूर्याय न मम ॥ ७ ॥

एता महा व्याहृतयः

[1]त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः । यजिष्ठोवान्हितमः शोशुचानो विश्वाद्देषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा इदमग्नी वरुणाभ्यां न० ॥

उँ सत्वन्नो अग्नेऽवमो भवोतीने दिष्ठो अस्या उपसो व्युष्टौ ॥ अवयक्ष्वनो वरुणꣳ रराणो-व्रीहि मृडीकꣳ सुहवोनएधि स्वाहा ॥ इदमग्नी वरुणाभ्यां न मम ॥

[2]उँ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमयाअसि ॥ अयानोयज्ञंवहास्ययानोधेहिभेषजꣳस्वाहा इद मग्नयेनमम ॥

[3]उँ येतेशतंवरुणयेसहस्रंयाज्ञियाः पाशावितता महान्तः॥तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णु

१—उँ त्वन्नोग्ने-सत्वन्नो—इति द्वयोर्वामदेव ऋषि स्त्रिष्टुप् छन्दः अग्नि वरुणौ देवते सर्व प्रायश्चित्त होमे विनियोगः

२—ओं अयाश्चाग्ने इत्यस्य वाम देव ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः अग्निर्देवता सर्व प्रायश्चित्त होमे विनि०

३—ओं ये ते शतमिति मंत्रस्य वामदेव ऋषि त्रिष्टुप्छन्दः वरुण सवित्रादिर्लिंगोक्ता देवताः सर्व प्रायश्चित्त होमे विनि०

विश्वे मुंचन्तु मरुतः स्वर्काः स्वा०॥ इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ॥ ११ ॥

[1] ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यमꣳश्रथाय ॥ अथा वयमादित्य व्रतेतवानागसो अदितये स्याम स्वा० इदं वरुणाय न० ॥१२॥

ततोऽन्वारंभं विना

ॐ प्रजापतयेस्वाहा। इदं प्रजापतये न० १३
ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा ॥ इद मग्नये स्विष्टकृते नमम १४

[2]उदकोप स्पर्शनम्.

॥ एताः सर्वाः प्रायश्चित्तसंज्ञकाः ॥

॥ अथराष्ट्रभृद्धोमः ॥

[3]ॐ ऋताषाड् ऋतधामा ग्निर्गंधर्वः सन इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् इदमृत साहे

१–ॐ उदुत्तममि त्यस्य शुनाशेफ ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः वरुणो देवता वारुणीय पाशोन्मोके होमे विनि०

२ यहां प्रणीता के जल को स्पर्श करे, जहां उदकोपस्पर्शन लिखा हो वहां प्रणीता के जल को स्पर्श करना।

३ राष्ट्रभृत्संज्ञकानां ऋताषा डित्यादि द्वादश मंत्राणां विश्वेदेवा ऋषयः यजुश्छन्दछंदो नियमःस्वस्वमंत्रोक्त गुण विशिष्ट गंधर्वाप्सरसो देवता आज्यहोमे विनियोगः।

ऋतधाम्ने ऽग्नये गंधर्वाय ॥ नमम ॥ १ ॥

ॐ ऋताषाड् ऋतधामाग्निर्गंधर्वस्तस्यौ षधयो ऽप्सरसो मुदोनामताभ्यः स्वाहा इदमोषधिभ्यो ऽप्सरोभ्यो मुद्भ्यः न० २ ॐ सꣳहितो विश्व सामा सूर्यो गंधर्वः सनइदं ब्रह्म क्षत्रंपातु तस्मै स्वाहा वाट् ॥ इदꣳ सꣳ हिताय विश्व साम्ने सूर्याय गंधर्वाय न० ३

ॐ सꣳहितो विश्वसामा सूर्यो गंधर्वस्तस्य मरीचयो ऽप्सरस आयुवो नामताभ्यः स्वाहा ॥ इदंमरीचिभ्यो ऽप्सरोभ्य आयुवोभ्यः॥ न० ४ ॥ ॐ सुषुम्णः सूर्यरश्मिश्चंद्रमा गंधर्वः सनइदंब्रह्म क्षत्रं पातुतस्मै स्वाहा । वाट् ॥ इदं सुषुम्णाय सूर्यरश्मये चंद्रमसे गंधर्वाय न०॥ ५ ॥ॐ सुषुम्णः सूर्यरश्मिश्चन्द्रमा गंधर्वस्तस्य नक्षत्राण्यप्सरसो भेकुरयो नामताभ्यः स्वाहा ॥ इदंनक्षत्रेभ्योप्सरोभ्योभेकुरिभ्यः न० ॥ ६ ॥ ॐइषिरो विश्वव्यचावातो गंधर्वः सन इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मैस्वाहा ॥ वाट् ॥ इदमिषिरायविश्वव्यचसेवाताय गंधर्वाय न० ॥ ७ ॥ ॐइषिरोविश्वव्यचावातो गंधर्वस्तस्यापो ऽप्सरस ऊर्जो नामता

भ्यः स्वाहा। इद मदूभ्यो ऽप्सरोभ्य ऊर्भ्यः न०
॥ ८ ॥ ओं भुज्युः सुपर्णोयज्ञो गंधर्वः सन इदं
ब्रह्मक्षत्रं पातुतस्मै स्वाहा ॥ वाट्। इदं भुज्यवे
सुपर्णाय यज्ञायगंधर्वायन० ॥ ९ ॥ ॐभुज्युः
सुपर्णो यज्ञो गंधर्वस्तस्य दक्षिणा अप्सरसः स्ता
वानामताभ्यः स्वाहा ॥ इदं दक्षिणाभ्यो प्सरोभ्यः
स्तावाभ्यःन० ॥ १० ॥ ॐ प्रजापतिर्विश्वकर्मा
मनो गंधर्वःसन इदं ब्रह्मक्षत्रं पातुतस्मै स्वाहा॥
वाट् ॥ इदं प्रजापतये विश्वकर्मणे मनसे गंधर्वा-
यन० ॥ ११ ॥ ॐ प्रजापति विंश्वकर्मा मनोगंध-
र्वस्तस्य ऋक् सामान्यप्सरस एष्टयो नामताभ्यः
स्वाहा ॥ इदमृक् सामभ्योऽप्सरोभ्य एष्टिभ्यःन०
॥ १२ ॥ इति राष्ट्रभृत होमः ॥

अथ जया संज्ञक होमः

ॐ [1]चित्तंच स्वाहा इदं चित्तायन० ॥ १ ॥
ॐ चित्तिश्च स्वाहा ॥ इदं चित्यैन० ॥ २ ॥ ओं
आकूतंच स्वा० । इदमाकूतायन० ॥ ३ ॥ ओं
आकूतिश्च स्वा० ॥ इदमा कूत्यैन० ॥ ४ ॥
ओं विज्ञातंच स्वाहा ॥ इद विज्ञातायन० ॥ ५ ॥

[1] जया संज्ञकानां चित्तं चेत्यादित्रयो दशानां विश्वेदेवा ऋषयः यजु-
ष्टान्न छन्दो नियमः, प्रथम पदोक्ता देवता आज्य होमे विनि० ।

ओं विज्ञातिश्च स्वाहा ॥ इदं विज्ञात्यैन० ॥ ६ ॥
ओं मनश्च स्वाहा ॥ इदंमनसेन० ॥ ७ ॥
ओं शक्वर्य्यश्च स्वाहा ॥ इदशकरीभ्यः न०
॥ ८ ॥ ओं दर्शश्च स्वाहा ॥ इदंदर्शाय न०
॥ ९ ॥ ओं पौर्णमासंच स्वाहा ॥ इदं पौर्ण-
मासायन० ॥ १० ॥ ओं बृहच्च स्वाहा । इदंबृहते
न० ॥ ११ ॥ ओं रथंतरं च स्वाहा । इदं रथंतरा-
यन० ॥ १२ ॥ ओं प्रजापति जयानिंद्राय वृष्णे
प्रायच्छदुग्रः पृतना जयेषु तस्मैविशः समनमंत
सर्वाः सउग्रः सइहव्यो बभूव स्वाहा ॥ इदं प्रजा-
पतयेनमम ॥ १३ ॥ इति जया संज्ञकहोमः ॥

अथाभ्यातान होमः

ओं[1] अग्नि र्भूताना मधिपतिः समावत्व
स्मिन् ब्राह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामा शिष्यस्यां पुरो
धायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ७ स्वाहा ।
इद मग्नये भूताना माधिपतये नमम ॥

ओं इंद्रोज्येष्टानामाधिपतिःसमावस्मिन्
ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामा शिष्यस्यां पुरोधायाम
स्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्यांॅस्वाहा॥इदमिन्द्रा-

[1] अभ्यातान मंत्राना अग्निर्भूताना मित्यादि अष्टादशानां विश्वेदेवा ऋषय यजुश्छन्दो नियमः प्रथम पदोक्ता देवता आज्य होमे विनियोगः।

यज्ज्येष्ठानामधिपतयेनमम ॥२॥ ओंयमः पृथिव्या अधिपतिःसमावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेऽस्या माशिष्यस्यांपुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यांदेवहूत्या ग्वंस्वाहा॥इदंयमायपृथिव्या अधिपतयेनमम॥३॥

अत्र प्रणीतोदकस्पर्शनम्

ओं वायुरंतरिक्षस्याधिपतिः समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यांपुरोधायाम स्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याग्वंस्वाहा ॥ इदंवाय वेंऽतरिक्षस्याधिपतयेनमम ॥४॥

ओं सूर्यो दिवाअधिपतिः समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायाम स्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याग्वंस्वाहा ॥ इदं सूर्या यदिवाअधिपतये ॥५॥

ओं चंद्रमानक्षत्राणामधिपतिःसमावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेऽस्यामा शिष्यस्यां पुरोधायाम स्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याग्वंस्वाहा ॥ इदंचंद्रमसे नक्षत्राणा मधिपतयेन० ॥६॥

ओं बृहस्पतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिःसमावत्वस्मि न् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधा- याम स्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्याग्वंस्वाहा इदं बृह-

प्रणीता के जल का स्पर्श करे

स्पतयेब्रह्मणोधिपतयेन० ॥७॥

ओं मित्रः सत्यानामधिपातिः समावत्व स्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यांपुरोधा यामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याॐस्वाहा ॥ इदं मित्राय सत्यानामधिपतयेन० ॥८॥

ओं वरुणोऽपामधिपातिः समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामा शिष्यस्यां पुरोधाया मस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याॐस्वाहा ॥ इदं वरुणायअपामधिपतये न०॥९॥

ओं समुद्रः स्रोत्यानामधिपतिः समावत्व स्मिन् ब्रह्मण्य स्मिन् क्षत्रे ऽस्यामा शिष्यस्यां पुरो धायाम स्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याॐस्वाहा ॥ इदं समुद्रायस्रोत्याना मधिपतयेन० ॥१०॥

ओं अन्नं साम्राज्यानामधिपतिः समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याॐ स्वाहा ॥ इदमन्नायसाम्राज्यानामाधिपतये न मम ॥ ११ ॥ ओं सोमओपधीनामधिपातिः समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रे ऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याॐ स्वाहा ॥ इदं सोमायओपधीनामधिपतये न०

॥१२॥ओं सविता प्रसवाना मधिपतिःसमावत्व-स्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरो धायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ७ स्वाहा॥ इदं सवित्रे प्रसवानामधिपतयेन० ॥१३॥ ओं रुद्रः पशूनामधिपतिःसमावत्वस्मिन् ब्रह्मण्य-स्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन कर्मण्यस्यां देवहूत्या ७ स्वाहा॥ इदं रुद्राय पशूनामधिपतयेन० ॥१४॥

अत्र प्रणीतोदक स्पर्शनम्

प्रणीता के जल को स्पर्श करे।

ओं त्वष्टारूपाणामधिपतिः समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायाम स्मिन् कर्मण्यस्यांदेवहूत्या७ स्वाहा ॥ इदं त्वष्ट्र रूपाणामधिपतये न० ॥१५॥ ओं विष्णुः पर्वतानामाधिपतिः समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्य-स्मिन्क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ७ स्वाहा॥ इदं विष्णवे पर्वतानामधिपतयेन०. ॥१६॥ ओं मरुतो गणाना मधिपतय स्तेमावंत्वस्मिन्ब्रह्मण्य-स्मिन् क्षत्रेऽस्यामा शिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन कर्मण्यस्यांदेवहूत्या ७ स्वाहा ॥ इदंमरुद्भ्यो

गणाना मधिपतिभ्यः न०॥१७॥ ओं पितरः पिता महाः परेऽवरेततास्ततामहाइहमावंत्वस्मिन्ब्रह्मण्य स्मिन् क्षत्रेऽस्यामा शिष्यस्यांपुरोधायामस्मिन कर्मण्यस्यां देवहूत्या ७ स्वाहा ॥ इदं पितृभ्यः पितामहेभ्यः परेभ्योवरेभ्यस्ततेभ्यस्ततामहे-भ्यः न० ॥ १८ ॥

अत्र प्रणीतोदक स्पर्शनम्

यदि हवन कर्ता ऽन्यः पुरुषः स्यात्तर्हि स्वयं पंचा हुतीर्वरो जुहुयात्।

अथाज्यसंज्ञकहोमः

ॐ आग्नि रैतु प्रथमो देवताना ७ सोस्यै प्रजां मुंचतु मृत्यु पाशात्। तदय ७ राजावरुणो नुमन्यतां यथेय ७ स्त्री पौत्रमघंनरोदात स्वाहा ॥ इदमग्नये न० ॥ १ ॥ ओं इमामग्नि स्त्रायतां गार्हपत्यः प्रजामस्यै नयतु दीर्घमायुः अशून्योपस्था जीवतामस्तुमाता पौत्रमानंद मभिप्रबुध्यता मिय ७ स्वाहा ॥ इदमग्नये न० ॥ २ ॥

---

१ पद्धति यों में इसी मन्त्र सें कहीं २ वरवधू के मध्य में वस्त्र तानना लिखा है ॥ यदि हवन करने वाला दूसरा हो तो यह ५ आहुति आप वर करे मंत्र पढ़े ॥

२ ओं अग्निरैतु इत्यादि चतुर्मंत्राणां प्रजापतिः ऋषिस्त्रिष्टुप्छंदः मन्त्रोक्ता देवता आज्यहोमे विनियोगः—

ॐ स्वस्तिनो ऽग्नेदिवा पृथिव्या विश्वानि-
धेह्ययथा यजत्रा ॥ यदस्यां महिदिवि जातंप्रशस्तं
तदस्मा सुद्रविणं धेहिचित्रꣳस्वाहा॥ इदमग्नयेन०३।
ॐ सुगन्नुपंथाप्रदिशन्नएहिज्योतिष्मद्धेह्य
जरन्न आयुः ॥अपैतुमृत्युरमृतंन आगाद्वैवस्वतो
नो अभयंकृणोतुस्वाहा ॥ इदमग्नयेन० ॥४॥

पद्धतिष्वस्मिन्मंत्रेऽन्तर्पटः विधिः[1]

ॐ परंमृत्योअनुपरेहिपंथायस्तेऽन्य इतरो
देवयानात् ॥ चक्षुष्मते शृण्वते तेब्रवीमिमानः
प्रजाꣳ रीरिषो मोतवीरान्स्वाहा ॥ इदं वैव
स्वताय न०॥५॥[2] प्रणीतोदकस्पर्शः। अत्र प्राङ्
मुखौवधूवरौ–वरांजलि पुटोपरि संलग्नवध्वंजलौ
शूर्पस्थित घृताभि घारितशमीपत्र मिश्र लाजान्[3]
वधूभ्राता प्रक्षिपति वधूवरांजलौ प्रक्षिपति वरः
जुहोति।

ॐ अर्यमणंदेवंकन्याअग्निमयक्षत ॥ सनो-[4]

---

१ पद्धति यों में इसी मंत्र से वर वधूके मध्य में वस्त्र तानना लिखा है।

२ ॐ परं मृत्यो इति मंत्रस्य संकर्षण ऋषि त्रिष्टुपछंदः मृत्युदेवता आज्य होमे विनि०।

३ शूर्प (छजली) में घृता भिघारित शमीपत्र और फुलियां हों।

४—ॐ अर्यमण मित्यादि मंत्राणां दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिः अनुष्टुपछंदः अग्निर्देवता आज्यहोमे विनि०

ऽर्य्यमादेवः प्रेतो मुंचतु मापतेः स्वाहा ॥ इद मर्यम्णे न० ॥१॥ ॐ इयंनार्युपब्रूते लाजानावपं- तिका । आयुष्मानस्तु मेपतिरेधंतांज्ञातयोमम स्वाहा ॥ इदमग्नयेन० ॥२॥

ॐ इमांल्लाजानावपाम्यग्नौसमृद्धिकरणंतव ॥ ममतुभ्यंचसंवननंतदग्निरनुमन्यतामियᳬस्वाहा ॥ इदमग्नयेनमम ॥३॥

ततोवरः सांगुष्ठंवधूदक्षिणहस्तंगृहीत्वा मंत्रंपठेत्[1]

ॐ गृभ्णामितेसौभगत्वाय हस्तंमया पत्या जरदष्टिर्यथासःभगोर्यमासविता पुरंधिर्मह्यंत्वादुर्गा र्हपत्याय देवाः ॥ १ ॥ अमोहमस्मिसात्वᳬसात्व मस्यमोऽहं सामाहमस्मिऋक्त्वंद्यौरहंपृथिवीत्वम् ॥ २ ॥ तावेवविवहावहैसहरेतोदधावहैप्रजांप्रजन- यावहै पुत्रान्विंद्यावहैबहून् ॥ ३ ॥ तेसंतुजरदष्टयः संप्रियौरोचिष्णूसुमनस्यमानौ । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदःशतं शृणुयामशरदःशतम् ॥

वर पूर्व मुख होय पूर्व रखे पत्थर परे वधू को दक्षिणपाद से चढ़ावे ।

ॐ आरोहेममश्मान मश्मेवत्वᳬस्थिराभव ॥

१ फिर वर अंगुष्ठ सहित वधू का दक्षिण हाथ पकड़ कर मंत्र पढ़े ।

२—ॐ आरोहे ममित्य स्याथर्वण ऋषि रनुष्टुप्छंदः वधूदेवता अश्मा रोहणे विनियोगः ।

अभितिष्ठपृतन्यतोऽववाधस्व पृतनायतः ॥१॥

वधू पत्थर पर पांव रखे तब वर मंत्र पढ़े।

ओं सरस्वती प्रेदमवसुभगे वाजिनीवतीयां त्वा विश्वस्य भूतस्यप्रजायामस्याग्रतः ॥ यस्यां भूतꣳसमभवद्यस्यां विश्वमिदंजगत। तामद्यगा थांगास्यामि यास्त्रीणामुत्तमं यशः ॥१॥

फिर आगे वधू पीछे वर प्रणीता ब्रह्मासहित अग्नि को परिक्रमा करे।

ओं तुभ्यमग्नेपर्य्यवहन् सूर्यां वहतुनासह ॥ पुनः पतिभ्योजायांदाग्ने प्रजया सह ॥१॥

एवं सर्वं कर्म-लाजा होम सांगुष्ठ हस्त ग्रहणा श्मारोहण गाथागानाग्नि प्रदक्षिणानि पुनर पिद्वि स्तथैव कर्तव्यानि एतेन नवलाजाहुतयः सांगुष्ठहस्त ग्रहणत्रयंच संपद्यते ॥

तत तृतीय परिक्रमांते आसन विपर्ययःकार्यः ॥ ततो भ्रातृदत्तलाजाभिर्वधूर्जुहोति ॥

१—ओं तुभ्यमग्ने इति मंत्र स्याथर्वण ऋषि रनुष्टुप्छंदोअग्निर्देवता परिक्रमणे विनियोगः

२ ऐसे लाजाहोम सांगुष्ठ हस्त ग्रहण अश्मा रोहण गाथागान अग्नि प्रदक्षिणा दो वार ऐसे करे इस से ९ लाजा होम हस्तग्रहण ३ होते हैं।

३ तीसरी परिक्रमा के अनन्तर वधू के स्थान वर और वर के स्थान पर वधू बैठे।

ॐ १ भगाय स्वाहा ॥ इदं भगायन०
ततश्चतुर्थ परिक्रमणं स्वस्थानेस्थित्वा वरोजुहोति
ओं प्रजापतये स्वा० । इदं प्रजापतये न० १
ततं आ लेपनेनो त्तरकृत सप्तमण्डलेषुसप्त पदा
क्रमणं वरः कारयेत ॥

१ ॐ एकमिषे विष्णुस्त्वानयतु
धनं धान्यंचमिष्टान्नं०व्यंजनाद्यंच यद्गृहे ॥
मदधीनं च कर्तव्यं वधूराद्येपदेऽब्रवीत् १ यद्दा-
सुखं दुःखानि सर्वाणित्वयासहवि भुज्यते ॥ यत्र
त्वंतदहंत्वत्रकन्यकेकपदेऽब्रवीत ॥ २ ॥

२ ॐ द्वे ऊर्जे विष्णुस्त्वा नयतु
कुटुंवं पालयिष्यामि तेसदामंजुभापि-
णी ॥ दुःखे धीरा सुखे हृष्टा द्वितीये सा ब्रवी-
द्वरम् ॥ १

३ ॐ त्रीणिरायस्पोपायविष्णुस्त्वानयतु ॥
ऋतौकालेसुचिःस्नाताक्रीडयामित्वयासह ॥

---

१ माई से टीलाजा हुति शूर्पके कोण से वधू आहुति दे ।

२ आगे वर पीछे वधू चुपचाप चतुर्थ प्रदक्षिणा कर अपने २ आसन पर बैठे वर ब्रह्मा से कुशारभ कर के घृत मे हवन करे हुत शेष प्रोक्षणी में डाले ।

३—पटरे पर ७ हल्दी मंडल करके सप्त पदी करे ।

नाँहिपरंपतियांया तृतीयेसाऽब्रवीद्दरम् ॥ १ ॥
भर्तुर्भक्ति परा नित्यं सदैव प्रियवादिनी ॥
भविष्यामि पदेचैव तृतीये साऽब्रवीद्दरम् ॥२॥
४ ॐ चत्वारिमायोभवायविष्णुस्त्वानयतु
लालयामि च केशांतं गंधमाल्यानुलेपनैः॥
कांचनै भूषणै स्तुभ्यं तुरीयेसाऽब्रवी द्दरम्॥१॥
आर्तार्ते मुदितेहृष्टाप्रोषितेमलिनाकृशा ॥
मृतेचैव मरिष्यामि साचतुर्थे पदेऽब्रवीत ॥२॥
५ पंच पशुभ्यो विष्णुस्त्वा नयतु ॥
सखी परि वृतानित्यं गौर्याराधनतत्परा ॥
त्वयिभक्ता भविष्यामि पंचमेसाऽब्रवीद्दरम् ॥१
ॐ षट् ऋतुभ्यो विष्णुस्त्वा नयतु
६ यज्ञे होमे च दानादौ भवेयंतव वामतः॥
यत्रत्वं तत्रातिष्ठामि पदेषष्ठे ऽब्रवीद्दरम् । १ ।यद्दा
त्वयाहं संयुतानित्यं नापिवंच यितुंक्षमा ॥ उभं-
योः प्रीतिसंभूतिः पदेषष्ठेऽब्रवीद्दरम् ॥ २ ॥
७ ओं सखेसप्तपदा भवसामामनुव्रताभव

विष्णुस्त्वानयतु ॥
१ होमयज्ञादिदानेषु भवतश्चसहायिनी ॥
धर्मार्थ कामकार्येषु सप्तमे सात्रवीद्दरम् ॥ यद्दा-
सहसंखाचनी विष्णुर्ममत्वंभर्तृतां व्रज ॥ ब्रह्मणा

कृतपूर्वेण विधानेन कुलोत्तम ॥–॥ वरवाक्यम्॥
ॐ मदीयचित्ता नुगतंचचित्तं सदामदाज्ञा परिपालनंच ॥ पतिव्रताधर्म परायणात्वंकुर्याः सदा सर्वमिदं प्रयत्नात ॥ ७॥

इति सप्त पदी विधानम्

ततो वर उपविश्य पुरुष स्कंधे स्थितात्कुंभादाम्रपल्लवेन जलमानीय तेनैववधूं मूर्द्धन्य भिषिंचेत–

ॐ आपः शिवाःशिवतमाः शान्ताःशान्त तमास्ते कृण्वंतु भेषजम् १ ।

फिर और जल लेकर वधू औरअपने पर सिंचे

ॐ आपो हिष्ठामयो भुवः १ ॐ तान ऊर्जे दधातन २ ॐ महेरणायचक्षसे ३ ॐ योवःशिव तमोरसः ४ ॐ तस्यभाजयतेहनः ५ ॐ उशती रिव मातरः ६ ॐ तस्मा अरंग मामवः७ ॐ यस्यक्षयायजिन्वथ८ ॐ आपोजनयथाचनः१०

---

१ फिरवर बैठ कर पुरुषस्कंध पर स्थित कुंभ से आम्रपत्र से जललेकर वधूके मस्तक पर सिंचे

२ ॐ आपः शिवा इति मंत्रस्य प्रजापतिः ऋषिःयजुः छंदःआपोदेवता मार्जने विनि योगः

३ ॐ आपोहिष्ठे त्यादि त्र्यृचस्य सिंधुद्वीप ऋषि गायत्रीछंदः आपो देवता मार्जने विनि० । ४ पृथिवी पर सिंचे । ८ अपने उपर सिंचे ।

यदि दिन में विवाह होतो सूर्य को देख ऐसे वर कहे

सूर्यंउदीक्षस्वेति संबोधयति वधूर्मंत्रं पठित्वा सूर्यंपश्येत् ॥

ओं तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् पश्येमशरदः शतंजीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम शरदः शतंप्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतम्भूयश्च शरदः शतात् ॥

रात्रौ विवाहश्चेत् । ध्रुवंउदीक्षस्वशति संबोधयति वरः ॥ वधूर्मंत्रं पठित्वा ध्रुवंपश्येत् ।

ॐ ध्रुवमसि ध्रुवं त्वा पश्यामि ध्रुवैधि पोष्यामयिमह्यं त्वादाद्बृहस्पतिर्मया पत्या प्रजावती संजीव शरदः शतम् २

अथ वरो वधू दक्षिणांसस्योपारिहस्तंनीत्वा तस्या हृदयमालभेत ॥

---

१ कन्या मंत्र पढे वा उस के स्थान वर वा आचार्य ।

२ ओं तचक्षुः इति मंत्रस्य दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिरक्षरातीतपुर उष्णिक् छंदः सूर्यो देवता सूर्य दर्शने विनियोगः ।

३ यदि रात्रि में विवाह हो तो वर कहे ध्रुवकोदेख-वधू ध्रुव को देखे ।

४ ओं ध्रुवमसीतिमंत्रस्य परमेष्ठी ऋषिः पंक्तिः छन्दः प्रजापतिर्देवता ध्रुवदर्शने विनियोगः ।

५-वर वधू के कंधे पर हाथ लेजाकर पुनः हृदय को स्पर्श करे ।

ही लिखा गया सिर्फ जहां से हवन कर्णा रम्भ होता है उस ही प्रकार को लिखा गया है यदि चतुर्थ रात्रि में विधान से चतुर्थी कर्म कराना हो तो विद्वान् मित्र चतुर्थी कर्म पद्धति के अनुसार करायें ॥ यदि चतुर्थी कर्म नकराना हो तो आगे का कार्य पृष्ठ-८६ से पूर्णपात्र दानादि कर्म करना।

[1]अथचतुर्थीकर्म ॥ युग्मकाष्ठोपरिवरउपविशेत् ॥ भर्जित तण्डुलान् प्रणीताजलेन प्रक्षाल्य पुनरन्यपात्रेदुग्धेपाचयेत सिद्धेपाकेउत्तार्य पवित्रेण त्रिरुदिंगनम् पृथूकदकपात्रं (प्रणीता पात्रं) अग्रेरुत्तरतः संस्थाप्य स्थालीपाकं स्वपुरतो निदध्यात ॥

प्रतिज्ञा संकल्पः

[2]ॐ मद्येत्यादि० अमुक शर्मणो ममास्या भार्यायाः सोम गंधर्वाग्न्युप भुक्तदोष परिहारार्थं श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थं विवाहांगभूत कर्तव्य चतुर्थी कर्माहं करिष्ये ॥ ब्रह्म वरणं तथा होतृवर०

[3]ॐ मद्येति० अमुक शर्मणो मम विवाहां-

---

१ हलपंतालीं पर वर बैठे फुलियां प्रणीता के जल से धोकर और पात्र में दूध में पकावे फिर उतार कर पवित्रे से ३ वार ऊपर फेंके फिर प्रणीता पात्र को अग्नि के उत्तर रखे फुलियां वाला पात्र अपने आगे रखे।

२ पुनः प्रतिज्ञा संकल्प करे।

३ ब्रह्मा तथा दाता का वरण करे अथवा पूर्वकल्पित ब्रह्मा तथा होता की पूजा करे।

गभूत चतुर्थी होमकर्मणि कृताकृतावेक्षण रूप ब्रह्मकर्मकर्तुं ब्राह्मणं त्वामहं वृणे तथा चहोतृकर्म कर्तृत्वेना मुकशर्माणं ब्राह्मणं त्वामहंवृणे वृतो-स्मीति प्रतिवचनं ॥

कुशा से ब्रह्मा से अन्वारंभ करे आहुति शेष प्रोक्षणी में डारे।

ओं प्रजापतये स्वाहा ॥ इदं प्रजापतये नमम ॥ १ ॥ ओं इंद्राय स्वाहा०। इदमिंद्राय न० ॥ २ ॥ इत्याघारौ ॥ ओं अग्नये स्वाहा ॥ इदमग्नये न० ॥ ३ ॥ ओं सोमाय स्वा० ॥ इदं सोमाय न० ॥ ४ ॥ इत्या ज्यभा०॥

घृत की ५ आहुति करे और शेष प्रोक्षणी पात्र में डारे ब्रह्मा से अन्वारंभ न करे।

ओं अग्ने प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्ति-रसि ब्राह्मणस्त्वानाथकाम उपधावामियास्यै पति घ्नीतनूस्ता मस्यै नाशय स्वाहा ॥ इदमग्नये नमम ॥ १ ॥

ओं वायो प्रायश्चित्ते त्वंदेवानां प्रायश्चित्ति रसि ब्राह्मण स्त्वानाथकाम उपधावामियास्यै प्रजाघ्नी तनूस्तामस्यै नाशयस्वाहा ॥ इदं वायवे न० ॥२॥ ओं सूर्यप्रायश्चित्ते त्वंदेवानांप्राय श्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वानाथकाम उपधावामिया

स्यै पशुघ्नी तनूस्तामस्यैनाशय स्वा० ॥ इदं सूर्याय न० ॥ ३ ॥ ओं चंद्रप्रायश्चित्तेत्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मण स्त्वानाथकामउपधावामि यास्यै गृहघ्नी तनूस्तामस्यैनाशय स्वाहा ॥ इदं चंद्रमसेन० ॥ ४ ॥ ओं गंधर्व प्रायश्चित्ते त्वं देवानांप्रायश्चित्तिरसिब्राह्मणस्त्वानाथकाम उपधावामियास्यैयशोघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वा०॥ इदंगंधर्वाय न० ५।

फुलियां को तप्तकरे फुलियां से १ आहुतिकरे

ओं प्रजापतये स्वाहा ॥ इदं प्रजापतयेन० ६

फिरब्रह्मासे अन्वारब्ध हो सातवीं आहुति घृत फुलियां से करे

ओं अग्नयेस्विष्टकृतेस्वाहा॥इदमग्नये स्विष्टकृतेन०७

फिर ६ आहुति घृतसे करे हुतशेष प्रोक्षणीमें डारे ब्रह्मासे अन्वारंभकरे

ओं भूःस्वाहा ॥ इदमग्नयेन०१ ओं भुवःस्वाहा इदं वायवे न० २ ओं स्वःस्वाहा। इदं सूर्याय न० ३ओं त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्यहेडो अवया सि सीष्ठाः ॥ यजिष्ठो वन्हितमः शोशुचा नो विश्वाद्वेषाꣳसिप्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वा०॥ इदमग्नी वरुणाभ्यां न० ॥ ४ ॥

ओं सत्वन्नोअग्नेऽवमोभवोतीने दिष्ठोअस्या

उपसोऽयुष्टौ ॥ अवयक्ष्वनो वरुणꣳरराणो वीहि मृडीकꣳसुहवोनएधिस्वा० ॥ इदमग्नयेन० ॥५॥ ओं अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्चसत्यमित्वमयाअसि ॥ अयानोयज्ञं वहास्ययानो धेहिभेषजꣳ स्वा० ॥ इदमग्नयेन० ॥६॥ ओं येते शतंवरुणये सहस्रं यज्ञियाःपाशावितता महान्तः ॥ तेभिर्नो अद्यस वितोतविष्णुर्विश्वे मुंचंतुमरुतःस्वर्काः स्वा० ॥ इदं वरुणायसावित्रे विष्णवे विश्वेभ्योदेवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यःन० ॥७॥ ओं उदुत्तमंवरुणपाशमस्म दवाधमं विमध्यमꣳश्रथाय ॥ अथावयमादित्य व्रतेतवानागसो अदितयेस्याम स्वाहा ॥ इदंवरुणाय नमम ॥८॥ ओं प्रजापतये स्वा० इदं प्रजापतयेन० ॥९॥

फिर स्रुवे से उस घृत को सूंघे आचमन करके ब्रह्मा होता ऋत्विक् जनों को पूर्ण पात्रादि दक्षिणा दें।

ओं मयकृतैतद्विवाह कर्मांगभूतचतुर्थी होम कर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म प्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतं अमुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणां तुभ्यमहंसंप्रददे ॥ एवमन्येभ्योपिदद्यात् ॥

ततःस्वस्तीतिप्रतिवचनं ब्राह्मणाःवदंतु ॥

ततोब्रह्मग्रंथिविमोकः

ब्रह्मा की गांठ खोडें

ततआम्रपल्लवेन प्रणीताजलेनवरः स्वशिर सिमार्जयेत

प्रणीता के जल से आम्रपत्र से अपने सिरपर सींचे

ओं सुमित्रियान आपओषधयः सन्तु ॥

फिर प्रणीता पात्र को ईशान्य में उलटा करे मन्त्र ।

ओं दुर्मित्रिया स्तस्मै संतु योऽस्मान्द्वेष्टि यंचवयंद्विष्मः इति ॥

फिर जो पूर्व १६ कुशा आंस्तरण की थी उन्हें उठाकर घृत से मिलाकर हाथ से हवन करे ॥

ओं देवागातु-विदोगातुं-वित्वागातुमित ॥ मनसस्पत इमदेवयज्ञ ॐ स्वाहा वातेधाः स्वाहा ॥ इदं वाताय नमम ॥

वर जल लेकर आम्र के पत्र से वधू के सिर पर अभिषिं-चन करे ।

ओं याते पतिघ्नी प्रजाघ्नी, पशुघ्नी गृहघ्नी यशोघ्नी निंदितातनूर्जारघ्नी तत एनां करोमि

१—ओ सुमित्रियान इति मन्त्रस्य विश्वामित्र ऋषिः अनुष्टुपछंदः पितो देवता मार्जने विनि०

२ ओं देवा इति मनसस्पतिः ऋषिः विराट् छन्दः वायुर्देवता वहिर्होमे विनियोगः ।

सार्जयित्वं मयासह— श्रीअमुकी देवी इति।

वर फुलियां में से थोडी २ चरु वधू को खवि।

ॐ प्राणैस्तेप्राणान्संदधामि ॥ १ ॥ ॐअस्थिभिस्ते अस्थीनिसंदधामि ॥ ३ ॥ ओंत्वचाते त्वचंसंदधामि ॥ ४ ॥

वर वधू के हृदय को स्पर्श कर के मन्त्र पढ़े।

ओं यत्तेसुशीमे हृदयंदिवि चन्द्रमसिश्रियम् वेदाहं तन्मांतद्विद्यात्॥ पश्येमशरदः मशरदःशत ७ शृणुयाम शरदःशतम् ॥

यदि चतुर्थी कर्म किया हो तो आगे पृष्ट ८७ से पूर्णाहुति

ततो ब्रह्मणेपूर्णपात्रं दद्यात्

ओं मद्येत्यादि०कृतैतद्विवाह कृता कृतावेक्षणरूप ब्रह्मकर्म पात्रं सोपकरणं प्रजापतिदैवतं शर्मणे ब्राह्मणाय

ऐसे होता आचार्य ऋत्विक् जनों को दान करे

ओं स्वस्तिऐसे ब्राह्मण कहें

वर पवित्र सहित प्रणीता के जल से अपनें

ओं सुमित्रियान आपओषधयः

फिर प्रणीता पात्र को इशान में उलटा करके रखे

ओं दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तुयोऽस्मान्द्वेष्टि यंचवयं द्विष्मः ॥

फिर अग्नि के चौफेर रखी कुशा ले घृत से भिगो कर हाथ से हवन करे।

[1] ओं देवागातु विदोगातुं वित्त्वागातु मित मनस्पत इमंदेवयज्ञᳪस्वाहा वातेधाःस्वाहा॥ इदं वातायन० ॥

फिर वर उठ कर वधू से स्पर्श की हुई पूर्णाहुति करे घृत पुष्पलाल दरियाई श्री फल वा पुगीफल से पूर्णाहुति करे

ओं मूर्द्धानंदिवो अरतिंपृथिव्यावैश्वानरमृत आजातमग्निम् ॥ कविᳪसंम्राजमतिथिंजनाना मासन्नापात्रंजनयंतदेवाः स्वाहा॥ इदमग्नयेनमम

श्री फल के ऊपर घृत धारा देवे

ओं वसोः पवित्रमसि शत धारंवसोः पवित्रमसि सहस्रधारं। देवस्त्वा सवितापुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वः काम धुक्ष्वः १

---

१ ओं देवाऽति मनसस्पतिः ऋषिः विराट् छन्दः वायुर्देवता बर्हिर्होमे विनियोगः।

२ ओं मूर्द्धानमिति मन्त्रस्य भरद्वाज ऋषिः वैश्वानरो देवता त्रिष्टुप् छन्दः पूर्णाहुति होमे विनियोगः।

साजर्यित्वं मयासह– श्रीअमुकी देवी इति ।

वर फुलियां में से थोडी २ चरु वधू को ख वे ।

ॐ प्राणैस्तेप्राणा न्संदधामि ॥ १ ॥ ॐअ-स्थिभिस्ते अस्थीनिसंदधामि ॥ ३ ॥ ओंत्वचाते त्वचंसंदधामि ॥ ४ ॥

वर वधू के हृदय को स्पर्श कर के मन्त्र पढ़े ।

ओं यत्तेसुशीमे हृदयंदिवि चन्द्रमासिश्रियम् ॥ वेदाहं तन्मांतद्विद्यात॥ पश्येमशरदः शतंजीवे-मशरदःशत ँ शृणुयाम शरदःशतम् ॥

यदि चतुर्थी कर्म किया हो तो आगे पृष्ट ८७ से पूर्णाहुति करनी ।

ततो ब्रह्मणेपूर्णपात्रं दद्यात

ओं मद्येत्यादि॰कृतैतद्विवाह होमकर्मणि कृता कृतावेक्षणरूप ब्रह्मकर्म प्रतिष्ठार्थमिदं पूर्ण पात्रं सोपकरणं प्रजापति दैवतं अमुकगोत्रायामुक शर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मरूपिणेतुभ्यमहं संप्रददे॥

ऐसे होता आचार्य ऋत्विक् जनों को पूर्णपात्र वा दक्षिणा दान करे

ओं स्वस्तिऐसे ब्राह्मण कहें

वर पवित्र सहित प्रणीता के जल से अपनें सिर पर सिंचे

ओं सुमित्रियान आपओषधयः संतु ॥

फिर प्रणीता पात्र को इशान में उलटा करके रखे

ओं दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तुयोऽस्मान्द्वेष्टि यंचवयं द्विष्मः ॥

फिर अग्नि के चोफेर रखी कुशा ले घृत से भिगो कर हाथ से हवन करे।

[1] ओं देवागातु विदोगातुं वित्त्वागातु मित मनस्पत इमंदेवयज्ञꣳस्वाहा वातेधाःस्वाहा॥ इदं वातायन० ॥

फिर वर उठ कर वधू से स्पर्श की हुई पूर्णाहुति करे घृत पुष्पलाल दरियाई श्री फल वा पूगीफल से पूर्णाहुति करे

ओं मूर्द्धानंदिवो अरतिंपृथिव्यावैश्वानरमृत आजातमग्निम् ॥ कविꣳसम्राजमतिथिंजनाना मासन्नापात्रंजनयंतदेवाः स्वाहा॥ इदमग्नयेनमम

श्री फल के ऊपर घृत धारा देवे

ओं वसोः पवित्रमसि शत धारंवसोः पवित्रमसि सहस्रधारं। देवस्त्वा सवितापुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वः काम धुक्ष्वः [2]

---

१ ओं देवाइति मनसस्पतिः ऋषिः विराट् छन्दः वायुर्देवता वर्हिर्होमे विनियोगः।

२ ओं मूर्द्धानमिति मन्त्रस्य भरद्वाज ऋषिः वैश्वानरो देवता त्रिष्टुप् छन्दः पूर्णाहुति होमे विनियोगः।

बैठकर सुवकी आहुतिकी भस्म लगाकर अंगोंपर लगावे दक्षि
णहाथकी अनामिका से लगावे

अथ त्र्यायुषम् ।

दक्षिणहस्ता नामिकयाभस्म धारणम्

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः इतिललाटे[१] ॐकश्यप
स्यत्र्यायुषंइतिग्रीवायां[२] ॐयद्देवेषुत्र्यायुषंइतिदक्षि
णांसे[३] ॐ तन्नोअस्तुत्र्यायुषं इतिहृदि[४]

ऐसेवधूकाभी त्र्यायुष करना

अथ घृत संकल्पः

ओमद्येत्यादि० अमुकशर्मणः विवाह वि
धिसाफल्यायकृत (वाकारित) एतद्धवनकर्म
प्रतिष्ठार्थं अग्निदेवप्रीतये घृतंएतत्परिमितं यथा
नामगोत्रायब्राह्मणायदातु महमुत्सृजे—

यहां मुठी भरावे और भी दान करे

पुनः आचार्यायदक्षिणां दद्यात् ।

ओमद्येत्यादि अमुक शर्मणः विवाहविधि
समग्रसंपादनार्थं निमंत्रिताधिकारि वेदपाठकवि
प्रकृतातिप्रयत्न जन्यश्रमनिवृत्यर्थं मिदंविवाहांग
भूतविवाह पाठककर्तव्यता दक्षिणाद्रव्यममुक
दैवतं श्रीलक्ष्मीनारायण प्रीतये यथानामगोत्र
ब्राह्मणायदातुमहमुत्सृजे ॥

---

१ मस्तक पर २ गर्दन पर ३ सजे कंधे पर ४ हृदय पर ५ कार्ज पड़ती

यहां पर कंकण मोचनादि कर्म देशाचार के अनुसार करना

'वधूपरि पुष्पार्द्राक्षता रोपणं ब्राह्मणाः शिष्टाश्च कुर्युः

ॐ गायत्रीचविधौयद्व लक्ष्मीर्देवपतौयथा उमायथामहेशाने तथा त्वंभवभर्तरि१ सुदक्षिणा दिलीपेचराघवेचाविदर्भजा ॥ वसिष्ठेऽरुंधती यद्वत्तथा त्वंभवभर्तरि२ सुवर्चलायथा चार्केयथा चंद्रेच रोहिणी ॥ मदनेचरतिर्यद्वत्तथात्वंभव भर्तरि३ राघवेंद्रेयथासीता विनताकश्यपेयथा ॥ पावकेचयथा स्वाहा तथात्वंभव भर्तरि४ अनिरुद्धेयथैवोषादमयंती नलेयथा ॥ श्यामलीऋतुपर्णे चतथा त्वंभवभर्तरि ५पुलोमजाचदेवेंद्रे वसुदेवेच देवकी ॥ लोपामुद्रायथा गस्त्ये तथात्वंभवभर्तरि शंतनौचयथा गंगासुभद्राचयथार्जुने ॥ धृतराष्ट्रे चगांधारीतथात्वंभव भर्तरि ७ गौतमेचयथा हिल्या द्रौपदीपांडवेषुच॥यथावालिनिताराचतथा त्वंभवभर्तरि ८ मंदोदरी रावणेच रामेयद्वत्तु जानकी॥ पांडुराजेयथाकुंतीतथात्वंभवभर्तरि ९ भास्करस्य प्रभायद्वद्रोहिणी सिंधुजस्यच॥

---

१ सिर्फ वधू के ऊपर पुष्प और आर्द्र अक्षत ब्राह्मण और शिष्ट पुरुष डारें ।

कुजेतजोमयी यद्वत्तथात्वंभवभर्तरि१० अत्रेर्य
थानुसूयाच जमदग्नेश्चरेणुका ॥ श्री कृष्णेरुक्मि-
णीयद्वत्तथात्वंभव भर्तरि११ यथाचवोधिनी
सौम्येभारतीवाक्पतेस्तथा॥ भार्गवेवलिनीयद्वत्त
थात्वंभवभर्तरि१२सूर्यपुत्रेयथासौम्यातमसस्ताम
सीयथा ॥ केतोभोगवती यद्वत्तथा त्वंभवभर्तरि
१३ वासवस्ययथेंद्राणी कालीवैश्वानरस्यच ॥
धर्मिणीधर्मराजस्यतथा त्वंभवभर्तरि१४नैर्ऋतेश्च
धूतिर्यद्वद्वारुणी वरुणस्यच ॥ वायोर्वा युवती यद्व
त्तथात्वंभवभर्तरि१५ यक्षिणीधनदेयद्वत्पार्वती
शंकरेतथा सावित्री वेधसोयद्वत्तथा त्वंभवभर्तरि
१६ शंवरेतपनी यद्वद्दुःष्यंतेचशकुन्तला ॥
मेरुदेवीयथानाभौ तथात्वंभवभर्तरि १७ रेवती
वलभद्रेचसांवेचलक्ष्मणायथा ॥ रुक्मिसुताकृष्ण
पुत्रेतथात्वंभवभर्तरि १८ अनंतस्ययथा लक्ष्मी
रूर्मिलालक्ष्मणे यथा ॥ कुशेकुमुद्वतीयद्वत्तथा
त्वंभवभर्तरि १९ धनपुत्रवतीसाध्वी सततं-
भर्तृवल्लभा ॥ मनोज्ञा ज्ञानसहितातिष्ठत्वं श-
रदाशतम् २० जीवसूर्वीरसूर्भद्रे भवसौख्य
समन्विता ॥ सुभगासौख्य संपन्ना यज्ञपत्नी
पतिव्रता २१ अतिथी नागतान्साधून् वालान्

वृद्धान् गुरूंस्तथा ॥ पूजयंत्या यथान्यायं शश्वद्
गच्छंतुतेसमाः २२ पृथिव्यां यानिरत्नानि गुण-
वंति गुणान्विते ॥ तान्याप्नुहित्वं कल्याणि सुखि
नीशरदांशतम् । २३ ।

[1] ततो वरवध्वोर्द्दयोरुपरि

अत्रिकश्यपवासिष्ठ गौतमा व्यासगालव
पुलस्त्यकौशिकाः ॥ गाधिशौनकमरीचि नारदा
मंगलंदधतु तेऽभिषेकजम् २४ सूर्यसोमकुज चंद्र
नन्दनाजीव शुक्रशनि राहुकेतवः ॥ विष्णुकंज-
सुतशंकरादयो मंगलंदधतु तेऽभिषेकजम् २५
ब्रह्मावेदपतिः शिवःपशुपतिः शक्रःसुराणांपतिः
प्राणोदेहपतिः सदागतिरयं ज्योतिष्पतिश्चंद्रमाः॥
विष्णुर्यज्ञपतिर्हविर्हुतपतिः स्कंदश्चसेनापतिः सर्वे
तेपतयः कुबेरसहिताः कुर्वन्तुवोमंगलम् २६
मत्स्यःकूर्मतनुर्वराहनृहरी श्रीवामनो भार्गवो
रामोदाशरथिश्च यादवपति र्बुद्धोथकल्किर्हरिः ॥
अन्येचापिसनत्कुमार कपिलाद्याये कलाशाहरेः
सर्वेतेकालिकल्मषघ्नचरिताः कुर्वन्तुवोमंगलम् २७
आदित्योऽग्नियुतः शशीसवरुणोभौमः कुमारा-
न्वितः सौम्योविष्णुयुतोगुरुः समघवा देव्यायुतो

[1] फिर वर और वधू के ऊपर फेंके ॥

भार्गवः ॥ सब्रह्मा रविजोगगोश्वर युतोराहुस्तथा
सेश्वरो मांगल्यं सुखदुःखदाननिरताः कुर्वन्तुस-
र्वेग्रहाः २८ (अथवरो परिक्षिपेयुः ॥ आयुर्द्रोण-
सुते श्रियोदशरथे शत्रुक्षयोराघवे ऐश्वर्यनहुपे-
गतिश्च पवने मानंच दुर्योधने ॥ शौर्य्यंशान्त-
नवे वलंहलधरे सत्यंच कुन्तीसुतेविज्ञानंविदुरे
भवन्तु भवतः कीर्तिश्चनारायणे २९
आयुष्मान् भवपुत्रवान् भवश्रीमान् यशस्वी भ
वऐश्वर्योभवभूरि भूति करुणोदानैकनिष्ठोभव ॥
तेजस्वी भववैरि दर्प्पदलने व्यापारदक्षोभव श्री
शंभोर्भव पादपूजनरतः सर्वोपकारीभव ३० आ
युर्वलं विपुलमस्तु सुखित्वमस्तु भाग्यत्वमस्तु वि
शदातवकीर्तिरस्तु ॥ श्रेयोस्तुधर्म्मे मतिरस्तुरिपु
क्षयोस्तुसंतान वृद्धिरभिवांछित सिद्धिरस्तु ३१
यावदिन्द्रादयोदेवा यावच्चन्द्र दिवाकरौ ॥ यावद्ध
र्मक्रियालोके तावद्भूयात्स्थितिस्तव ३२

[2]पुनर्वधू परिक्षिपेयुः—

पद्मामाधवयोर्नगेंद्रतनया नागेंद्रकेयूरयोः
स्वाहा पावकयोरमर्त्यतटिनीकल्लोलिनीनाथयोः
पौलोमीपुरुहूतयोरथरतीपंचास्त्रयोः प्रेमवद्द पत्यो

[1] फिर वरके ऊपर [2] वधू के ऊपर।

युवयो श्चिरंभवतु तत्सौभाग्य सौख्यान्वितम् १ लक्ष्मीः सकलदेवगणा रिशत्रौ गौरीयथा पशुपतौ च शचीसुरेंद्रे ॥ गायत्र्यापिच परमेष्ठिनि संप्रसक्ता तद्वद्भवत्वमपिभर्तरि नित्यरक्ता २ यद्वल्लक्ष्मीमधु मथनयोः पत्रिणी चक्रनाम्नोर्यद्वन्नित्यं कुमुदश शिनोः पद्मिनीसूर्ययोश्च ॥ गाढप्रेम्णो गिरिश शि वयोः सुप्रसिद्धिश्चयद्वज्जायापत्यो र्भवतुभवतो स्त द्वदेव त्रिलोके ३ अविधवा भववर्षाणि शतंसाग्रंतु सुव्रता॥ तेजोयुक्ता यशोयुक्ता धर्मपत्नी पतिव्रता ४ जनयेद्वहुपुत्रांश्च मा चदुःखलभेत क्वचित् ॥भर्ता ते सोमपानित्यं भवेद्धर्मपरायणः ५ अष्टपुत्रा भव त्वंच सुभगाच पतिव्रता ॥ भर्तुश्चैवापितुर्भ्रातु हृं देयानंदिनीसदा ६ इंद्रस्यतुयथेंद्राणी लक्ष्मीः श्रीधरस्य च ॥ शंकरस्य यथागौरीतद्वत्त्वं भव भर्तरि ॥ ७ ॥

अथ पुनर्वरो परि[1]

यं पालयसि धर्मं त्वं प्रीत्या च नियमेन च ॥
सवै पुरुष शार्दूल धर्मस्त्वामभि रक्षतु ॥ १ ॥
येभ्यः प्रणामसेत्वीह देवाद्यायतनेषुच ॥
तेंचत्वामभिरक्षंतु सर्वेसहमहर्षिभिः ॥ २ ॥

---

१ फिर वर के ऊपर

पितृ शुश्रूषयानित्यं मातृ शुश्रूषया तथा ॥ सत्ये
नचमहावाहोचिरंजीवाभिरक्षितः ॥ ३ ॥
समित्कुश पवित्राणि वेदाश्चायतनानिच ॥
स्थंडिलानांच विप्राणां शैला वृक्षानदाह्रदाः ४
पतंगाः पन्नगाः सिंहास्त्वां रक्षंतु नरोत्तम ॥
स्वस्ति साध्याश्च विश्वेच मरुतश्च महर्षिभिः ५
स्वस्ति धाता विधाता च स्वस्ति पूषाभगोर्यमा ॥
लोकपालाश्च ते सर्वे वासवप्रमुखास्तथा ७
ऋतवःपट् च ते सर्वे मासाः संवत्सराः क्षपाः ॥
दिनानिच मुहुर्ताश्च स्वस्ति कुर्वंतु ते सदा ८
श्रुतिःस्मृतिश्च धर्मश्च पांतुत्वां ते च सर्वतः ॥
स्कंदश्च भगवान्देवः सोमश्च स वृहस्पतिः ९
सप्तर्षयो नारदश्च ते त्वां रक्षंतु सर्वतः ॥ ते चापि
सर्वतः सिद्धादिशश्च सादिगीश्वराः ९ शैलाः सर्वे
समुद्राश्च राजा वरुण एव च । द्यौरंतरिक्षं पृथिवी
वायुश्च स चराचरः १० नक्षत्राणि च सर्वाणि
ग्रहाश्च सहदेवतः ॥ अहो रात्रे तथा संध्ये पांतु
त्वां च सुदक्षिणाः ११ ऋतवश्चापि पट्चान्ये
मासाः संवत्सरास्तथा ॥ काष्ठास्तथा कलास्तद्व-
त्तावशमंदिशन्तुते १२ प्लवंगावृश्चिका दंशामश-
काश्चैव सर्वतः ॥ सरीसृपाश्च कीटाश्च मा

भूवन्दुः खदास्तव १३ महाद्विपाश्च सिंहाश्च व्याघ्रा ऋक्षाश्च दंष्ट्रिणः ॥ माहिषाः शृंगिणो रौद्रानतेद्रुह्यन्तु सर्वतः १४ आगमास्ते शिवाः सन्तु सिध्यंतु च पराक्रमाः ॥ स्वस्ति ते स्वंतरिक्षेभ्यः पार्थिवेभ्यः पुनः पुनः १५ सर्वेभ्यश्चैव देवेभ्योयेच तेपरिपंथिनः ॥ शुक्रः सोमश्चसूर्यश्च धनदोथयमस्तथा १६ अग्निर्वायुस्तथा धूमो-मंत्राश्चर्षिमुखाच्च्युताः ॥ सर्वलोकप्रभुर्ब्रह्मा भूतकर्तृतथर्षयः १७ यन्मंगलं सहस्राक्षे सर्वदेवनमस्कृते ॥ वृत्रनाशे समभवत्तत्ते भवतु-मंगलम् १८ यन्मंगलं सुपर्णस्य विनताकल्प यत्पुरा ॥ अमृतंप्रार्थयानस्य तत्तेभवतुमंगलम् १९ अमृतोत्पादने दैत्यान्घ्नतो वज्रधरस्ययत् ॥ अदितिःमंगलं प्रादात्तत्तेभवतु मंगलम् ॥ २० ॥ त्रिविक्रमान्प्रक्रमतो विष्णोरतुलतेजसः ॥ यदासीन्मंगलंनित्यं तत्तेभ०मंग०२१ सरितःसागराद्वीपा वेदाःलोकादिशाश्चताः ॥ मंगलानि महाबाहो दिशंतुशुभमंगलम् २२ करोतुस्वस्तिते ब्रह्माब्राह्मणाश्चद्विजातयः ॥ सरीसृपाश्चये श्रेष्ठा स्तेभ्यस्ते स्वस्तिसर्वदा २३ ययातिर्नहुषश्चैव धुंधुमारोभगीरथः ॥ तुभ्यंराजर्षयः सर्वेस्वस्ति कुर्वं-

तुतेसदा २ स्वस्तितेऽस्त्वेकपादेभ्योवहुपादेभ्य-
एवचस्वस्त्यस्त्व पादकेभ्यश्च नित्यंतवमहारणे २५
स्वाहास्वधा शचीचैव स्वस्ति कुर्वंतुतेसदा ॥
लक्ष्मीररुंधतीचैव कुरुतांस्वस्तितेऽनघ २६
असितोदेवलश्चैव विश्वामित्रस्तथांगिराः वसिष्ठः
कश्यपश्चैव स्वस्ति कुर्वन्तुतेसदा २७ धाताविधाता
लोकेशोदिशश्च सदिगीश्वराः ॥ स्वस्तितुभ्यंप्रयच्छंतु
कार्तिकेयश्चपणमुखः २८ विवस्वान्भगवान्स्वस्तिकरोतु
तवसर्वशः ॥ दिग्गजाश्चैव चत्वारःक्षितिश्च गगनंग्रहाः २९
अधस्ताद्धरणीं योऽसौसदाधारयतेनृपः ॥ शेपश्च पन्नगश्रेष्ठः
स्वस्तितुभ्यं प्रयच्छतु ३० इति श्रीवधूवरोपरि
आर्द्रे पुष्पाक्षतारोपणम् ॥ समाप्तम् ॥

॥ अथाभिषेकः ॥

अथ कलशाज्जल मानीय पंचपल्लवैः कुशैर्वा वरं वधूंच ब्राह्मणा अभिषिंचेयुः[१]

सुरास्त्वामभिषिंचन्तु ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥
वासुदेवो जगन्नाथस्तथा संकर्षणोविभुः १ प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्चभवन्तु
विजयायते ॥ आखंडलोग्निर्भगवान् यमोवैनिर्ऋतिस्तथा २ वरुणः पवनश्चैव
धाताध्यक्ष स्तथाशिवः ॥ ब्रह्मणा सहितः शेषो

[१] कलश से जल लेकर ५ पत्तों वा कुशों से वर वधू को ब्राह्मण सींचे ।

दिक्पालाः पांतु तेसदा ३ कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधापु
ष्टिःश्रद्धाक्रियामतिः ॥ बुद्धिर्लज्जावपुःशांतिस्तुष्टि
र्हष्टिश्चमातरः ४ एतास्त्वामभिषिंचंतुदेवपत्न्यः
समागताः ॥ आदित्यश्चंद्रमा भौमोबुधजीवसि
तार्कजाः ५ ग्रहास्त्वामभिषिंचंतुराहुः केतुश्चत
र्पिताः ॥ देवदानव गंधर्वायक्ष राक्षसपन्नगाः ६
ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एवच ॥ देवपत्न्यो
द्रुमानागा दैत्याश्चाप्सरसांगणाः ७ अस्त्राणि
चैवशस्त्राणि शतशो वाहनानिच ॥ औषधानि
चरत्नानि कालस्यावयवाश्चये ८ सरितःसागराः
शैलास्तीर्थाणिजलदानदाः ॥ एतेत्वा मभिषिं
चंतु धर्मकामार्थ सिद्धये॥ ९ सुरास्त्वामभिषिंचंतु
पंचसिद्धाः पुरातनाः ॥ ब्रह्मा विष्णुश्च शंभुश्च-
साध्याश्चसमरुद्गणाः १० आदित्यावसवोरुद्रा
अश्विनौ चभिषग्वरौ ॥ अदितिर्देवमाताचस्वाहा
सिद्धिःसरस्वती ११ कीर्तिर्लक्ष्मीर्द्युतिःश्रीश्चसिनी
वाली कुहूस्तथा॥ दितिश्चसुरसाचैवविनताकद्रुरेव
च१२ देवपत्न्यश्च याः प्रोक्ता देवमातरएव च ॥
सर्वा स्त्वामभिषिंचन्तु शुभाश्चाप्सरसांगणाः १३
नक्षत्राणि मुहूर्ताश्च पक्षाहोरात्र संचयः ॥
संवत्सरो दिनेशश्च कलाः काष्ठाः क्षणालवाः १४

सर्वेत्वामभिषिंचंतु कालस्यावयवाःशुभः ॥एते चान्येचमुनयोवेदव्रतपरायणाः १५ सशिष्यास्ते भिषिंचन्तुसदाराश्चतपोधनाः ॥ वैमानिकाः सुरगणाःसरित सागरैःसह १६ मुनयश्चमहा भागानागाः किंपुरुपाः खगाः ॥ वैखानसामहा भागा द्विजावैहायनाश्चये १७ सप्तर्षयः सदारा श्चध्रुव स्थानानियानिच ॥ मरीचिरत्रिः पुलहः पुलस्त्यः क्रतुरंगिराः १८ भृगुःसनत्कुमारश्चसन कोथसनंदनः। सनातनश्चदक्षश्च जैगीपव्योभगं दनः १९ एकतश्चद्वितश्चैवत्रितोजावालिकश्यपौ दुर्वासा दुर्विनीतश्चकण्वः कात्यायनस्तथा २० मार्कंडेयोदीर्घतपाः शुनाशेफोविद्रथः ॥ उौर्वः सांवर्तकश्चैवच्यवनश्चपराशरः २१ द्वैपायनोय वक्रीतोदेवराजः सहानुजः ॥ पर्वतास्तरवोवल्यः पुण्यान्यायतनानिच २२ प्रजापतिर्दितिश्चैव गावो विश्वस्यमातरः ॥ वाहनानिचदिव्यानिसर्वे लोकाश्चराचराः २३ अग्नयःपितरस्ताराजीमूताः खंदिशोजलम्॥एतेचान्येचवहवोवेदव्रतपरायणाः २४ सेंद्रादेवगणाः सर्वेपुण्यश्रवणकीर्तनाः ॥ तोये स्त्वामभिपिंचंतु दुःखात्यन्तनिवर्हणे॥ यथाभिपि क्तो मघवास्त्वेतमुदित मानसः २५

इति वारुण कलशा भिषेकः

अथ पुराय पाठरूपाश्रीसीतारामीलि०

ॐ पुरुपाणांतु पुरुषो यथापुरुप पुरुपोत्तमः॥ यथा सत्यवादीहरिश्चंद्र ॥ धनुर्धारीतो अर्जुन । यथावाचा पतियुधिष्टिर सीता पति श्रीराम ॥ विद्या पति विनायक ॥ मतिमान् वासुदेव॥ भूत पति महादेव ॥ महावली भीमसेन ॥ अहंकारी अहिरावण ॥ यथास्वरपति नारद । अचलोंपति ध्रुव अटल ॥ यथातपतां पतिसूर्य॥ यथा कपि ल आदिऋपीश्वर ॥ एवंगुरोर्ममानुज्ञा ॥ देवतो विश्वनाथ । श्रीपार्वतीपतिव्रजनाथ ॥ क्षेत्रतो कुरुक्षेत्र ॥ महाक्षेत्र वनारसी ॥ वेदमंत्रीतोब्रह्मा ब्रह्मचारीतोशुक्र ॥ गीतांपति नारद ॥ यक्षपति कुबेर ॥ देखवोंश्रीकृष्णपेर ॥ स्वर्गपतिइंद्र ॥ संतोंपतिगोविन्द ॥ नगरीतोअमरावती॥ हस्तीतो ऐरावती ॥ उत्पत्तितो प्रजापतिकी ॥ पुरुपतो स्वस्तरित॥ वृद्धतोकल्पवृक्ष॥ गोकुलतो गौअन में ॥ विधनालिख भौअनमें ॥ वृंदावनकृष्णारूप महाअद्भुतस्वरूप ॥ श्रीमथुरामें भक्तिधर्म ॥ काशीमेंक्रियाकर्म ॥ नाथतोश्रीगोवर्धन धर॥ राखे जन अपनोंकर ॥ श्रीवल्लभकुल पुष्टिमार्ग । पावे जनवडोभाग ॥ भक्तिश्रीभगवंतकी ॥ सुन्दरगति

मुक्ताकी ॥ सारहे श्रीगीतामें ॥ मंगलरसरीतामें ॥ मंत्र श्रीगायत्रीका ॥ व्रततो एकादशीका ॥ शीतलतातो चन्द्रमाकी ॥ वक्रतो मंगलका ॥ बुद्धितो श्रीशारदाकी ॥ जपतप शुचिपारदाकी ॥ लेखनी तो गणेशकी ॥ पुरोहितीतो शुक्रकी ॥ प्रतिपदा अन्नकूटकी ॥ द्वितीया यमकी ॥ तृतीया अक्षयकी ॥ चतुर्थी गणेशकी ॥ पंचमीतो वसंतकी ॥ षष्ठीतो चंदनकी ॥ सप्तमी अंचलाकी । अष्टमी जन्माष्टमी ॥ नवमी श्रीरामनवमी ॥ दशमी विजयदशमी ॥ एकादशी हरिप्रबोधिनी ॥ द्वादशीतो वामनकी ॥ त्रयोदशी माघेपुण्ये ॥ चतुर्दशीतो श्रीनृसिंहकी ॥ पूर्णिमा कार्तिककी ॥ अमावस्या दीपमालाकी ॥ राशितो द्वादश । नक्षत्रतो अठावीस ॥ कर्णतो एकादश ॥ वेदचार । युगचार ॥ पुराण अष्टादश भारतो गौका । श्री कपिलाक्षी ॥ स्नान कर्म सूर्यसाक्षी ॥ सत्यतो सत्ययुग ॥ कथाकीर्तनतो कलियुग ॥ स्नान श्रीगंगाजीका ॥ शीतल जल श्रीयमुनाजीका ॥ जोलीलारस कृष्णकी ॥ विश्वपाल श्रीविष्णुकी ॥ आर्यातो मार्कंडेयकी ॥ रचनातो ब्रह्माकी ॥ क्रोधियोंपति परशुराम ॥ मर्यादियोंपति श्रीराम ॥ लालीतो पानकी ॥

सुघडतो सुजानकी ॥ गावन मधुरतानकी ॥ सप्त स्वरसंधानकी ॥ देशतो काश्मीर ॥ पहिनतो नस वीर ॥ पीवनको मधुरक्षीर ॥ बोलन हरिकीर्तिका ॥ दानतो करनका । ज्ञानतो धरनका ॥ 'कर्मतो तरनका ॥ राखवों सरनका ॥ पातिव्रततो घरनका ॥ भूषणतो सुवर्णका ॥ सत्यतो श्रीसीताका ॥ पाठतो श्रीगीताका ॥ नारायण जैसे चरित्र ॥ सुदामा जैसे मित्र ॥ भगीरथ जैसे पुत्र ॥ यज्ञोपवीत जैसे सुत्र ॥ गुणवंती गुणवंतम् ॥ हनुमंती हनुमन्तम् ॥ स्थानतोशारदाका ॥ ज्ञानतोपारदाका ॥ निर्मजलगंगाका ॥ आनंदतोतरंगका ॥ यज्ञतोश्रीलालजीका ॥ देखवोंश्रीगोपालजीका ॥ नियमराजेबलिका ॥ द्यूतराजेनलका ॥ पुष्पतोकेतकीका ॥ फलतोअमृतफल ॥ नर्मदाकासुंदरजल ॥ सत्ययुगमध्येगौरीसत्यवती ॥ त्रेतायुगमध्येसीतासत्यवती ॥ द्वापरयुगमध्येद्रौपदीसत्यवती ॥ कलियुगमध्येकन्यासत्यवती ॥ पुरुषोंपतिवाचा ॥ अर्जुन पतिबाण ॥ देवतोंपतिइंद्र ॥ तारापति चंद्रमाः ॥ वनस्पतिपतिपिप्पल ॥ पत्रोंपतितुलसी ॥ देवोंपति ध्रुवअटल ॥ नदियांपतिसमुद्रभलो ॥ सत्ययुगमध्येधर्मअचल ॥ कन्यापतिवरअटल इच्छावंती,

दयावन्ती ॥ पुत्रवन्ती ॥ इष्टवन्ती ॥ दुग्धवन्ती ॥ धर्मवन्ती ॥ शर्मवन्ती ॥ ज्ञानवन्ती ॥ ध्यानवंती । दानवंती । सुखवन्ती । आनन्दवन्ती । सुहागवन्ती । भागवन्ती ॥ पतिसहितहरिभक्तिवन्ती । परमधर्मकृष्णचंद्र । सदारहोक्षीरखंड ॥ ब्रह्मपाठवेदशुद्ध ॥ राजपाठप्रजाशुद्ध । पतिव्रता सुकन्याशुद्ध ॥ वरुणवंसंतरसाक्षी ॥ श्रीश्रीश्री सिद्धगणपतिप्रसादा चतुरशीतिदोपाहन्यंते । पठंते । सुणंते । श्रीगंगाजी । गोदावरी । सिंधु । सरस्वती । यमुनाजीका । स्नानकरंते । सर्वतीर्थ फललभंते ॥ इति श्रीमद्गोस्वामिवंशावतंसश्री लालजीकृतासीतारामी शुभा

[1]अथास्या अनुवाद रूपासंस्कृते श्रीसीतारामी लिख्यते ॥

[2]द्रव्यहस्तौ वधूवरौ शृणुयाताम्

पुरुषाणां तुपुरुषो यथाहि पुरुषोत्तमः ॥ सत्यवादी हरिश्चन्द्रो धनुर्धारी तथार्जुनः १ सीतापतिर्हि श्रीरामः पतिर्वाचां युधिष्ठिरः ॥ विनायकोहि विद्यानां पतिरेव स्मृतोबुधैः २ मतिमान्वासुदेवश्च भूतपतिर्महेश्वरः॥ महाबलीभीमसेनोऽहंकारीत्वहिरावणः ३ अचलानां ध्रुवोनाथऋषी-

१ संस्कृत सीतारामी । २ वधू वर दक्षिणा हाथ में लेकर सुनें ।

णांनारदःपतिः॥तपतांतुपतिःसूर्यःकपिलाहिपतिर्गवाम् ४ ऋषीन्गुरुन्नमस्कृत्यविश्वनाथं प्रणम्यच ॥ तेषामाज्ञांसमादायमहादेवोमहेश्वरः५ देवनाथो विश्वनाथः पार्वती पतिरुच्यते ॥ क्षेत्राणांतुकुरुक्षेत्रंमहाक्षेत्रं वाराणसी ६ तीर्थराजःप्रयागस्तु ब्रह्माहिवेदमंत्रवित् ॥ब्रह्मचारीभृगोःपुत्रःस्वभार्यारतगुरुषः ७पतिर्मेरुगिरीणांहिगायकेशोहिनारदः॥ यक्षपतिः कुवेरोहि वाद्यानां भेरिकःपतिः ८ इंद्रः स्वर्गं पतिः प्रोक्तो गोविन्दश्च सता पतिः ॥ दर्शनीयेषुसर्वेषु कृष्णपादः प्रकीर्तितः ९ ऐरावतो गजेन्द्राणां पुरीणाममरावती ॥ प्रजापतिः सृष्टि कर्ता श्रीकृष्णो विश्वपालकः १० वृक्षाणां कल्पवृक्षस्तुदेवलोकांतरिक्षगः ॥ गोकुले तुशुभागावः विधि लेखो ललाटके ११ वृन्दावनं कृष्ण रूपं महाद्भुत स्वरूपकम् ॥ मथुरायां भक्तिधर्मः काश्यांकर्मक्रियामता १२ श्री गोवर्धनधरोनाथः स्वकीय जनपालकः ॥ श्रीवल्लभकुल जातानां दासत्वे नैवसर्वदा १४ पुष्टिमार्गविधानेनसेव्यते स्नेहतोहरिः ॥ मर्यादयाप्रवाहेण तद्भाग्यंवर्ण्यतेकिमु १५ भक्तिर्भागवतीश्रेष्ठागीतायाःपाठमुत्तमम् ॥ वृंदावने

गोकुलेचमथुरायां तथैवच १६ कृष्णलीलागायकानांसुखंमुक्त्याधिकंस्मृतम् ॥ काश्यांहिप्राप्यतेमुक्तिस्तारकस्योपदेशतः सुंदरताहिमुक्तानामीदृशी नैवदृश्यते ॥ गायत्री सर्वमंत्राणां वेदानां पठनं तथा १७ द्विजानांमुक्तिप्राप्त्यर्थं सर्वशास्त्रेषु भण्यते ॥ पूर्वाचरितरीतीषु दृश्यतेमंगलोरसः १८ एकादशी व्रतं पुण्यं महाभाग्यैःप्रधार्य्यते ॥ इंदोः शीतलताप्रोक्ता वक्रोभौमस्यकथ्यते १९ शारदा सर्वजीवानांश्रेष्ठाबुद्धि प्रदामता ॥ जपनस्य फलं श्रेष्ठं तपसांशुचिकर्मणाम् २० परलोकेइहैवापि मुक्तिभुक्ति प्रदंस्मृतम् ॥ शुक्रः पुरोहित श्रेष्ठोलेखकानां गणाधिपः २१ प्रतिपदन्न कूटस्य द्वितीयातुयमस्यवै ॥ तृतीयाचाक्षया श्रेष्ठा-चतुर्थीगणपस्यच २२ वसंतपंचमीश्रेष्ठा षष्ठीतु-चंदनस्यच ॥ अचला सप्तमीश्रेष्ठा श्रीकृष्णस्य जन्माष्टमी २३ नवमी रामचंद्रस्य दशमीविजया-स्मृता ॥ एकादशी तिथिः श्रेष्ठा कार्तिके हरि बोधिनी २४ द्वादशी वामनस्यैव माघे पुण्ये त्रयोदशी॥ चतुर्दशी नृसिंहस्य पूर्णिमा कार्तिकी वरा २५ दीपावलीह्यमावस्या संप्रोक्ता तिथि रुत्तमा ॥ द्वादश संख्या राशीनां तेतुमेष वृपा-

दयः २६ अश्विन्यादि नक्षत्राणामष्टाविंशतिसं
ख्यकम् ॥ कर्णैकादश संख्याका ववबालवकादयः
२७ सत्यंत्रेता द्वापरंच कलिश्चेति चतुर्युगम् ॥
ऋग्यजुः सामाथर्वाख्या वेदाश्चत्वारउद्धृताः
२८ अष्टादश पुराणानि ब्राह्मादीनिस्मृतानिवै।
भारतादीतिहासानि तथैवोपनिषच्छतम् २९
व्याकरणा दीनिशास्त्राणि वेदागानि तथैवच ॥
साक्षी स्मृतोबुधैः सूर्यःस्नानादि पुण्यकर्मणाम्
३० सत्यं सत्ययुगे प्रोक्तं त्रेतायां तप उच्यते
॥ द्वापरे यज्ञसेवादि कलौ मुक्ति प्रसाधनम् ३१
कथाकीर्तनदानादि भगवन्नामकीर्तनम् ॥ पंथा
गंगादितीर्थानां शीतलंयमुनाजलम् ३२ श्रीकृष्ण
स्यरसालीला कलौमुक्तिप्रदायिनी ॥ विष्णुदेवो
विश्वपालःकर्तानारायणः स्मृतः ३३ मार्कंडेयो
महाभागो महदायुर्युतोमुनिः ॥ रचनाकारको
ब्रह्मासंहर्ताश्रीशिवः स्मृतः ३४ मर्यादाधिपती
रामोजामदग्न्योहिकोपनः॥ पानेचारक्तताप्रोक्ता
सुज्ञस्यसुज्ञतास्मृता ३५सप्तस्वरेगासंबद्धमधुरताल
गायनम्॥ देशःकाश्मीरकःश्रेष्ठः शारदास्थान मु
त्तमम् ३६धारणेवस्त्रभूपादि वचनेहरिकीर्तनम्॥
क्षीरंमधुरसंयुक्तंपाने स्वादप्रदंपरम् ३७ दानिनां

वतार श्रीगोस्वामि श्रीलालजीककृता सीतारामौ विवाहे समये श्रावणीयाशुभा

इस देश (जिला मुजफ्फरगड । डेरागाजीखां डेरास्माईलखां मियां वाली) में सर्व ग्रह और अग्निकी ४ परिक्रमा वर वधू करते हैं सो ३ परिक्रमां के अन्त में आसन बदल कर वरवधू बैठतेहैं और चतुर्थ परिक्रमां के अन्त में आपने २ आसन पर बैठते हैं दोनों समय में ब्राह्मण वर वधू के सिर को आपस में मिलावे मन्त्र पढ़े—ओं मंगलं भगवान् विष्णु मंगलं गरुड़-ध्वजः॥ मंगलं पुण्डरी काक्षो मंगलाय तनोहरिः—इसके अनंतर वर वधू अन्दिर जावें अपनी कुल के अनुसार रीति करावें—इस परिक्रमा के स य में इस देश में स्त्रियें वा ब्राह्मण लांवां मंगल गाते हैं सो मंगल गाना लावां लिखा गया है विद्वान् लोग इस पर उपहास न करेंगे ।

अथलांवां मंगल

रंगरस तां लांवां पहिली के मंगल गाईया। गोपीतें गोकुल कान्हवाला कृष्ण व्याहवण आईया॥ सिरसेहरा सिर मुकट सोहवे छन्दकांचन चोलणा॥ रावीतां पूजोलांवां पहिली मुख से अमृत बोलणा॥ १॥ रंगरसतां लांवां दूझड़ी कि श्याम पियारिआ॥ भैयाते रुक्मिण राम धंनुप सिंहारिआ। संहार धनुप श्रीराम चढ़िया नाल साठसहेलियां॥ श्रीकृष्णनूं तुसी अंन्दिर ल्यावो ल्यावो राजगहेलियां॥ श्रीकृष्ण देहथ गांना सोहवे चूंदामिनां चोलणा॥ रावीतां पूजोलावां दूझी मुख से अमृत बोलणा॥ २॥ रंगरस तांलावां त्रीझड़ी के

लगगणाईया ॥ ब्रह्मातें इन्द्रलग्नगणियां वेदपढ़ने आईया ॥
जञ आईकरो विछाई अंगणे रसलीजिये ॥ रावीतां
पूजो लांवांत्रीभ्भी मुख से अमृत बोलिये ॥ ३ ॥
रंग रस तालावां चौथड़ी के खारा अड्डिया ॥ अंचले से
पकिड़ वहावो वहावे वीरावड्डिया ॥ अंचले तें पकिड वहावों
तेरा धर्म्म बेला आईया ॥ गगा दे कोल्हे बनारसी कुरुक्षेत्र
घांवण आईया ॥ कुरुक्षेत्र नाहँत्यां बड़ा पुण्य है कुछ दान
बेटी मंगियां ॥ छत्री तां घड़ियां काज होया पर नावे बावल
चंगियां ॥ दे वे बावल हर बरदानं तेरा धर्म बेला आईया ॥
रावी तां पूजो लांवां चौथी रुक्मिणी वर पाईया ॥ ४ ॥
रंग रस तालांवां पंजवी के राधा रुक्मिणी ॥ ठुमिक ठुमिक
पेर धरती हे के चाल चलंती हे ॥ गलहार कृष्ण अवतार
सोंहे मुख से नाम जपंती हे ॥ रावी तां पूजो लांवां पंजवीं
कुछ हाथ से दान करंती हे ॥ ५ ॥ रंग रस तालांवां छीहवीं
के हरिवर पाईया ॥ सहलं वेदी रूप वाला सेज पर सँण
आइया ॥ तखत बैठी मान रलिया अंग अंग रलाईया ॥
रावीतां पूजो लांवां छीहवीं रुक्मिणी वर पाईया ॥ ६ ॥
रंग रस तालांवां सतवीं के लांवां पूरियां ॥ छनकने वर लटक
बोल्या विधना नें बधियां चूड़ियां ॥ विधना नें बधियां
चूड़ियां कुछ साचियां कुछ कूड़ियां ॥ रावीं तां पूजो लांवां
सतवीं लांवां श्रीकृष्ण दी पूरियां ॥ ७ ॥

इति लांवां

अथ ग्रहाणा विसर्जनम्

ग्रहागावो नरेन्द्राश्च ब्राह्मणाश्च विशेषतः। पूजिताः प्रतिपूज्यंते सावधानाभवन्तुते १ देवता देवलोकेच ब्रह्माद्या ऋषयस्तथा ॥ गणेशो गणपुर्य्यां वै कलशो गच्छतु सागरे २ सर्पो गच्छतु पाताले योगिन्यः सर्प पंठिके। मातरोमातृपुर्यां-वै स्वस्थाने सकला ग्रहाः३ गच्छत्वं भगवन्नग्ने स्व-स्थानं कुंडमध्यतः॥हव्यमादाय देवेभ्यःशीघ्रं देहि प्रसीदमे ४ गच्छगच्छ सुरश्रेष्ठस्वस्थाने परमेश्वर। यत्रब्रह्मादयो देवा स्तत्रगच्छहुताशन ५ आगता-स्तु यथा न्यायं पूजितास्तु यथाविधि ॥ कृत्वामयि कृपां देवा यत्रासं स्तत्रगच्छत६ यजमान हितार्थाय पुनरागमनायच ॥ शत्रूणां बुद्धिनाशाय मित्राणा मुदयायच ७ यथाशस्त्र प्रहाराणां कवचं वारणं भवेत ॥ तद्देवाभि घातानां सिद्धिर्भवति वारणं ८ अग्निमीळे गणेशाद्या न्देवानुत्थापयेत्ततः ॥ विवाहेच तथा नाम्निक्षौरेच व्रतबंधने ९ गृहादीनां प्रतिष्ठासुनवशांतिरुदाहृता ॥ वापीकूपतडा-गादौ सर्व स्थानेषुकारयेत १० ॐ प्रमादात्कु-र्वता कर्मप्रच्यवेता ध्वरेषुयत॥स्मरणादेव तद्वि-ष्णोः संपूर्णस्या दितिश्रुतः ११ इति ग्रहविस०

अथ पारिवर्हे (दाज) संकल्पः

ॐ तत्सद्ब्रह्मेति० अस्याः कन्यायाः उद्वाहकर्मणि श्रुतिस्मृति पुराणेतिहासे त्यादिप्रतिपादित फलावाप्तिकामो ऽवगता नवगत सकलदुरितोपदुरितक्षय कामश्च नाना पटतंतु संख्याकानेककल्पा वच्छिन्न वैकुंठलोक प्राप्तिकामः श्री लक्ष्मी नारायण प्रीति जनक वह्वश्वमेध यज्ञ फलसूचक स्वपुत्रीविवाहांगभूतां सतूलोपधानादि संस्कृतां सपीठखट्वां उत्तानां गिरोदैवतांच वृहस्पति दैवताकासितरक्त पीताद्यनेकविध सुवर्णरजत तंतुभिः संसूत्रितां विश्वकर्म दैवताकैः यथापरिमितैः रीतिलोहकांस्यमयपात्रैः सपात्रितंच चन्द्राग्नि समुद्र दैवताकानेक विधि विरचित रत्नरजतसुवर्णभूपण भूपितं प्रजापतिदैवताक विविधपक्वान्नाद्याधि करणकं सूर्य चंद्रदेवताकयथापरिमितताम्ररजतमये द्रव्यैःसदक्षिकममुकगोत्रायै अमुकनाम्न्यै कन्यायै इमं परिवर्हंतुभ्यमहं संप्रददे॥ स्वस्तीति प्रतिवचनम्॥ ॥ दक्षिणासंकल्पः ॥ अद्यकृतैतत्पारिवर्हदान प्रतिष्ठार्थमिदं दक्षिणाद्रव्यममुकदेवतं अमुकगोत्रायै अमुकनाम्न्यैकन्यायै दातुमहमुत्सृजे ॥

अथ कन्यागमन विधिः

कन्या क्षिप्तधान्यानिगृहगृह्णीयात्सवाधवः॥ गमनसमयेकन्याद्वारेस्थित्वाधान्यानिक्षिपेत्॥

अथ धान्यक्षेपे मंत्राः ॥

विश्वामित्रोजमदग्नि वसिष्ठोगौतमस्तथा ॥ कश्य पोत्रिर्भरद्वाजो विष्णुब्रह्मादयश्चये ॥ तेसर्वेत्वांप्रय च्छंतु धनधान्यादिसंपदम् ॥ १ ॥ सनकःसनंदन श्चैवधेनवोमातरस्तथा ॥ देवाःसर्वेप्रयच्छंतु धनंधा न्यंसदागृहे ॥ २ ॥ चिरंजीवतुमेमाता चिरंजीवतु मेपिता ॥ चिरंजीवतुमेभ्राता चिरंजीवतुबांधवाः ॥ ३ ॥ दिवारक्षतुसूर्योयं रात्रौरक्षतुचंद्रमाः ॥ वंशंरक्षतुभौमश्च धनधान्या दि संपदम् ४ पितृ- वंशंबुधोरक्षेन्मातृवंशं गुरुस्तथा ॥ बंधु वर्ग- चरक्षेत्तुभृगुर्दैत्य पुरोहितः २ अश्विन्यादीनि- ऋक्षाणि योगाविष्कुंभकादयः ॥ तिथयःप्रतिपदा- द्याःशुभंयच्छंतुतेसदा ६ ॐतेजोवृद्धिर्यशोवृद्धि र्वंशवृद्धिस्तथैवच ॥ लोकेकीर्तिर्भवेत्तातधनंधान्यं सदागृहे ७ गंगाद्याः सरितः सर्वाः शोणाद्याश्च नदास्तथा ॥ कृतंपापंप्रशाम्यतु प्रयच्छंतु सुखं चते ८ ततो यजमानः श्रीसूर्य्यायार्घ्यं दद्यात् ॥

इति कन्या गमन विधिः ॥

[1] द्वितीय विवाहे पूर्वं कर्तव्य गायत्री तथा चामतंडुल वस्त्र सुवर्ण दान संकल्पः

उं अद्येत्यादि०श्री लक्ष्मी नारायण प्रीतये तत्प्रीतिद्वाराऽमुक शर्मणो मम जन्म कालीन ग्रहसंसूचित मृतभार्यात्व दोषनिवृत्त्र्येप्राजापत्य-व्रतैंदवव्रतस्थानीयविद्वज्जन संस्थापितप्रतिनिधि स्थानापन्नगायत्री जपनममुक संख्या परिमितं अमुक गोत्रब्राह्मणद्वाराऽहं कारयिष्ये॥ तथा च ॥

वस्त्र सुवर्णान्विताम तंडुलानि यथा नाम गोत्र ब्रह्माणायाहं संप्रददे ॥ कृतैतत कर्मणा श्री लक्ष्मी नारायण प्रीतिरस्तु ॥

द्वितीय विवाह में उत्तर कर्म

विवाह से पीछे वर नेत्रों पर वस्त्र बांध कही से लावें के स्थान में वा किसी अन्य स्थान में वा नदी तीर में जानु प्रमाण गर्त करके उनमें चढ़े चावलों सहित कुन्नी रखे ऊपर १०८ तिल तेलसे जागते दीपक संयुक्त कुनाली उलटी करके

गर्त को मिट्टी से भरे फिर मिटी को पैर से दवाता हुआ पहिली स्त्री को याद करे मंत्र पढ़े फिर नेत्रों पर बंधे हुए वस्त्र को छोड़ दे ।

अष्टोत्तर शतैर्जाग्र द्दीपकैरन्विता मिमाम् ॥

---

[1] द्वितीय विवाह से पूर्व गायत्री और वस्त्र सुवर्ण कचे चावलों के दान का संकल्प करे ।

कुनालिकांगृहीत्वातु देहिमे चिरजीविनीम्। १।
सुभाग्यां पुत्रजननीं कुलदेवी प्रसादतः॥ १॥

सुवर्ण वा चांदी की पहाजडी की मूर्ति को दूध से स्नान कराकर गंधादि से पूज कर चीर चावल १ विष्णु के निमित्त ४ पहाजडी निमित्त दान करे।

वधूःसपत्नीमूर्तिं ओंसपत्न्यै अमुकायैनमःइतिदुग्धेन स्नापयित्वागंधादिभिः संपूज्यतंडुलान्नेनपंचकन्यकाभोजनं संकल्पयेत्– तत्रैकं विष्णुनिमित संकल्प्यसपत्नी निमित्तंभोजनचतुष्टयं सदक्षिणं संकल्पयेत्॥ ओं मद्येत्यादि० पूर्वसपत्नीनिमित्तं इदंतंडुलान्नंकन्याकाभोजन चतुष्टयंदातुमहमुत्सृजेतस्यैस्वधा

फिर पच्छी और २ वस्त्रपहाज के निमित्त संकल्प करे

ओमद्येत्यादि० पूर्वसपत्नीप्रीत्यर्थं इमांशृंगारपिटिकांयथासंभववस्तु संयुक्तांवस्त्रसमन्विता ममुकब्राह्मणायैदातुमहमुत्सृजे

फिर पहाजडी की मूर्तिको वधू गलमें धारण करे

वरमृत्युंजय जपसंकल्पकरे

ओमद्येत्यादि० श्रीमृत्युंजयदेवप्रीतये तत्प्रीतिद्वाराऽमुकशर्मणो ममजन्मलग्नाद्दु स्थानगत

दुर्ग्रहयोग संसूचितमृतभार्यात्वदोषनिवृत्त्युत्तर अधुनापरिणीत भार्यायाश्चिरकालं यावत्स्थित्यर्थं च सुपुत्रसंतानधनधान्यस्थित्यर्थं चामुकसंख्यापरिमितमृत्युं जयजपन ममुकब्राह्मणद्वाराऽहंकारयिष्ये ॥ 'ॐ मद्येत्यादि॰ श्रीमृत्युंजयदेवप्रीतये तत्प्रीतिद्वाराऽमुकदेव्याः सभर्तृकायामम पतिसहितसुखसंतान सौभाग्यवृद्ध्यर्थं मृत्युंजयजपन ममुकगोत्रब्राह्मणद्वारा ऽहंकारयिष्ये

फिरअपने देशकुलकेअनुसारकर्मकरे

इति श्रीविवाह पद्धतिः समाप्ता ॥

अथ मंगलश्लोका लिख्यते

गंगागोमति गोपती गणपतिर्गोविंद गोवर्द्धनौ गीतागोमय गोरजोगिरिसुता गंगाधरोगौतमाः ॥ गायत्री गरुडोगदागिरिगया गंभीरगोदावरी गंधर्वाग्रहगोपगोकुल गणाः कुर्वन्तुवोमंगलम् ॥१ यन्मंगलंप्रवरशंखगदाधरस्यरामस्यरावणजयाय समुद्यतस्य ॥ जित्वानिशाचरपुरींपुनरागतस्य तन्मंगलंभवतुवोविजयायनित्यम् २ यन्मंगलंत्रिदशमौलिकिरीटरत्नचंद्रप्रभापटलधौतपदांबुजस्य ॥ गौरी विवाहसमयेशशिशेखरस्यतन्मंगलं भवतु

१वधूमृत्युंजय जपसंकल्पकरे

वोविजयायनित्यम् ३ लक्ष्मीर्यस्यपरिग्रहःकमलभूः सूनुर्गरुत्मांस्तथापत्रंचंद्ररवीत्तणेसुरगुरुः शेषस्तु शय्यासनः ॥ ब्रह्मांडंवरमंदिरंसुरगणायस्यप्रभोः सेवकाः सत्रैलोक्यकुटुंबपालनपरःकुर्यात्सदामंगलम् ४ ब्रह्मावायुगिरीशशेषगरुडादेवेंद्रकालोगुरुश्चंद्रार्कौवरुणा निलौमनुयमौवित्तेशाविद्येश्वरौ ॥ नासत्यौनिर्ऋतिर्मरुद्गणयुताः पर्जन्यमित्रादयः सत्रैकासुर पुंगवाः प्रतिदिनंकुर्वंतुवोमंगलम् ५ मांधातानहुषोऽंवरीषसगरौराजापृथुर्हैहयः श्रीमान्धर्मसुतोनलोदशरथोरामोययातिर्यदुः ॥ इक्ष्वाकुश्चविभीषणश्चभरतश्चोत्तानपादोध्रुव इत्याद्या भुवि पार्थिवाः प्रतिदिनंकुर्वन्तुवोमंगलम् ६ श्रीमेरुर्हिम वांश्चमंदर गिरिः कैलासशैलस्तथा माहेंद्रोमलया द्रिविंध्यनिषधाः सिंहस्तथारैवतः ॥ सह्याद्रिवरगंध मादनगिरिर्मैनाकगोमन्तका इत्याद्याभुविभूभृतः प्रतिदिनंकुर्युः सदामंगलम्॥७ विश्वामित्रपरशरौचभृगवोऽगस्त्यः पुलस्त्यः ऋतुः श्रीमान्नत्रिमरीचिकौत्सपुलहाः शक्तिर्वसिष्ठोंगिराः ॥ मांडव्योजमदग्निगौतमभरद्वाजादयस्तापसाः श्रीविष्णोर्गुणराशिकीर्तनपराः कुर्युः सदामंगलम् ८ वेदाश्चोपनिषद्गणाश्चविविधाः

सांगाः पुराणान्विता वेदांता अपिमंत्रतंत्रसहिता
स्तर्काःस्मृतीनांगणाः ॥ काव्यालंकृति नीतिनाट-
कगणाः शब्दाश्चनानाविधाः श्रीविष्णोर्गुणराशि
कीर्तनपराः कुर्युःसदामंगलम् ॥९॥ आदित्या-
दिनवग्रहाः शुभकरा मेषादयोराशयो नक्षत्राणि
सयोगकाः सतिथयस्तद्देव तास्तद्गणाः॥मासाब्दा
ऋतवस्तथैवदिवसाः संध्यास्तथारात्रयः सर्वेस्था
वरजंगमाः प्रतिदिनंकुर्युः सदामंगलम् ॥ १० ॥
शक्तिःशंखमथां कुशध्वजसितच्छत्रप्रदीपप्रभा-
श्चाष्टौचामरतोय कुंभसहिताः सन्मंगलाः सर्व-
दा ॥ सत्पीताक्षत जीरसैंधवनिशाः पूगीफलैला-
गुडश्चैतेपांतु सदासुलग्नसुमुखाः कुर्वंतुवोमंग-
लम् ॥ ११ ॥ घण्टा नादमृदंग दुंदुभिरवैर्ढक्काण-
शब्दादयो नानामंगलगीत नृत्यनिनदैर्नि क्वाणवे-
णुध्वनिः ॥ विप्राशीर्वचनानि वेदनिनदः संपूर्ण
शास्त्राध्ययश्चैतेपांतु सदासुलग्न सुमुखाः कुर्व-
न्तुवो मंगलम् ॥ १२ ॥ दूर्वाग्रं मधुपञ्च-
गव्य सहितं गोरोचनं श्रीफलंकर्पूरादि सुगंधवस्त्र
निचयाः श्रीचंदनानीतिच ॥ तांबूलं फल पुष्प
पूर्णकलशाः पुण्यांगनाभि र्वृताश्चैतेपांतु सदासुल-
ग्नसुमुखाः कुर्युः सदामंगलम् ॥१३॥ मन्वादि-

स्मृतयः पुराणततयः काव्यप्रबंधादयः षट्कक्षाः
श्रुतयश्च तत्रविधयः सूत्राणि भाष्याणिच ॥
सिद्धांतायमनेम जातकदृशो गर्गादिकाः संहिता
श्चैतेपांतुसदा सुलग्नसुमुखाःकुर्वन्तुवोमंगलम् १४
दिङ्नागा गिरयस्त्वनर्व्यमण यत्रेधाविभक्ताग्रयः
क्ष्मापालामुनयः प्रसन्नकवयः संपूर्णशास्त्राब्धयः॥
संकल्पद्रुम कामधेनुसहित श्चिंतामणिः कौस्तुभ-
श्चैतेपांतु सदासुलग्नसुमुखाः कुर्वंतुवोमंगलम्
॥ १५ ॥ श्रीमत्पंकजविष्टरो हरिहरोवायु र्महेंद्रो-
नलश्चन्द्रो भास्करवित्तपाल वरुणाः प्रेताधिपा-
द्याग्रहाः ॥ प्रद्युम्नोनल कूबरःसुरगज श्चिंतामणिः
कौस्तुभः स्कंदःशक्तिधरश्च लांगलधराः कुर्वंतुवो
मंगलम् ॥ १६ ॥ अंगुल्याकः कपाटं प्रहरतिकु-
टिलोमाधवः किंवसन्तो नोचक्रीकिंकुलालोनाहि
धरणीधरः किंद्विजिह्वः फणीन्द्रः ॥ नाहंघोराहि
मर्दीकिमुतखगपति र्नोहरिः किंकपीशइत्थंराधा
विवादेप्रतिवचनजितः पातुवश्चक्रपाणिः ॥ १७ ॥
कस्त्वंशूली मृगयभिषजं नीलकण्ठःप्रियेहं केका-
मेकाकुरुपशुपति र्नैवदृष्टेविषाणे ॥ मुग्धेस्थाणुः
सचलति कथंजीवितेशः शिवायागच्छाटव्यामि
तिहतवचाः पातुवश्चन्द्रचूडः ॥१८॥ भिक्षुःक्वास्ति-

बलेर्मखेपशुपातिः कुत्रास्त्यसौ गोकुलेकासौपन्नग
भूषणः शृणुसखेशेतेचतस्योपरि ॥ मुग्धेमुंचवि-
षादमत्रवहुलंनाहंप्रकृत्याचलाइत्थं जलधिसुता
धरेंद्रतनयाऽग्यगिरःपांतुवः॥१९॥कोयंद्वारिहरिः
प्रयाह्युपवनं शाखामृगस्यात्रकिंकृष्णोहंदयितेवि
भेमिसुतरांकृष्णादहंवानरात॥ मुग्धेहंमधुसूदनो
व्रजलतांतामेवतन्वीमले इत्थंनिवर्चनीकृतोदायित-
याह्रीणोहरिःपातुवः२० दोषोमेत्वदुपेक्षयावहुभुजः
किंनैवभूमीतलेविद्यान्मामघनाशनं, प्रियतमेना
शित्वयाद्योननु ॥ कुत्रासंचपलायितो हमघनेसा-
यत्रतेवल्लभाश्रेयां सिछलशृंखलावितनुतांगोविंद
गोप्योरियम् २१ मंगलालेखनेनालमलंकृत्यदया
लुना॥ समाप्तिंनीयतेचैषाद्विजोद्वहनपद्धतिः॥२२॥

इति श्रीभारद्वाजकाष्टपालजातिजदयालुशर्म
ज्योतिर्वित्संगृहीता विवाहपद्धतिः समाप्ता ॥



श्री गणाधिपतये नमः ॥

अथ विवाह कालीन कन्यानामकरण सारिणी

मे॰ अश्वि॰ के पूर्व ३ पाद	अश्विनी के पहिले ३ पाद वाले का अश्विनी के ३ पादों में पाद भिन्न मृग॰ के पिछले २ पाद पू॰ फा॰ उषा॰ के पिछले ३ पा॰ श्र॰ ध॰ में नामधरे
मे॰ अश्वि॰ ४ पाद	अश्वि॰ चतुर्थ पादवालेका मृ॰के पिछ॰ २ पाद पू॰फा॰ उ॰पा॰ के पिछ॰ ३ पाद श्र॰ ध॰ में धरे
मे॰ भर॰ ४	भरणी वाला भरणी में पाद भिन्न उ॰ फा॰ का पहिला १ पाद उ॰पा॰ के पहिले २ पादों मे
मे॰ कृ॰ का १ पाद	कृ॰ के पहिले पादवाला ध॰ श॰ चित्राके पिछले २ पादोंमें
वृ॰ कृ॰ ३ पादपिछले	कृ॰ के पिछले ३ पाद वाला ३ पादों में भिन्न वि॰ पहिले २ पाद शत॰ में
वृ॰ रोहि॰ पूर्व १ पाद	रोहि॰ के प्रथम पादवाले को पू॰ भा॰के पहिले ३ पादों में
वृ॰ रोहि॰ के पिछ॰ ३ पाद	रोहि॰ के पिछले ३ पादवाला पादभिन्न उ॰ फा॰ के पिछ॰ ३ पाद पू॰ भा॰ के पहिले ३ पादों में
वृ॰मृग॰ केपहि २ पाद	मृग॰ के पहि॰ २ पादवाला पादभिन्न उ॰फा॰ के पिछ॰ ३ पाद पू॰ भा॰ के पहले ३ पादों में
मि॰ मृग॰ २ पाद पिछ॰	मृग॰ पिछ॰ २ पाद वाला पादभिन्न रोहि॰ उ॰फा॰ पिछले ३ पाद वृ॰ पू॰ भा॰ में
मि॰ आर्द्र ४	आर्द्र वाला आर्द्र में पाद भिन्न धारण करे ॥ अन्य मत से म॰ पू॰ फा॰ उ॰ भा॰ रेव॰
मि पुनः३पाद	पुन॰ पहले ३ पादवाला पादभिन्न मृग॰ पिछले २ पादों में विशा॰ स्वाती में

क० पुन १ पाद	पुन० के चतुर्थ पाद वाला पुष्य० म० रो० स्वा० ऽनु० उ० पा० पिछ० ३ पादों में
क० पुष्य ३ पाद	पुष्य पहि० ३ पाद वाला पाद भिन्न पुन० मृग० पिछ० २ पाद स्वा० में
क० पुष्य १ पाद	पुष्य चतुर्थ पाद वाला ह० श० उ० फा० उ० पा० के पिछ० ३ पाद अश्वि० म० रो० में
क० अश्ले०	अश्लेषा वाला पाद भिन्न चि० ज्ये० धनि० पहि० २ पादों में
सिं० म०	मघा वाला पाद भिन्न वि० पहि० २ पाद शत० पि० ३ पादों में
सिं० पू० फा	पू० फा० वाला पाद भिन्न उ० फा० के पहि० १ पाद में अन्य मत से रो० मृ० स्वा० ऽनु० में
सिं० उफा १ पाद	उ० फा० पहि० १ पाद वाला रो० उपा० पहि० १ पाद० पू० फा० में
क० उ० फा० ३ पाद	उ० फा० के पिछले ३ पाद वाला ३ पाद भिन्न २ उ० पा० पिछ ३ पादा में
क० ह०	हस्त वाला पाद भिन्न उपा० के पिछ० ३ पाद श्र० में
क० चि० २ पाद	चित्रा के पहिले २ पाद वाला पाद भिन्न रखे अन्य मत से ऽश्ले० विशा० पिछ० १ पाद ज्ये० मृ० श्र० रे०
तु० चि० २ पाद	चित्रा के पिछ० २ पाद वाला पाद भिन्न विशाखा पहिले ३ पादों में।
तु० स्वा०	स्वाती वाला पाद भिन्न पू० भा० में अन्यम० म० पुष्य० पू० फा० धनि० पूर्वाद्ध।
तु० वि० ३ पाद	विशाखा पहले ३ पाद वाला पाद भिन्न रखे। अन्य० अश्वि० पुष्य चित्रा० २ पिछले पाद मृ० धनि० पूर्वार्ध।
वृ० विशा १	विशाखा पिछले १ पाद वाला ध० शत० श्रवे० में।
वृ० अनु० ४	अनुराधा वाला पाद भिन्न-ध० पू० भा० में।

वृ ज्ये० ४	ज्येष्ठा वाला पाद भिन्न म० विशा० के चतुर्थ पाद में चित्रा० पहि० २ पाद ध० में
ध० मू० २	मूला पहि २ पाद वाला पाद भिन्न कु० १ पहिले पाद विशाखा पहिले ३ पाद चि० ध० पिछले २ पादों में
ध० मू०	मूला पिछले २ पाद वाला पाद भिन्न कु० १ पहिला पाद विशाखा ३ पहिले पाद चित्रा ध० पिछले २ पादों में
ध० पू०पा० ४	पू० पा० पाद भिन्न पू० भा० उ० फा० पिछ २ पाद पू पा० के द्वितीय चतुर्थ पाद ध० ड० वाला आर्द्रा में रखे
ध० उ० पा० १	उ षा० पहिले पाद वाला पू० पा० पू० भा० भर० में
म०उ०पा० ३	उ पा० के पिछ० ३ पादवाला पाद भिन्न अन्य०पुष्य अनु० पू० भा० पिछ० १उ० भा० में
म० श्र० ४	श्रवण वाला पाद भिन्न मृग० में अन्य०
म० ध० २	धनिष्ठा के पहिले पादवाला पाद भिन्न अन्य० अश्वि श्ले० स्वा० वि० ज्ये०
कुं ध० २	धनि० के पिछले २ पाद वाला पादभिन्न अन्य० अश्वि० म ज्ये० मू० शत०
कु० शत ४	शतभिषा वाला पाद भिन्न अन्य० कु० मृग० का पूर्वार्ध अनु०
कुं०पू० भा० ३	पू० भा० पहिले ३ पादवाला पाद भिन्न अन्य० रो० मृ० पूर्वार्ध पू० षा० उ० षा० पहि० १ पाद में
मी० पू० भा० १	पू० भा० चतुर्थ पाद वाला पू० षा० उ० भा० उ० षा० रो० ३ पादों में।
मी० उ० भा०	उ० भा० के प्रथम चतुर्थ पादवाला उ० फा० उ० भा० पिछ० ३ पादों में उ० षा० पिछ०३ पादों में

मी० उ० भा०	उ० भा०के द्वितीय तृतीय पाद वाला रो० प्रथम पाद आर्द्र उ० फा० पिछले ३ पादों में।
मी० रेव० २	रेवती पहिले २ पाद वाला पाद भिन्न मृग० पहिले २ पाद पुष्य में।
मी० रेव० २	रेव० पिछ० २ पाद वाला मृग० पिछ० २ पाद- ह० पुन० पुष्य० पू० षा० आर्द्रा में।

नाम करणविधान और सूचना

असल में वर्ग वर्णादि विचार में नामकरण होता है उस को आलस्यवश विद्वान् न देख कर केवल उसी नक्षत्र के पाद भेद पर बनता नाम रख देते हैं यदि नहीं बनता तो अमुक नाम लिखदेते हैं। अतः हमनें पूर्व विद्वानों से संमत यह सारिणी प्रकाशित कर दी है इस में रीति यह है, जिस नक्षत्र का जन्म वर का हो उस की पंक्ति में लिखे नक्षत्रों में कन्या का नाम धारण करना उस समय उस नाम पर गुरु शुद्धिका विचार करना यह सारणी बहुत करके शुद्ध की गई है तो भी किसी स्थान में अशुद्धि रह गई होतो शुद्ध करलेना इसमें शेष देखना यह होगा—वर्गवैर और षडष्टक का ध्यान करना – किसी २ स्थानपर संदेह है ब्राह्मण के लिये नाक्षत्रिक वर्ण विचार की आवश्यकता नहीं—

कन्या केलिये गुरुबल १।३।६।१० गुरुपूजा

४।८।१२ गुरुः नेष्टः

शेष २।५।७।९।११ गुरुः श्रेष्ठः



अथ शुद्धि पत्रम्

पं०	ऽशुद्धम्	शुद्धम्
५	वरपिता	वर
५	सवितु	सवित
११	सद्गु	सद्ग
२०	फलं	फल
१०	मिरास	निरास
११	धमि	धमि
१६	सम्धी	सम्बन्धी
१५	रूपा	रूपां
१४	देव	देव
१४	दिश	दिशं

पृ०	पं०	अशुद्धं	शुद्धम्
६०	४	मार्जे	मार्जं
६१	२१	जग	जगा
६३	१६	सोच	साथ
६३	१९	इस	इस
६३	२३	[illegible]	[illegible]
६५	२१	पिजिष्ठ	पिशिष्ठ
६६	३	इय	इयं
६८	१७	आज्ञा	आज्ञा
७२	१	[illegible]	अर्थान्तरेण
७३	[illegible]	[illegible]	[illegible]